गाँधी की काँवर
हरीन्द्र दवे

गांधी की काँवर गुजराती के प्रसिद्ध लेखक श्री हरीन्द्र दवे की एक अनमोल कृति है । समूचे उपन्यास का ताना-बाना राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है जिसमें घटनाएँ चलचित्र की भाँति अत्यन्त तीव्र गति से मोड़ लेती हैं । पाठक को आदि से अन्त तक एक सुरुचि-सम्पन्न अच्छी फिल्म देखने जैसा आनन्द मिलता है ।

सीधा-सादा व्यक्ति एकबार राजनीतिक शिकंजे में फँस जाने या फँसा लिये जाने पर अपनी मुक्ति के लिए किस प्रकार छटपटाता है, पढ़कर ही हृदयंगम किया जा सकता है । यह बात और करुणास्पद हो उठी है, जब जाल में फँसा हुआ वह व्यक्ति अन्तरात्मा से गांधीवादी हो । वर्तमान राजनीति के तिलस्मी महल में कैसे-कैसे गलियारे और सीढ़ियों का उतार-चढ़ाव है—सबका पर्दाफाश अत्यन्त मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करने में लेखक को कमाल हासिल है । यही वजह है कि कथानायक करुणाशंकर से परिचय प्राप्त कर कोई भी पाठक अपने को उससे अलग महसूस नहीं कर सकता ।

उपन्यास आज के राजनीतिक और सामाजिक जीवन को प्रत्यक्ष करता है ।

मूल्य : चालीस रुपया

गांधी की काँवर

(गुजराती उपन्यास)

लेखक
हरीन्द्र दवे

अनुवाद
हर्षद मनसुखलाल दवे

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

GANDHI KI KANWAR

(FICTION)

by

HARINDRA DAVE

1992

प्रथम संस्करण : 1992 ई०

प्रकाशक

अनुराग प्रकाशन
चौक, वाराणसी - 221 001

मुद्रक

वाराणसी एलेक्ट्रानिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी

गांधी की काँवर

राजकाज के विषय मे अनेक प्रसिद्ध और सशक्त उपन्यास लिखे गये हैं। हमारे साहित्यकार राजनीतिक इतिहास में परिवर्तन हो तब तक राहं देखना अधिक पसन्द करते हैं। शायद वर्तमान राजनीति के बारे में कलाकृति की रचना करना साहस का काम है। 'गांधी की काँवर' इस प्रकार के उपन्यासों में शीर्षस्थान रखती है। इस दृष्टि से देखें तो नाटक और चित्रपट साहित्यिक कृतियों से बहुत आगे हैं, ऐसा हमें प्रतीत होता है। अनेक सत्ताधारी राजनीतिक समस्याओं पर रोष एकत्र करके भी नाटक और चित्रपट निर्माताओं ने वर्तमान राजनीतिक समस्याएँ प्रस्तुत करके उनका सचोट विश्लेषण करने का साहस प्रदर्शित किया है। 'गांधी की काँवर' इस 'नये-सिनेमा' परिवार का उपन्यास है।

हमारा पालन भ्रष्टाचार की आबोहवा में हुआ है। शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो इसकी पकड़ से बचा रहा हो। तो फिर इस कथा के, सरल स्वभाववाले करुणाशंकर की ऐसी औकात कहाँ हो सकती है ? भ्रष्टाचार के दूषित पर प्रबल प्रवाह में वे तिनके की भाँति बहते जाते हैं। शतरंज की बाजी की भाँति वे अध्यापक वृत्ति से सत्ता के केन्द्रीय पद पर पहुँचते हैं। इस हेतु भ्रष्टाचार की अनेक सीढ़ियाँ उन्हें चढ़नी पड़ती हैं। करुणाशंकर की इस उन्नति की कथा कहने के बहाने हरीन्द्र दवे ने समाज के लिए आतंक बने भ्रष्टाचार के दैत्य का वर्णन करने का मौका फुर्ती से लिया है। पत्रकार के रूप में ऐसे वातावरण का फर्स्ट हैण्ड अनुभव का भी लेखक ने सही ढंग से इस्तेमाल किया है।

'गांधी की काँवर' के मुख्य पात्र करुणाशंकर हैं। शायद यह हमारा भ्रम भी हो सकता है। संभवतः जाने-अनजाने भ्रष्टाचार में शामिल होनेवाले हम सभी पाठक ही उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। शायद यह हम सबकी कथा है। सबकी व्यथा की कथा है। समाज के मूल्यों की प्रतिक्षण ह्रास करते व्यापकरूप से फैल गये कैन्सर जैसे रोग की यह कथा है।

—घनश्याम देसाई

गांधी की काँवर

"अजी, देखिये तो सही भनु के पास कितना अच्छा बक्सा है. अल्युमिनियम का नहीं, स्टील का लग रहा है !"

पत्नी की आवाज सुनकर करुणाशंकर चौंके, "स्टील का बक्सा ! कहाँ से चुरा लाया ?"

लक्ष्मी को बुरा लगा, "आपका बेटा और चोरी करे ? आप भी कमाल करते हैं ! अपने बेटे के बारे में ऐसे शब्द ?"

करुणाशंकर कुछ रुककर बोले, "तो फिर भिक्षा माँगने पर कोई स्टील का बक्सा थमा देगा क्या ? भनिया, कहाँ से लाया यह बक्सा ?"

भनु ने गर्व से बक्सा कमरे के बीचोबीच रख दिया था. बक्सा चमक रहा था. सुंदर था. बकसुआ भी आकर्षक था. उसने उसे खोला. नये किस्म का बकसुआ था. खुद करुणाशंकर को उसके साथ खेलने की, उसे एक बार खोल-बंद करने की इच्छा हुई.

"कहाँ से लाया यह बक्सा ?" करुणाशंकर ने अपने वाक्य में सुधार किया. भनु जिस शान से बक्सा दिखा रहा था, उसे देखते हुए करुणाशंकर को भरोसा हो गया कि वह उसे कहीं से चुरा के नहीं लाया था.

भनु ने बकसुआ खोला. धीरे से बक्से का ढक्कन खोला. सबसे पहले उसने ऊपर के टाट के गंदे बस्ते को कोने में फेंक दिया.

"बस्ता ऐसे न फेंक. जिसका यह बैग है वह ले जायेगा. फिर वही बस्ता तेरे काम आनेवाला है." करुणाशंकर ने कहा.

भनु ने फेंके हुए बस्ते की ओर तुच्छ दृष्टि से देखा. फिर कहा, "माँ, यह बस्ता किसी गरीब लड़के को दे देना. बेचारे के काम आयेगा !"

"वाह मेरे मालदार बेटे !"

भनु ने कुछ गर्व से पिता की ओर देखा. उसकी आँखों में ऐसी चमक करुणाशंकर ने इससे पहले कभी नहीं देखी थी. भनु ने अंदर से पुस्तकें निकालीं. पुरानी किताबों के साथ कुछ नयी किताबें एवं कापियाँ भी थीं. जिन किताबों और कापियों को अगले माह के वेतन से खरीदने का सोचा था, उन्हें अचानक भनिये के बक्से में देखकर करुणाशंकर विस्मित हो गये. जैसे किसी अदृश्य खजाने की चाबी हथिया लाया हो, ऐसे अंदाज से भनु बक्सा दिखाता रहा.

लक्ष्मी के साथ करुणाशंकर भी विस्मित होकर देख रहे थे. उन्हें लगा जैसे वे कोई सपना देख रहे हैं.

"भनिया, अब कुछ बतायेगा भी, यह क्या माजरा है ?" करुणाशंकर के धीरज का बाँध अब टूट रहा था.

"आप कहते हैं न कि अब दुनिया में कहीं भलाई नहीं रही !"

"हाँ, मैं आज भी यही कहता हूँ."

"क्योंकि आपने अभी भले लोग देखे ही नहीं."

"भनिया, मैं तुमसे उपदेश सुनना नहीं चाहता."'

भनु ने करुणाशंकर की आवाज में आये परिवर्तन को शीघ्र ही भाँप लिया. उसने निरे दीन स्वर में कहा, "पिताजी, बात यह है कि..." कहते-कहते वह रुक गया. लेकिन करुणाशंकर को आज उसके दीन स्वर में नहीं बल्कि वह जो कहने जा रहा था उसमें दिलचस्पी थी. "पिताजी, मैं और कांति और छनिया और..."

"तुम और तुम्हारी टोली... क्या है उसका ?"

"हमारी टोली में परभा भगत नहीं था, वह तो आज स्कूल आया ही नहीं..."

करुणाशंकर ने अब तेवर बदले.

"...हम सब स्कूल से लौट रहे थे कि रास्ते में बाहर के दरवाजे के पास एक गाड़ी हमारे करीब आकर रुक गयी."

"हं..."

"उसमें से दूध-से सफेद कपड़े पहने एक नेता बाहर आये. उन्होंने हमें रोककर पूछा — 'अरे लड़को, कौन सी कक्षा में पढ़ते हो ?' हम तो घबरा गये. छनिया ने साहस करके बतलाया, 'दसवीं'. उसके बाद..."

करुणाशंकर जैसे कोई सपना देख रहे हों, यों स्तंभित होकर सुन रहे थे वे.

"... नेता ने लड़कों को रोककर बातचीत की. बाद में कहा — 'तुम लोगों के बस्ते इतने गंदे क्यों हैं ?' परंतु यह प्रश्न करने के बाद उनको दुख हुआ, उन्होंने लड़कों को गाड़ी में बिठा लिया. चारों लड़कों को वे सबसे पहले एक स्कूल बैगवाले की दुकान पर ले गये. सबको नया बक्सा दिलवाया और उसके बाद पास के बुकसेलर से नयी किताबें और कापियाँ दिलवायीं."

"वे नेता कौन थे ?"

"पिताजी, हमने पूछा तो उन्होंने कहा— 'तुम्हें नाम से क्या काम ?' वे तो हँसते-हँसते हमसे बिदा लेकर गाड़ी में बैठ गये."

"मेरे ध्यान में तो ऐसा कोई नेता नहीं है. कहीं तुमने हेराफेरी तो नहीं की है ?"

"पिताजी, आप कांति से, छनिया से, भगु से पूछिए. हम सब एक साथ थे. वे दूध-से सफेद कपड़े पहने हुए थे. उन्होंने हमसे पूछा कि पढ़ाई में कौन सा नंबर पाते हो ? बाद में यह भी कहा कि तुम बड़े होकर इस देश की बागडोर सँभालनेवाले हो. तुम लोगों के अध्ययन पर ध्यान न दिया गया तो गांधीजी की आत्मा को दुख होगा."

"मगर उनका नाम क्या है ?"

"उन्होंने कहा, नाम जानकर क्या करोगे ? मेरे नाम से लोग बातें करते फिरें, यह मुझे पसंद नहीं."

"किताबें कहाँ से खरीदीं ?"

"पूजा घेला की दुकान से."

"ठीक है, जाओ खेलो."

करुणाशंकर ने भनु को तो खेलने जाने को कह दिया, परंतु उनके चेहरे के भाव मैजिक स्लेट पर बदलते अक्षरों की भाँति बदलते-मिटते रहे. उन्होंने अपनी धोती की चुन्नटें ठीक कीं और पास रखी टोपी सर पर रख ली.

"सुनती हो ?"

"क्या ?"

"मैं जरा बाजार से होके आता हूँ."

"अच्छा जी."

•

"आइए मास्टरजी, बहुत दिनों के बाद इधर से..." पूजा घेला ने स्वागत करते हुए कहा.

"यहाँ से गुजर रहा था, सोचा मिलता चलूँ... कैसा चल रहा है आजकल ?"

"जी ठीक चल रहा है आप लोगन की दुआ से."

"पूजा," करुणाशंकर ने सीधे बात करना उचित समझा, "आज भनु को यहाँ से किताबें किसने दिलवायीं ?"

पूजा सतर्क हो गया, "मुझे तो यह बात एक चमत्कार जैसी लग रही है."

"मुझे भी, वह... कौन था ?"

"मेरा मन तो अब भी नहीं मानता, मगर वह निश्चित रूप से जगमोहन भाराडी था."

"जगमोहन भाराडी ?"

"पल भर तो सोचा कि उसके दिये हुए पैसे अलग से दान कर दूँ."

"मैं भी यही सोचता हूँ कि घर जाकर किताबें-बक्सा सब कुछ कुएँ में डाल दूँ."

"लेकिन मास्टरजी, हमने उसके बारे में जो कुछ भी सुना है, उससे तो वह कुछ अलग ही लगा. पेपर में छपा फोटो देखकर लगता है कि वह जगमोहन भाराडी ही है. बाकी सब लोग भी यही कह रहे थे. परंतु यह तो रास्ते पर लड़कों को दुलारता हुआ पैदल आ रहा था."

"पैदल ?"

"हाँ जी. वे पहले बक्से लेने गये, गाड़ी वहीं खड़ी कर दी. फिर लड़कों के साथ पैदल ही यहाँ तक आये और गये भी पैदल !"

"फिर तो वह जगमोहन भाराडी हो ही नहीं सकता. जब से वह मंत्री बना तब से किसीने उसे पाँव-पैदल चलते नहीं देखा."

"मुझे भी ऐसा लगा था. परंतु यह तो बगलवाले कासिमभाई ने कहा कि वह भाराडी ही है. वे अभी अपनी कौम के डिपुटेशन में उससे मिलने गये थे. उसने कासिमभाई को करबद्ध नमस्कार किया और मुस्कराया भी. वह निश्चित रूप से भाराडी ही था."

"अद्‌भुत !"

"मास्टरजी, मैंने बाद में सोचा कि हम उसे मिले ही कहाँ हैं ?"

"दस साल से वह मंत्री पद पर है. तब से वह किसीको मिलता ही नहीं !"

"सारे देश का काम क्या कम है ! मगर वह जिस प्रकार से बालकों के साथ बातें कर रहा था, उसे देखकर मुझे नेहरू चाचा की याद आ गयी."

करुणाशंकर असमंजस में सिर खुजाते रहे.

"लेकिन उसके बारे में लोगबांग न जाने क्या कुछ नहीं कह रहे !"

"हमने तो लोगों की बातें ही सुनी हैं न ?"

"पेपर में उसके न जाने कितने घपले छप चुके हैं !"

"यह भी सही बात है. कुछ समझ में नहीं आता. दिन भर हम भ्रष्टाचार के विरुद्ध नारे लगाते फिरें और हमारे बच्चे उनके पैसों से किताबें खरीदें."

"मास्टरजी, अब जो करेगा सो भरेगा. उसके लिए वो भुगतेगा, आप क्यों फिक्र कर रहे हैं. हमें तो घर आयी लक्ष्मी को..."

"जो घर में आ रही है वह लक्ष्मी ही है, इस बात की तसल्ली भी तो होनी चाहिए न !"

"क्या आप दावे के साथ यह कह सकते हैं कि वह लक्ष्मी नहीं है ? उनका बच्चों को दुलारते हुए चलना और पैदल रास्ता क्रास करना मेरी आँखों के सामने से हटता ही नहीं."

करुणाशंकर की आँखों के सामने बरसों पहले का वह दृश्य आ गया जब जवाहरलाल नेहरू उसके स्कूल में आये थे. नेहरूजी ने काफी समय बच्चों के साथ बातें करने में बिताया था.

•

हर तृप्त भेड़िया कभी-कमार किसी हिरण पर कृपा करके उसे छोड़ देता है, ऐसा ही कुछ न्याय जगमोहन भाराडी ने किया होगा — करुणाशंकर मास्टर का यह काल्पनिक संदेह-निवारण ज्यादा देर तक टिक नहीं पाया.

मनु की शाला की ओर से रविवार के दिन गोपनाथ महादेव की ट्रिप का आयोजन हुआ था. बच्चे वहाँ सरकारी अतिथिगृह में ठहरनेवाले थे. ठीक उन्हीं दिनों वहाँ जगमोहन भाराडी का कैंप लगा हुआ था.

अतिथिगृह के मैनेजर शिक्षक से कह रहे थे, "मिनिस्टर जो आ गये हैं, फिर हम क्या करें ? जाइए, आप किसी और धर्मशाला में जाकर ठहरें. आज यहाँ खाने-पीने का प्रबंध नहीं हो पायेगा."

बच्चे निराश होकर मुँह लटकाये लौट ही रहे थे कि मिनिस्टर बाहर आये, "क्या बात है, मैनेजर ?"

"कुछ नहीं साहब, स्कूल के इन छात्रों ने आज यहाँ ठहरने के लिए बंदोबस्त किया था. परंतु आपका कैंप अचानक आज ही लगा इसलिए..."

"इसलिए क्या इन बच्चों को निकाल रहे हो ?"

"साहब, क्षमा करें, आपको परेशानी हुई. हमें मालूम नहीं था कि आपका कैंप होगा. और ये ठहरे गाँव के गँवार, इतना भी नहीं जानते कि जब मिनिस्टर साहब का कैंप लगा हो तब ऐसे नहीं आया करते !"

"मैनेजर, जबान सँभाल के बात करो. आप इस देश के भावी नागरिकों का अपमान कर रहे हैं. इनमें से कल कोई देश का प्रधानमंत्री भी बन सकता है." कहते हुए जगमोहन ने पास खड़े मास्टरजी को बुलाया, "मास्टर साहब, इधर आइए."

काँपते हुए मास्टरजी आगे आये. "माफ करना, हम नहीं जानते थे कि..."

"अरे मास्टर साहब, माफ तो आपको मुझे करना चाहिए. आप लोगों का कार्यक्रम पहले से तय हो चुका है, इसलिए आप सबको यहीं पर रहना चाहिए. बच्चों को वापस बुलाइए."

"मगर साहब..." मैनेजर कुछ कहने जा रहा था.

"मैनेजर, यहाँ कितने रूम हैं ?"

"चार."

"मुझे कितने दिये हैं ?"

"जी दो."

"मुझे केवल एक रूम चाहिए. बुलाइए इन बच्चों को. उनके लिए तीन रूम काफी है. जरूरत पड़ने पर मेरा रूम भी इन लोगों को दे दो. मैं तो चार-छह घंटे में जानेवाला हूँ. मैं बैठक-खंड में बैठकर जिनसे मिलना है उनसे बातचीत कर लूँगा."

सब विस्मय से देखते रहे.

"मैनेजर, मंत्री भी आये तो क्या हुआ ? इन बच्चों ने अतिथिगृह पहले से बुक कराके रखा है. उनको वह मिलना ही चाहिए."

मैनेजर 'हाँ जी' के सिवा कुछ बोल ही नहीं पा रहा था.

"महाराज !" जगमोहन ने पुकारा.

महाराज दौड़ते हुए आये.

"आज बहुत बढ़िया खाना बनाना. बच्चों को यह ट्रिप हमेशा के लिए याद रह जाये, ऐसा. और मैनेजर, इन सबको सरकारी अतिथि माना जांये. इनसे कोई चार्ज न लेना. मास्टर साहब, ट्रिप के लिए लिये गये पैसे इन बालकों को लौटा दीजिएगा."

उस दिन लड़कों ने खूब मौज मनायी. मिनिस्टर साहब को मिलने कुछ महत्वपूर्ण लोग आये. मिनिस्टर ने बैठक-खंड में बैठकर ही उनके साथ बातचीत की. अपनी चाय के ऑर्डर के साथ बच्चों के लिए भी चाय का आर्डर दिया. फिर अपने कार्य से निपटने के पश्चात् उन्होंने बच्चों के साथ बैठकर गपशप की और भोजन भी सबके साथ ही लिया. भोजन के बाद जब वे जाने लगे तो तकरीबन प्रत्येक बालक से व्यक्तिगत रूप से मिले.

वे मनु के पास आये तो ठिठक गये. "ऐसा लगता है जैसे तुझे पहले कहीं देखा है."

"हाँ साहब, उस दिन आपने मुझे नया बक्सा..."

जगमोहन ने उसके मुँह पर हाथ धर दिया, "ऐसे जोर से नहीं बोलते. पढ़ाई में ध्यान देते हो न ?"

मनु ने घर आकर सारी बात बतायी तो करुणाशंकर दाँतों तले उँगलियाँ दबाने लगे.

तो फिर वो सब कुछ गलत है क्या ? उनके मन में सवाल उभरा.

"और पिताजी, मुझसे कहा कि अगले हफ्ते मैं फिर तेरे गाँव आनेवाला हूँ. कुछ काम हो तो अवश्य मिलना."

"आपको उनसे मिलकर कम-से-कम एक बार शुक्रिया तो अदा करना ही चाहिए", लक्ष्मी ने कहा. "दिन भर चौपाल में बैठे मंत्रिमंडल की बुराई करते रहते हो, तो जब ऐसा कोई मंत्री मिले तो उसका हौसला भी बढ़ाना चाहिए."

•

लक्ष्मी की बात सही थी. परंतु करुणाशंकर को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था. उन्होंने अपनी आँखें मलकर देखा कि यह सच है या सपना. मंत्रियों के

लिए करुणाशंकर के दिल में नफरत ही नफरत थी. जगमोहन भाराडी से तो विशेष रूप से नफरत थी.

करुणाशंकर ने खुद भी स्वतंत्रता-आंदोलन में हिस्सा लिया था. गांधीजी ने खास तौर से दिल्ली बुलाकर कहा था, "करुणाशंकर, अब देश आजाद हो गया. यह उछरंगराय ढेबर हैं. देखिए ये मेरे कहने पर आपको अपने मंत्रिमंडल में ले लेंगे."

"बापू, अगर आप चाहें तो इसी वक्त इस देश के गवर्नर जनरल या प्रधानमंत्री हो सकते हैं. परंतु आप ही कहते हैं कि अगर सब सत्ता के पीछे दौड़ेंगे तो फिर जनता की सेवा कौन करेगा ?"

गांधीजी यह उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए थे. उन्होंने कहा था, "ढेबर, उनको देखिए जो आपके पास मंत्री बनने के लिए दौड़े-भागे चले आते हैं, और देखिए ऐसे सेवकों को. मेरा बस चले तो मैं करुणाशंकर को सौराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद पर नियुक्त करता और देहरादून में धूनी रमा के बैठे हुए स्वामी आनंद को माउंटबेटन के बाद प्रथम गवर्नर नियुक्त करता. लेकिन इन लोगों को गद्दी चाहिए ही नहीं."

इस बात को करुणाशंकर पहले गौरव के साथ याद करते थे, परंतु पिछले दस-पंद्रह साल से इसी बात को कुछ संताप एवं दुख के साथ याद करते हैं. शिक्षक के सम्मानजनक पद का त्याग करके वे मंत्री नहीं बनना चाहते थे. उन्होंने सोचा था कि स्वतंत्र भारत में शिक्षक का सम्मान मंत्री से अधिक होगा. परंतु धीरे-धीरे उनकी गणना पोथी-पंडितों में होने लगी; और जिनको वे आदेश देते थे, ऐसे स्वयंसेवकों में से कई आज मंत्री पद प्राप्त करके शाला के निरीक्षण के लिए आते थे और खुद करुणाशंकर को खरी-खोटी सुनाकर चले जाते थे.

उन्हें अच्छी तरह याद था कि एक स्वयंसेवक को लड़की के साथ छेड़खानी के लिए उन्होंने धरासणा के शिविर से निकाल दिया था. आजकल वह स्वयंसेवक शिक्षामंत्री बना हुआ है. एक बार जब वह जाँच के लिए शाला के दौरे पर आया था तो उसने करुणाशंकर मास्टर की ओर आँख उठाकर देखा तक नहीं था; और बाद में जब किसीने उनसे परिचय करवाया तो जैसे याद आ रहा हो ऐसी मुद्रा में कहा, "अरे आप ! कैसे हैं ?" बाद में सुनाया, "आप इतने बड़े हो गये, फिर भी आपने गांधीजी को ठीक से पहचाना नहीं. गांधीजी ने अतिशय चोखेपन के लिए नहीं कहा था." करुणाशंकर की आँखों में पानी भर आया था. एक पल तो जी में आया कि गांधीजी की बात मानकर मंत्री बन गया होता तो ऐसी नौबत नहीं आती और आज इन लोगों की खबर लेता.

तब से वे अपने समकालीन एवं अपने बाद के लोगों में से किसीको ओहदे पर देखते तो खिन्न हो जाते थे.

कभी वे कहते— सेवा तो करने से रहे, ऊपर से सत्ता को अस्वीकार करके भ्रष्टाचार के मूक गवाह बनना ही नसीब हुआ. अब तो शिक्षक बनकर दो

वक्त की रोटी का जुगाड़ करने के लिए ट्यूशन करने पड़ते हैं, और जिसका मुँह तक देखना न पसंद हो, उसके पाँव छूने पड़ते हैं.

○

"सुना"

"क्या ?"

"भनु कह रहा था न कि बृहस्पति के रोज जगु भाराडी सर्किट हाउस में ठहरेगा."

"हाँ, तो... ?"

"आज बृहस्पतिवार है."

"मैं उसे मिलने नहीं जाऊँगा. उन पाखंडी लोगों से मैं ऊब चुका हूँ. बहुत अपमान सहे हैं मैंने."

"पर यह आदमी उन लोगों से कुछ अलग दिखता है."

"सब एक-से होते हैं, वीर विक्रम के सिंहासन-से. जिस जगह सिंहासन गड़ा हुआ था उस जगह पर किसान खड़ा रहे तो दानवीर बन जाये, लेकिन नीचे उतरकर खेत-खलिहान में आये तो मेजबान को दुतकारने लगे. मुझे नहीं जाना ऐसे किसी प्रधान से मिलने."

"भनिया, तेरे पिताजी नहीं मानेंगे. तू ही जा. उनसे मिल के उनका शुक्रिया अदा करना और कहना कि अगर इस देश में आप जैसे थोड़े-बहुत प्रधान हों तो सारे देश का कल्याण हो जाये."

भनु जाने के लिए तैयार हो रहा था.

करुणाशंकर के दिमाग में एक विचार आया. उनको लगा कि इस आदमी का असली स्वरूप वहीं प्रकट हो जायेगा. क्यों न आज ही सबका भ्रम टूट जाये !

"भनिया, जरा रुकना, मैं भी चल रहा हूँ."

करुणाशंकर ने कुर्ता पहना और सर पर टोपी रखी. उनके कुर्ते की सफेदी नाममात्र थी, जैसे उनका कुछ लिहाज करता हो !

भनु के ठाठ कुछ और ही थे. वह बढ़िया कपड़े पहने तैयार खड़ा था.

सर्किट हाउस का माहौल कुछ अलग ही था. बाहर पुलिस पहरा दे रही थी. करुणाशंकर मन ही मन मुसकाये— 'देखो, ये सब निगरानी कर रहे हैं हमारे लोकनेता की. जैसे कोई उनको गोली से उड़ानेवाला हो ! दरअसल देखो तो इन सबको गोली से उड़ा देना चाहिए...' पर अगले ही पल ऐसे हिंसक विचार के लिए उनका मन ग्लानि से भर गया.

सर्किट हाउस के बाहरवाले मैदान में लोगों की भीड़ लगी हुई थी. मिनिस्टर के आने पर उनसे कृपाप्रसाद का जरा सा अंश पाने के लिए लोगों की कतारें लगती हैं, ऐसा करुणाशंकर ने सुना तो था परंतु देखा आज ही.

भनु ने डरते हुए टेलीफोन ऑपरेटर से पूछा, "मिनिस्टर साहब का मुकाम कहाँ पर है ?"

"कौन से मिनिस्टर साहब से मिलना है ? आज तीन मिनिस्टर यहाँ आये हुए हैं."

"जगमोहन..." भनु कहते-कहते रुक गया सो अच्छा हुआ, वरना वह जगमोहन भाराडी ही बोलने जा रहा था.

"दस नंबर स्यूट में देखें." मानो वे कोई वी. आइ. पी. हों, ऐसे अंदाज में एक आदमी ने उनके पास आकर उन्हें रूम खोलकर अंदर बिठाया. "मिनिस्टर साहब व्यस्त हैं, लेकिन आप इधर बैठिए."

वे जहाँ बैठे थे, वह स्यूट के बाहर का रूम था. बीच में पार्टिशन था. पार्टिशन के पीछे मिनिस्टर साहब कुछ बातें कर रहे थे. सब स्पष्ट सुनाई दे रहा था. कुछ रूटिन बातें थीं, इसलिए खास ध्यान देने जैसा नहीं था. फिर भी करुणाशंकर गौर से सुनने की कोशिश कर रहे थे.

अचानक मिनिस्टर से बात करनेवाला दबी-दबी-सी आवाज में बोलने लगा, "साहब, आपकी बात सही है. इसका टेंडर मंजूर नहीं होना चाहिए. पहली बात तो यह है कि वह समय पर नहीं मिला और दूसरी बात यह कि वह सबसे ऊँचा है."

"मंजूर होना ही नहीं चाहिए. उसके विषय में विचार भी नहीं किया जा सकता." जगमोहन की आवाज सुनाई दी.

"लेकिन साहब," बोलनेवाले की आवाज और भी धीमी, दबी-सी हो गयी, "मंत्रीजी ने स्वयं हस्तक्षेप करके इस कंपनी का एक बड़ा टेंडर पास करवाया है. सुना है कि वे प्रधानमंत्री के लड़के के खास मित्र हैं."

"देखिए, मेरे साथ ऐसी बातें करने का कोई मतलब नहीं. चाहिए तो प्रधानमंत्री मुझे ओहदे से उतार दें; लेकिन मैं देश के कानून को भंग नहीं होने दूँगा. देश का हित सबसे पहले."

"साहब, एक और बात भी है."

"क्या है ?"

"यह टेंडर पाँच करोड़ का है."

करुणाशंकर सतर्कता से सुनने लगे. अब जगु भाराडी का असली रूप प्रकट होगा !

"तो क्या हुआ ?"

"साहब, टेंडर ऊँचा है क्योंकि उसमें पंद्रह प्रतिशत जोड़े हुए हैं."

"मतलब ?"

"सीधी-सी बात है — पचहत्तर लाख !"

"आप... आपने मुझे क्या समझ रखा है ?" जगमोहन की आवाज ऊँची हो गयी. "आप सबको एक ही तराजू से तौलते हैं क्या ?"

"साहब, जरा सोचिए तो सही..."

"मैं सोचकर ही कह रहा हूँ. देश के पाँच करोड़ बरबाद हो रहे हैं. उसमें से पचहत्तर लाख आप मुझे देना चाहते हैं तो पचहत्तर लाख कहीं और भी देने के लिए तैयार होंगे, ठीक है न ?"

"जी, साहब, इसके बगैर काम कहाँ होता है ?"

"तो फिर कंपनी भी कुछ तो मुनाफा कमायेगी, आप बीच में हैं तो आपको भी कुछ मिलेगा, ठीक है न ?"

"अब आप समझे, साहब ! यह तो हम सबके संयुक्त कल्याण की योजना है."

"संयुक्त कल्याण की योजना !" जगमोहन बोला, फिर जोर से कहा, "आपको शर्म नहीं आती, ऊपर से गरज रहे हैं ? जो काम एक करोड़ में हो सकता है उसके लिए आप सरकारी खजाने से पाँच करोड़ ऐंठना चाहते हैं ? ऐसा भ्रष्टाचार ? देश की संपत्ति को इतनी आसानी से हथिया लेंगे क्या ?"

"साहब, भूलिए मत, एक साल के बाद चुनाव है. आप शायद ईमानदार होंगे, लेकिन आपके पक्ष के सभी प्रत्याशियों पर जो छींटे उड़ रहे हैं उसे ध्यान में रखते हुए आपकी प्रतिभा निर्मल नहीं रही. ये पैसे होंगे तो चुनाव में विजय पाने में उपयोगी सिद्ध होंगे."

"लगता है आप गलत द्वार खटखटा रहे हैं. प्रजा के पैसों का दुरुपयोग करके चुनाव जीतने के बजाय मैं नहीं जीतना अधिक पसंद करूँगा."

"साहब..."

"देखिए, मेरे साथ बहस करने का कोई मतलब नहीं."

"साहब, मेरी बात तो सुनिए. देखिए, मेरे पास यह जो बैग है, इसमें पंद्रह प्रतिशत कमीशन की राशि नकद ले आया हूँ. आप भले ही पंद्रह दिन के बाद टेंडर मंजूर करें."

"गेट आऊट !" जगमोहन की आवाज बेहद ऊँची हो गयी, "अरे... कोई है ?" उसने फिर से कहा. बाहर से दो-तीन आदमी दौड़े आये. "इनको सर्किट हाउस का दरवाजा दिखा दो !"

करुणाशंकर ने देखा कि सूट-बूट पहने, एक हाथ में भारी बैग थामे एक आदमी बाहर निकल रहा था. जगमोहन की आवाज सुनाई दी, "इस आदमी ने मुझे काफी परेशान किया है. अब मुझे किसीसे नहीं मिलना."

"साहब, बाहर एक..."

"मैंने कहा न कि मैं अब किसीसे मिलना नहीं चाहता !"

"साहब, आप कह रहे थे न कि बालक, हरिजन, आदिवासी, दुखी स्त्री को जाने न देना."

"हाँ, अब भी कहता हूँ."

"पिछले हफ्ते गोपनाथ महादेव के मंदिर में आप एक लड़के से मिले थे. उससे आपने बाद में मिलने के लिए क़हा था."

"आह... कितने निर्दोष बालक थे ! जाओ, जल्दी जा के उस लड़के को बुला लाओ. उस दिन बच्चों से जो मिलन हुआ था, वह याद आते ही मेरी थकान दूर हो गयी. वह बेवकूफ मैनेजर, मिनिस्टर आये थे, इसलिए निर्दोष बालकों को निकाल रहा था. वो तो अच्छा हुआ कि मैं बाहर निकल आया, वरना इस बात का गम मुझे जीवनभर रहता."

•

करुणाशंकर मास्टर के घर के पास एक चमकीली मोटरगाड़ी आकर रुकी. जहाँ मास्टरजी रहते थे, उस मोहल्ले में गाड़ी का आना आज भी अचरज की बात थी. अगर कोई मोटरसाइकिल पर बैठकर आये तब भी चार-छह लड़के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगते और औरतें झरोखों से झाँकने लगतीं कि किसके यहाँ ऐसे भाग्यवान् अतिथि का आगमन हुआ है. तो फिर ऐसी शानदार गाड़ी के आने के क्या कहने !

करुणाशंकर मास्टर के घर की बात तो कुछ और ही थी. संगीतमय हॉर्न के बजते ही आठ-दस बच्चे करुणाशंकर मास्टर की ड्योढ़ी पर दस्तक देने लगे, "यहाँ रहते हैं ! मास्टरजी यहाँ रहते हैं !" जैसी आवाजें सुनाई देने लगीं. मास्टर-जी पूजा पर बैठे थे. उनको इस शोरगुल से जैसे कोई वास्ता ही नहीं. मगर क्या बात है, यह देखने के लिए ड्योढ़ी तक गयी हुई लक्ष्मी के लिए वापस लौटकर मास्टरजी को घर आये अतिथि से आगाह करना असंभव-सा हो गया— क्योंकि खिड़की खोलते ही उसने अपने सामने खादी के कपड़े पहने, हाथ जोड़े एक आदमी को खड़ा पाया.

इतना बड़ा आदमी उसे इस प्रकार हाथ जोड़े, यह बात लक्ष्मी की समझ से परे थी ! ऐसी स्थिति में उसे क्या करना चाहिए यह भी वह तय नहीं कर पा रही थी.

"बहन, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ?" उस आदमी ने मधुर आवाज में कहा.

हड़बड़ाहट में लक्ष्मी ने हाथ जोड़ने की कोशिश की और इसी प्रयत्न में उसने आखिर बलायें ही ले लीं, "आइए भैयाजी, आपके चरण हमारी कुटिया... आइए..."

आगंतुक ने लक्ष्मी के पीछे-पीछे घर में प्रवेश किया. अंदर आते समय जरा सा झुकना चाहिए था, परंतु असावधानी से उसका सर दरवाजे की चौखट से टकरा गया. लक्ष्मी ने यह देखा तो अपनी साड़ी का पल्लू मुँह पर रखकर हँसी रोकती हुई जल्दी से घर के भीतर चली गयी. बरामदे में गद्दी बिछी हुई थी. लक्ष्मी जल्दी से उस पर धुली हुई चादर बिछाने लगी. चादर दोनों तरफ से फटी हुई थी. फटा हुआ एक छोर अंदर करने पर दूसरी ओर का छोर बाहर निकल आता था.

"ठीक है बहन," कहते हुए वह आदमी गद्दी पर बैठ गया, "करुणाशंकरजी घर पर हैं क्या ?"

पिछले बीस-पच्चीस साल से करुणाशंकर मास्टर या केवल मास्टरजी के नाम से जाने जाते करुणाशंकर को 'करुणाशंकरजी' के नाम से पुकारते सुनकर लक्ष्मी को आश्चर्य हुआ.

"वे पूजाघर में हैं, अभी बुलाती हूँ."

'नहीं, उनकी पूजा पूरी हो जाने दीजिए, मैं बैठा हूँ."

लक्ष्मी तुरंत पूजाघर में गयी.

"कौन आया है ?" मास्टरजी ने पूछा.

"पता नहीं, गाड़ी में आये हैं, भनियावाले मंत्री लग रहे हैं."

"कौन मंत्री ?" कहते-कहते करुणाशंकर खड़े हो गये. उनका रुद्रीपाठ अधूरा रह गया, "जगमोहन ? यहाँ पर !"

अभी चार-छह दिन पहले सर्किट हाउस में जो कुछ हुआ था, वह करुणाशंकर को याद आ गया. उस भ्रष्टाचारी कॉन्ट्रेक्टर को भगा देने के बाद जगमोहन ने केवल बालकों के सिवा किसीको मिलने से इन्कार कर दिया था. भनु अकेला अंदर गया था. जगमोहन ने पूछताछ करने के बाद अपनी जेब से पेन निकालकर उसे दे दिया था. फिर कहा था, "इम्पोर्टेड पेन है, परंतु तस्करी का नहीं. यह पेन तो अमरीका के राष्ट्रपति ने मुझे उपहार में दिया था."

करुणाशंकर ने पेन से लिखकर देखा. इतने सरल प्रवाह से चलता पेन उन्होंने अपनी जिंदगी में कभी देखा नहीं था.

"मान गये, जगमोहन है तो दिलदार आदमी. बात ही बात में ऐसा पेन बच्चों को दे देना कोई छोटी बात नहीं !"

"अब इसे रख भी दीजिए, इतना कीमती पेन खराब करके ही छोड़ेंगे क्या ?" कहते हुए लक्ष्मी ने पेन को अपने पिटारे में सँभालकर रख दिया था. इतने दिनों में भनु ने, करुणाशंकर ने और लक्ष्मी ने कम-से-कम दस बार उस पेन को पिटारे से निकालकर देखा ही होगा.

उस दिन जगमोहन उसे नहीं मिला तो उसकी वजह जगमोहन की सिद्धांतनिष्ठा ही थी. आज उसे अचानक घर आया देख करुणाशंकर चकित रह गये थे.

उन्होंने पूजा की धोती पहनी हुई थी, जो फटी हुई थी. लेकिन उसे बदलने का समय नहीं था. कुछ ऐसी ही फटी हुई शाल कंधे पर डाले वे बाहर आये.

करुणाशंकर को देखते ही जगमोहन खड़ा हो गया और आगे बढ़कर उनके पैर छू लिये. नीचे झुके, अपने दाहिने पैर के अँगूठे पर हाथ लगाते जगमोहन को देखकर वे स्तब्ध रह गये. वे स्वयं बापू के चरणों को जिस श्रद्धाभाव से छूते थे, वही भाव उन्हें जगमोहन में दिखा.

"बैठिए."

"आप बैठिए."

"यहाँ आप पहले. आप तो हम सबके ध्रुवतारक हैं."

करुणाशंकर के बैठने के बाद जगमोहन बैठा. मनु पड़ोस से एक कुर्सी ले आया था. लेकिन 'मैं यहीं पर ठीक हूँ' कहते हुए जगमोहन चारपाई पर ही बैठ गया.

"मास्टर साहब, मुझे बाद में पता चला कि अपने सुपुत्र के साथ आप स्वयं सर्किट हाउस आये थे !"

"जी, आप..."

"नहीं, इतना व्यस्त नहीं था. केवल एकाध मुलाकाती से गहमागहमी हो गयी थी. इसमें मेरा दिमाग जरा थक चुका था. आप जैसे स्वातंत्र्यवीर मुझसे मिलने आयें और मैं मिलूँ नहीं, इसका प्रायश्चित्त करने के लिए मुझे आपके घर ही आना चाहिए था." करुणाशंकर की आँखें भर आयीं.

"मास्टरजी, आप जैसे स्वातंत्र्यवीरों से तो हमने प्रेरणा पायी है. अगर आप चाहते तो आज आप मंत्री या गवर्नर होते. मैं भूला नहीं हूँ गांधीजी के उन शब्दों को— करुणाशंकर जैसे कार्यकर्ताओं के लिए आदर होता है. उन्होंने सेवा को सर्वोपरि समझकर मंत्रीपद का त्याग किया."

करुणाशंकर की आँखों से पानी बहने लगा. एक लंबे अरसे के बाद किसीने अपनी तरफ से गांधीजी के इन शब्दों को याद किया था.

जगमोहन शांत भाव से करुणाशंकर की पीठ सहलाते सांत्वना देते रहे थे. कुछ देर के बाद करुणाशंकर स्वस्थ हुए.

"यह तो आपका बड़प्पन है, मिनिस्टर साहब." उन्होंने कहा.

"मुझे मिनिस्टर साहब कहकर पाप का दोषी न बनाइए. आपसे इतना छोटा हूँ कि केवल जगमोहन कहेंगे तो भी ठीक रहेगा."

"भाई जगमोहन भाई, आप इतने बड़े पद पर पहुँचकर भी जिस प्रकार इन्सानियत की राह पर चल रहे हैं, उसी प्रकार से यदि हमारे सब मंत्री सही राह पर चलें तो इस देश की तसवीर बदल जाये."

"मास्टरजी, अगर आपका आशीर्वाद रहे तो हम सब साथ मिलकर इस देश की तसवीर बदलने में कामयाब हो जायेंगे. आप जैसे लोगों की तपस्या के बल पर तो इस देश की प्रतिष्ठा दुनियाभर में बनी हुई है. इस देश को जरूरत है..."

जगमोहन कहे जा रहा था. करुणाशंकर एक-एक शब्द एकचित्त होकर सुन रहे थे. आज तक वे ऐसे शब्दों को नाटकीय, कृत्रिम, नकली एवं दंभयुक्त मानते थे. नेता लोग अपने भाषण में कुछ ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करते हैं. आज इन शब्दों को जी भरके हृदयस्थ कर रहे थे. जगमोहन के शब्दों में उनको कहीं कुछ भी आपत्ति उठाने जैसा नहीं लगा. वे मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे.

"मुझे बैठने के लिए कुर्सी नहीं चाहिए. आपके पूजाघर में चलते हैं. आपसे बात करनी है. ईश्वर की गवाही रहेगी तो और भी अच्छा होगा."

करुणाशंकर 'हाँ' या 'नहीं' कुछ कहें उसके पहले ही जगमोहन उनका हाथ पकड़कर पूजाघर में जा पहुँचा. पूजाघर छोटा था, लेकिन जगमोहन पलथी मारके बैठ गया. उसने ईश्वर को प्रणाम किया और कहा, "क्या यह शिवलिंग स्फटिक का है ?"

"हाँ."

"बहुत ही अच्छा है. किसी संत महात्मा की भेंट लगती है."

"हाँ, एक बार तीर्थयात्रा पर गया था तब रामेश्वर में एक शंकराचार्यजी के मुकाम पर गया था. उनसे यह प्रसाद मिला था."

"आप जैसे सात्विक साधक के घर में ही ऐसी पूजा होती होगी." कहकर जगमोहन ने इधर-उधर देखकर कहा, "मास्टरजी, मैं आपकी आदर्शपरस्ती से वाकिफ हूँ. स्वतंत्रता की लड़ाई में आपने जो योगदान दिया, उसके लिए आप स्वतंत्रता-सैनिक की पेंशन भी नहीं ले रहे हैं. आजादी की लड़ाई का मोल रुपये-पैसे में भुनाया जा सकता है कभी ? आपकी बात सही है. आपकी उस बात को सुने हुए आठ-नौ साल हो गये होंगे, ठीक है न ? मैं स्वतंत्रता-सैनिक के रूप में अपना नाम दर्ज कराने के लिए निवेदन दे रहा था कि मैंने उसी समय इरादा बदल दिया."

करुणाशंकर धड़कते दिल से सुनते रहे. यह बात उनके मुँह तक बस आ ही गयी कि 'अब तो घर के लोग मुझे कोसते हैं कि व्यर्थ ही दो सौ रुपये की पेंशन गँवायी', लेकिन वे बोल नहीं पाये.

"मास्टरजी, आपका त्याग महान् है. आप जैसे संस्कार-सेवकों को खाने-पीने की कमी न रहे और आपकी संतान को अच्छी शिक्षा मिले, यह देखना हमारा कर्तव्य है."

"धन्यवाद..."

"नहीं, हम कोई एहसान नहीं कर रहे हैं, हम जिस सत्ता पर आरूढ़ हैं, वह आप जैसे ब्राह्मण के पुण्यबल पर ही... वाह ! क्या आपको वह सम्मेलन याद है, जिसमें आपने 'सुदामा-चरित्र' से उद्धृत करके कृष्ण के इन शब्दों का जिक्र किया था —

हुं जे भोगपुं राज्यासन रे,
ए आ ब्राह्मण नुं पुण्य रे...

(मैं जो राज भोग रहा हूँ, वह केवल इस ब्राह्मण के पुण्य के आधार पर भोग रहा हूँ)"

करुणाशंकर चौंक पड़े. 'सुदामा-चरित्र' की ये पंक्तियाँ सही थीं. परंतु उन्होंने किसी भाषण में उन पंक्तियों को उद्धृत किया हो, ऐसा कुछ याद नहीं आता था. फिर भी उन्होंने सर हिलाया, "इस उम्र में अब सब कुछ याद भी तो नहीं रहता ! हो सकता है कभी किसी सम्मेलन में कहा हो."

"मास्टरजी, आज आपके घर एक अभ्यागत की हैसियत से आया हूँ. एक भिक्षा माँग रहा हूँ. आप मुझे खाली हाथ नहीं लौटायेंगे, वादा कीजिए."

"जगमोहन भाई, आप जैसे भले आदमी जो भी कहेंगे मैं करूँगा."

जगमोहन ने अपने जैकेट की जेब से रुपयों की गड्डी निकाली. सौ-सौ रुपये के सौ नोटों की गड्डी थी, "यह छोटी सी राशि है. यह राशि पवित्र मार्ग से आयी है. जवाहरलालजी ने १९६१ में मुझे बुलाकर एक निश्चित धनराशि दी थी और कहा था कि जब किसी सच्चे गांधीवादी से मिलो तब इसमें से थोड़ी-बहुत राशि बाँटते रहना."

इसके बाद जगमोहन ने एक-दो नाम बताये, "श्रीमान् 'अ' को कुछ राशि दी है."

"वे तो पक्के गांधीवादी हैं. बिलकुल सच्चे आदमी. क्या उन्होंने भी इस राशि को स्वीकार किया होगा ?"

"यह देखिए देहरादून से लिखा हुआ उनका पत्र."

बराबर उनकी ही लिखावट. पत्र में लिखा था, "आपका सद्‌भाव अतुलनीय है. कुशल होंगे."

"ठीक है, और क्या लिखते ? इतने बड़े आदमी 'आपसे कुछ रुपये मिले' ऐसा लिखेंगे क्या ?"

"जवाहरलालजी ने कहा था कि जिस प्रकार मैं तुझसे कोई रसीद नहीं माँग रहा, उसी प्रकार तुम भी किसीसे रसीद न लेना. मेरे यहाँ से बाहर निकलते ही आप यह बात भूल जाना कि यह राशि कहाँ से आयी."

"लेकिन यह सब... इतनी बड़ी राशि..." करुणाशंकर हड़बड़ा गये.

"यह राशि बहुत कम है. मगर आपने कुछ भी कहा तो मेरी कसम है. आपने ईश्वर की गवाही पर मेरी बात रखने का वचन दिया है. आपके हाथों इस राशि का उपयोग होगा तो जवाहरलालजी की आत्मा को शांति पहुँचेगी."

"मगर..." सौ रुपये की गड्डी हाथ में लेकर उसे हवा में तौलते हुए करुणाशंकर ने कुछ कहने की कोशिश की.

जगमोहन तुरंत खड़ा हो गया.

"मास्टरजी, फिर मिलूँगा. गाँव में आने पर खबर दूँगा."

करुणाशंकर कुछ समझ पाते, इसके पहले ही वह तेजी से बाहर निकल गया.

लक्ष्मी पूजाघर में आयी.

"क्या हुआ ?" उसने पूछा, परंतु जवाब देने की कोई जरूरत नहीं थी. "अहा हा... इतने सारे... ?"

करुणाशंकर के ध्यान में आया कि उनके हाथ में दस हजार रुपये थे.

"मनु के आने से पहले इसे पिटारे में रख दूँ..." लक्ष्मी करुणाशंकर के हाथ से रुपये व चाबी लेकर, रुपये अपनी पुरानी साड़ी में लपेटकर पिटारे में रखने के लिए ले गयी. पिटारे में सबसे नीचे रुपये रखकर रसोईघर की अलमारी में पड़े दो-तीन पुराने तालों में से उपयुक्त ताला खोजने लगी.

भनु लौट आया.

"क्यों माँ, वे अच्छे आदमी हैं न ?"

करुणाशंकर भौचक्के से खड़े थे. उन्होंने देखा कि उनके घर के पिटारे को पहली बार ताला लगाया जा रहा था. इतना ही नहीं, उसकी चाबी लक्ष्मी अपनी साड़ी के छोर में कसके बाँध रही थी.

"आपसे क्या बात हुई, पिताजी ?" भनु करुणाशंकर के पास गया.

करुणाशंकर हाथ में माला लिये जाप जपने बैठ गये थे.

•

नौ अगस्त के रोज सबेरे भनु अपने पिताजी के साथ उनके कपड़ों के विषय में बहस कर रहा था. वह अगले ही दिन खादी भंडार से महीन धोती, टेरेलिन खादी का कुर्ता और ऐसा ही जैकेट खरीद लाया था.

करुणाशंकर ने कहा, "भनिया, ऐसी खादी तो मैंने अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखी, मेरी काती हुई सूत की अंटी के बदले में जो खादी मिले उसे लाने की बात मैंने तुमसे कही थी न ?"

"आप भी पिताजी कैसी बातें कर रहे हैं ! उसके बदले में गँदले जैसे कपड़े का कुर्ता दे रहे थे. ऐसे दिन पर वह क्या अच्छा लगता ?"

"क्यों नहीं ? जो मैं आज तक पहनता आया हूँ वह आज एकदम खराब कैसे लगने लगेगा ?"

"आज आपका सम्मान होनेवाला है. प्रधानमंत्री अपने हाथों से आपको शॉल भेंट करेंगे. जगमोहनदास विशेष अतिथि हैं तब..."

"भनिया, मेरी जिस पोशाक को देखकर जगमोहनदास खिंचते चले आये, वह क्या आज और भी अच्छी नहीं लगेगी ? अब इस उम्र में मुझे यह स्वांग रचने की क्या जरूरत है ?"

"पिताजी, आप बात को समझने की कोशिश तो कीजिए. हम आज आजाद भारत में जी रहे हैं. यह टेरेलीन खादी मोरारजी देसाई ही तो ले आये हैं."

"ले आये होंगे. मोरारजी देसाई टेरेलिन का धागा कात पाते होंगे. मैं तो अपने काते हुए धागे से बने कपड़े पहनता हूँ."

"कातकर उससे बनी खादी पहनने की बात तो तब थी जब हम गुलाम थे. पिताजी, अगर आज गांधीजी जीवित होते तो वे भी इंपोर्टेड कपड़े के लिए प्रतिबंध नहीं लगाते, जब कि ये तो खादी भंडार की खादी के कपड़े हैं..."

"खादी भंडार की खादी ऐसी होती है क्या ?"

लक्ष्मी से अब रहा नहीं गया. वह बोली. "आप तो ऐसे के ऐसे रहे. अपने भनु के आने के बाद ही तो सब अच्छा हुआ. लोगों में आपका मान बढ़ा. पहले इस घर में कोई कदम तक नहीं रखता था और अब बड़े-बड़े लोग आते हैं. आज गांधी चौक में होनेवाली सभा में प्रधानमंत्री आपसे मिलेंगे. एक बार दिल्ली हो आइए, फिर

आपको पता चलेगा कि कितने पुण्यकर्म करने के पश्चात् प्रधानमंत्री के आवास के एक मील की परिधि में प्रवेश कर पाना संभव होता है.

"लेकिन इसका कपड़े से क्या लेना-देना ?"

"आजकल हर मंत्री ऐसे कपड़े ही पहनता है. और बहस किये बगैर आप ये कपड़े पहन लीजिए. अभी कल गाँव के मुखिया आये थे न..."

"मुखिया नहीं, मेयर कहो, मेयर..." भनु ने कहा.

"हाँ वही मेयर-मुखिया, कह रहे थे कि आपको कहीं पर गवर्नर के पद पर नियुक्त करनेवाले हैं. इतने सालों तक गांधीजी के आदर्शों पर अमल करने के बाद यह फल मिला है आपकी तपस्या का."

"कि तपस्या का सत्यानाश हो गया है !" करुणाशंकर चीखे.

"आज नौ अगस्त की छुट्टी है. खादी भंडार बंद हैं. गांधी चौक जाने में अब आधा घंटा रह गया है. मेयर अपनी गाड़ी में आपको लेने के लिए आ रहे हैं. प्रधानमंत्री के हेलिकॉप्टर के नीचे आने पर आपको ही सबसे पहले उनका स्वागत करना है."

"मगर..."

"छोड़िए अगर-मगर, अब तो ये कपड़े पहन लीजिए या कह दीजिए कि आप इस समारोह में आना नहीं चाहते." भनु ने कहा.

"या फिर कहें तो आपके फटे-पुराने कपड़े, जो गठरी में पड़े हैं, ला दूँ. खूब जँचेंगे !" लक्ष्मी ने व्यंग्य में कहा.

"आज तक तो वे ही जँचते थे..." करुणाशंकर बड़बड़ाये, "सब बाहर निकलो, मैं कपड़े बदल लेता हूँ." लक्ष्मी और भनु खुश होते हुए कमरे से बाहर निकल आये.

दो महीनों में काफी परिवर्तन हो चुका था. अब कमरे में पिटारे के स्थान पर आईनेवाली अलमारी आ गयी थी. चटाई की जगह बेंत के सोफासेट ने ले ली थी. 'नवजीवन' की पुरानी किताबों के बदले गांधीजी के ग्रंथों का नया सेट सजा दिया गया था. जिसकी वे आज तक आलोचना करते आ रहे थे, वही सब कुछ अब उनके घर में दाखिल हो चुका था.

इसकी शुरुआत उन रुपयों से हुई थी जो जवाहरलाल नेहरू ने गुप्त रूप से जगमोहन को दिये थे. उस दिन दस हजार रुपये जितनी बड़ी राशि लौटाते नहीं बना था. करुणाशंकर को लगा कि जगमोहन ने राशि काफी सोचकर तय की होगी, क्योंकि हजार रुपय होते तो उन्होंने ठुकरा दिये होते. परंतु यह राशि इतनी थी जितनी वे झेल पाते. तिस पर भी अगर ऐन मौके पर लक्ष्मी न आ गयी होती तो उन्होंने दौड़ते हुए पीछे जाकर जगमोहनदास को वापस कर दी होती. इसमें जगमोहनदास का क्या दोष ? वे तो निर्मल आदमी हैं. खुद उनकी उपस्थिति में उन्होंने पचहत्तर लाख रुपये जैसी राशि को ठुकरा दिया था. और स्वयं दस हजार रुपये भी लौटा न सके. और अब भनु, लक्ष्मी और सभी के दिमाग में, अरे स्वयं

उनके दिमाग में भी धन और सत्ता का एक नशा-सा छाया रहता है. लक्ष्मी को चरखा संघ के मंत्रीपद पर नियुक्त करके महीने का वेतन तय कर दिया गया था. वहाँ उसे रोज दोपहर जाकर केवल गप्पें लड़ाना था. वे खुद शाला में निवृत्ति की आयु पार करने के बाद भी सिफारिश पर शिक्षक बने रहे थे.

और फिर शाला के बोर्ड ने उनको सेवा-समाप्ति के दिन से बोर्ड का सदस्य बना दिया और शाला की सलाहकारी समिति के प्रमुख पद पर नियुक्त कर दिया. शाला के जिस केबिन में वे प्रवेश करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे, उस केबिन में अब वे स्वयं बैठने लगे. जिस टेलीफोन को देखकर वे डरते रहते थे, उस घंटी बजाते टेलीफोन पर कभी मेयर तो कभी मत्रीजी की ओर से बधाई संदेश आने लगे

करुणाशंकर महीन धोती की चुन्नटें ठीक कर रहे थे. वे सोचने लगे कि जिस प्रकार से वे अब तक जिये वह ठीक था या अब जो कुछ हो रहा है वह ठीक है ? भीतर से कुछ अच्छा नहीं लग रहा था.

करुणाशंकर ने जब सर पर टोपी रखकर अलमारी के आईने में देखा तो पलभर तो उनको यूँ लगा जैसे वे किसी बड़े नेता से मिल रहे हों. वे आईने में देख रहे हैं, ऐसा खयाल न होता, तो शायद वे नमस्कार कर बैठते ! अपना यह रूप उन्हें अच्छा लगा. इस उम्र में उनका व्यक्तित्व इतना आकर्षक लगता होगा, इसकी कल्पना उन्हें नहीं थी. भनु ठीक ही तो कह रहा था. प्रधानमंत्री से भेंट हो रही हो तो मैं ठस खादी पहनकर जाता तो कैसा लगता ? आज अगर मेरा होनहार बेटा न होता तो शायद मुझे बेआबरू होना पड़ता.

●

"बापूजी, मेयर साहब आ गये हैं" भनु ने आवाज दी.

पाँव में नये जूते पहनकर करुणाशंकर बाहर निकले.

एक बार तो मेयर भी मात खा गये.

"आइए मास्टर साहब, वाह, आपकी शख्सियत बिलकुल ही बदल गयी है !"

भनु भी उनको देखता रह गया और करुणाशंकर भनु की ओर देखते रहे. चूड़ीदार एवं शेरवानी में भनु भी तो छोटे नेहरू-सा लग रहा था.

एक सपना-सा लग रहा था यह सब.

खास तौर पर बनाया गया था हेलीपेड, जहाँ गरुड़ की भाँति हेलिकॉप्टर नीचे उतरा. इनमें से प्रधानमंत्री कौन से होंगे, यही सोच रहे थे करुणाशंकर. पेपर में तसवीर तो रोज देखते थे, पर आज प्रत्यक्ष दर्शन हुए तो कुछ अलग-सा लगा. दूध-से सफेद कपड़े और लाल टमाटर-सा चेहरा. समाचार-पत्रों में छपी तसवीरें झूठ प्रकट करती हैं. जिन प्रधानमंत्री की उन्होंने रात-दिन निंदा की थी, वे तो तसवीर के प्रधानमंत्री थे. साक्षात् प्रधानमंत्री को देखकर करुणाशंकर दंग रह गये. कृष्ण का विश्वरूप-दर्शन करके जो हाल अर्जुन के हुए थे, वही हाल करुणाशंकर के प्रधानमंत्री को देखकर हुए. बैंड बजा. करुणाशंकर बिलकुल भूल गये कि बैंड बजते

ही उनको आगे बढ़कर प्रधानमंत्री को पुष्पमाला पहनाकर उनका स्वागत करना है. वे तो टकटकी लगाये प्रधानमंत्री की ओर देखते ही रह गये. प्रधानमंत्री बात समझ गये. वे सीधे करुणाशंकर के पास आ गये.

"क्या यही करुणाशंकर मास्टर हैं ?" उन्होंने धीरे से जगमोहन से पूछा.

"हाँ."

"बरसों बाद मिले. गांधीजी के पास जो आदर्शवादी युवक देखा था, वह आज भी वैसा ही है. वे मुझे पुष्पमाला पहनायें, इसकी प्रतीक्षा करने के बजाय मुझे ही उन विभूति को माला पहनानी चाहिए." कहते हुए प्रधानमंत्री ने करुणाशंकर के हाथों में से पुष्पमाला लेकर उन्हींके गले में डाल दी. कैमरे तसवीर खींचने लगे. टेलीविजन कैमरा चल ही रहा था. सभी ने तालियाँ बजायीं. करुणाशंकर की घबराहट का कोई ठिकाना न रहा. जो पुष्पमाला वे प्रधानमंत्री को पहनानेवाले थे, वह प्रधानमंत्री ने उनके गले में पहना दी थी. उन्होंने इधर-उधर देखा. भनु अपने हाथों में दूसरी पुष्पमाला लेकर दौड़ता हुआ करुणाशंकर के पास आया. करुणाशंकर ने भीगी आँखों से प्रधानमंत्री के गले में माला डालकर प्रणाम किया, "मुझसे गलती हो गयी. आपके दर्शन करने में मैं ऐसा निमग्न हो गया कि आपका स्वागत करना ही भूल गया !"

"करुणाशंकर, मुझे पाप का दोषी न बनाइए. आप तो गांधीजी की प्रसादी समान बिरले लोगों में से एक हैं. मुझे तो आपके पैर छूने चाहिए."

सारे पत्रकार इस संवाद के हर शब्द को अपने पैड पर लिख रहे थे.

"ऐसी विरल विभूति को उनके गढ़ से बाहर निकालने के लिए जगमोहन वाकई बधाई के हकदार हैं. आप तो हमारे देश के केसरी सिंह हैं."

"सही फरमाया आपने, सर." जगमोहन ने कहा.

"यह 'सर' और 'मैडम' जैसे प्रयोग मुझे पसंद नहीं. आज मैं प्रधानमंत्री हूँ, कल करुणाशंकर का यह बेटा भी देश का प्रधानमंत्री हो सकता है." प्रधानमंत्री ने कहा.

"हियर ! हियर !" किसीने कहा.

तालियों की गड़गड़ाहट हुई.

करुणाशंकर पहले से ही ध्यानमग्न थे. सबके साथ वे ऐसे चल रहे थे जैसे स्वप्न में चल रहे हों. उनको प्रधानमंत्री के साथ गाड़ी में बिठाया गया. पीछे की गाड़ी में जगमोहन, लक्ष्मी व भनु बैठे. करुणाशंकर को लगा — इतने विनम्र एवं विवेकी प्रधानमंत्री ? मैंने आज तक उनको व्यर्थ ही भ्रष्ट कहा.

गांधी चौक की सभा में प्रधानमंत्री और जगमोहन ने जो कुछ भी कहा, उसके सारे शब्द उन्हें अमृत से लगे. आज तक ऐसे भाषणों में करुणाशंकर को निरे दंभ के सिवा और कुछ नजर ही नहीं आता था. लेकिन आज जब वे मंच पर बैठे थे तब सारी स्थिति कुछ अलग ही लगी. मंच पर और मंच के सामने बैठने में बहुत अंतर होता है, यह बात अनजाने में ही उनकी समझ में आ गयी.

अब. करुणाशंकर की बारी थी. गांधी चौक की सभाओं को करुणाशंकर ने कई बार संबोधित किया था. पर आज उनकी जुबान पर एक भी शब्द नहीं आ रहा था. वे गद्‌गद थे. "इस रंक देश के सौभाग्य हैं कि उसे सारे देश की फिक्र करनेवाले प्रधानमंत्री मिले. राज्य की किस्मत अच्छी है कि यहाँ जगमोहन जैसे आदर्शवादी मंत्री हैं, जो लाखों रुपये की रिश्वत को बेहिचक ठुकरा देते हैं." उन्होंने सर्किट हाउस के प्रसंग का वर्णन किया. उन्होंने गोपनाथ के विश्रांतिगृह के प्रसंग का वर्णन किया. प्रधानमंत्री ने प्रोटोकॉल की परवाह किये बगैर किस प्रकार उनके गले में माला डाल दी, यह कहा. तालियों की प्रचंड गड़गड़ाहट हुई.

प्रधानमंत्री ने खड़े होकर कहा, "ऐसे व्यक्ति अगर देश की पतवार सँभालने के लिए तैयार हों तो मैं स्वयं हट जाने के लिए तैयार हूँ. लेकिन आप सबको पता है कि करुणाशंकर ने स्वयं गांधीजी से कह दिया था कि वे मंत्री पद नहीं चाहते." करुणाशंकर ने फिर एक बार खड़े होकर घोषणा की कि "मैं सत्ता नहीं चाहता. मुझे जनता के बीच जनता के साथ रहकर कार्य करना है." फिर एक बार तालियों की प्रचंड गड़गड़ाहट करुणाशंकर के कानों से टकराती रही.

•

करुणाशंकर के दिलोदिमाग पर अभी तक तालियों की गड़गड़ाहट छायी हुई थी. उन्हें लगा, गांधीजी ने नशाबंदी और व्यसनमुक्ति की बात कही होगी तो उन्हें तालियों के नशे का खयाल नहीं आया होगा. गांधीजी स्वयं रोज सभाओं में तालियों की गड़गड़ाहट सुनकर उसके नशे के आदी हो गये होंगे, इसलिए वे उस नशे से मुक्त होने की बात क्यों करेंगे ? और औरों को भी यह नशा न करने की सीख क्यों देते ? तालियों का नशा एक बार चढ़ गया तो शायद ही उतरता है. करुणाशंकर हर दो-चार रोज के बाद एक भाषण देने लगे.

भानुप्रसाद— अब तो करुणाशंकर और लक्ष्मी भी उसे भनुभाई जैसे सम्मानजनक नाम से पुकारने लगे थे— प्रधानमंत्री के सुपुत्र के मित्र बन गये थे और युवा मंच पार्टी के विभागीय प्रमुख की हैसियत से जिले भर में उनका मान-सम्मान था. घर के आँगन में एक जीप खड़ी रहती थी. घर का रंग-रूप ही बदल गया था. ऊपर एक-दो मंजिलें किस प्रकार बनायें, इस बारे में भानुप्रसाद इंजीनियर के साथ सलाह-मशविरा कर रहे थे. उस इंजीनियर का टेंडर भानुप्रसाद की सिफारिश से मंजूर हो गया था, इसलिए लक्ष्मी का विचार था कि मंजिलें बनाने में ज्यादा खर्च नहीं होगा. लक्ष्मी भी चरखा संघ के मंत्री की हैसियत से काफी आय पाती थी. करुणाशंकर अब सरकारी बैंक के निदेशक बना दिये गये थे. बैंक के मैनेजर बैंक में जाने से पहले खुद घर आकर पूछ लेते थे कि कुछ काम तो नहीं है. जो हेडमास्टर करुणाशंकर को उनकी मुंशीगीरी को लेकर धमकाते रहते थे, वही अब शाला की सलाहकार समिति के प्रमुख करुणाशंकर को रोजाना नमस्कार करने के लिए आ जाते थे.

वैसे तो करुणाशंकर ने अपने-आपको इस नयी जिंदगी के अनुकूल बना लिया था, फिर भी वे कमी-कभार सोच में पड़ जाते थे— यह जिंदगी उचित है या पहले की जिंदगी उचित थी ?

सर्किट हाउस में एक बार फिर जगमोहन आये हुए थे. एक चपरासी आकर कह गया— "मास्टर साब, साहब ने आपको याद किया है."

करुणाशंकर को साढ़े तीन दशक पहले की याद आ गयी. उस समय राजगढ़ में देशी रियासत थी और ठाकुर का आदमी आकर 'ठाकुर साहब आपको याद कर रहे हैं' कहकर चला जाता था. वही शब्द आज जगमोहन के लिए प्रयुक्त होते देख करुणाशंकर को कुछ अजीब-सा लगा.

वे बाहर निकले. आँगन में जीप खड़ी थी. वे जीप में बैठकर सर्किट हाउस पहुँचे. अब सब लोग उन्हें झुककर सलाम करते थे.

किसका ओहदा बड़ा ? शाला में शिक्षक का या बैंक में धन की रखवाली करते समय निदेशक का ? करुणाशंकर ने सोचा. अब वे मास्टर नहीं रहे थे. वे सरकारी बैंक के निदेशक थे. पहले जो पंसारी सामान उधार देने में हिचकिचाता था, वही अब रुपये ब्याज पर देने के लिए उनके घर के चक्कर काटता था.

जगमोहन अंदर एयरकंडीशंड रूम में बैठकर चरखा कात रहा था.

"आप कातते भी हैं ?" करुणाशंकर ने सहज ही पूछ लिया था.

"कातना तो चाहिए ही न ! इसके बिना क्या कोई गांधीजी की गद्दी सँभाल सकता है भला ?"

करुणाशंकर तय नहीं कर पाये थे कि गांधी कहाँ पर हैं. वे इस जगमोहन में हैं कि भूखे मर रहे लाखों-करोड़ों देशवासियों में हैं ?

"मास्टर साहब, आज एक खास काम से आपको बुलाया है."

"कहिए."

"आठ-दस महीने में चुनाव होंगे."

"तब तक हमारी सरकार की छवि उज्ज्वल नहीं हो पायी तो जीतना मुश्किल है."

"मास्टर साहब, इतना ही नहीं है. प्रधानमंत्री का कॉल था. अब तक दिल्ली में अध्यादेश पारित हो चुका होगा कि कोई भी आदमी चाहे उसने गुनाह न भी किया हो, तब भी उसे 'गुनाह कर बैठेगा' इसी संदेह पर छह महीने तक की कैद हो सकती है."

"यह तो गलत बात है."

"इसमें गलत कुछ भी नहीं. इस गरीब देश में दौलतमंद और इनके चाटुकार गरीबों की सेवा करने में टाँग अड़ाते हैं. व्यापारी गरीबों का शोषण कर रहे हैं."

"इस पर रोक लगाना सरकार का कर्तव्य है."

"सरकार को अपना कर्तव्य निभाना ही चाहिए."

"हाँ."

"यह अध्यादेश इसीलिए है. इन बड़े-बड़े मालदार लोगों की पहुँच दूर तक होती है. एक बार इनको चार-छह महीने अंदर कर देने पर इनकी तस्करी या शोषण की प्रवृत्ति रुक जायेगी."

"यह भी ठीक है." कोई नया अर्थ करुणाशंकर की समझ में आ रहा था.

"अब सब लोग तो समझते नहीं. विरोधी दल के नेता नासमझ हैं. वे एकदम बरस पड़ेंगे कि लोकतंत्र को खतरा है."

"सही बात है, लेकिन इसमें मैं क्या कर सकता हूँ."

"आप केवल राजगढ़ का क्षेत्र सँभाल लीजिए. सरकार जो भी कदम उठा रही है उसका प्रयोजन गरीब लोगों के कल्याण का है, यही बात आप सबको समझायेंगे, यही बात उनके मन में जमी है, इसके लिए शाला में, कॉलेज में, पंचायत में और गाँव के चौपाल में घूम-फिरकर सभी को बताना होगा. मेरे बारे में अगर कुछ बुरा-भला कहना हो तो कह सकते हैं, लेकिन हमारी पार्टी और सरकार के बारे में अच्छा ही कहिएगा."

"आप तो ईश्वर के समान हैं... आपके बारे में बुरा-भला..."

"चुनाव में अगर मैं विजयी न हो पाऊँ तो कोई बात नहीं, लेकिन हमारी पार्टी विजयी नहीं हुई तो देश पर संकट के बादल छा जायेंगे." जगमोहन ने करुणाशंकर के पाँव पकड़ लिये, "मास्टर साहब, आपको गांधीजी से प्रसाद मिला है. यदि आपका आशीर्वाद मिलेगा तभी मैं राज्य के कल्याण के लिए निर्वाचित हो पाऊँगा."

करुणाशंकर गद्गद हो गये.

"जगमोहन, सरकार जो कदम उठाने जा रही है मैं उसका पूरी तरह समर्थन करूँगा. ठीक है ?"

जगमोहन की दोनों आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह रही थीं.

"मास्टर साहब, ये कागजात पढ़िए."

"यह क्या है ? मैं क्यां करूँगा पढ़कर ?"

"नहीं, इस पर आपको दस्तखत करने हैं. पढ़ना ही पड़ेगा."

"लेकिनं बात क्या है ?"

"आप गरीब बस्तियों में घूमेंगे, पार्टी और सरकार का प्रचार करेंगे. यह सब मुफ्त में तो होगा नहीं. आपको यात्रा करनी पड़ेगी, कहीं कुछ राशि बाँटनी पड़ेगी."

"आप सबकी कृपा से हमें इतना मिल जाता है..."

"वह पर्याप्त नहीं है. यह राजगढ़ आदिवासी ट्रस्ट का ट्रस्ट-डीड है. अभी इसमें करीब दस लाख रुपये जमा हैं. खाते में डेढ़ लाख का ब्याज अलग से जमा है. आप इस ट्रस्ट के कर्ता-धर्ता हैं. डेढ़ लाख में से आप चाहे जितना खर्च कर

सकते हैं. यहाँ पर दस्तखत कीजिए. कल ट्रस्ट रजिस्टर हो जाने के बाद राशि आपके सरकारी बैंक में जमा कर दूँगा."

करुणाशंकर ने दस्तखत किये. अपने दस्तखत ऐसे दस्तावेज पर देखकर करुणाशंकर को पलभर के लिए धक्का-सा लगा.

"मास्टर साहब, पार्टी की इज्जत अब आपके हाथ में है. राजगढ़ आपको सँभालना है." जगमोहन कह रहा था.

करुणाशंकर अपने भीतर एक भूचाल महसूस कर रहे थे.

•

करुणाशंकर की आँखें नम थीं. वे खोडीदास को लंबे अरसे से जानते थे. जनमभर खेत में काम करनेवाले खोडीदास को उन्होंने आज तक कभी ऊँची आवाज में बात करते हुए नहीं सुना था. आज वह कुछ रुआँसी और कुछ रोषयुक्त आवाज में कह रहा था.

"मास्टर साहब, आप कहते हैं इसलिए मान लेता हूँ कि यह कानून हमारे भले के लिए है. लेकिन मेरा क्या भला हुआ ? मेरे बेटे का कोई कसूर नहीं था, फिर भी उसे जेल में बंद कर दिया गया. अठारह साल का मुश्किल से होगा. अभी मूँछ उग रही है. इस उम्र में जेल के अंदर कर देना कैसी बात है ? मुझे बताइए मास्टर साहब, मैं कौन से राजा के किवाड़ खटखटाऊँ ?"

करुणाशंकर से उत्तर देते नहीं बन रहा था, "मैं कल ही जगमोहन भाई के पास जाऊँगा."

"हो आइए आप भी. ठीक है आप भी तसल्ली कर लीजिए. वे सब आपको देवता जैसे लगते होंगे मास्टर साहब, लेकिन हमारे लिए तो जो देवता समान थे उन्होंने भी हमसे आँखें फेर ली हैं."

ये शब्द किसके लिंए कहे गये हैं, इतना भी न समझें, इतने नादान करुणाशंकर नहीं थे. उन्होंने बात को सँभालते हुए कहा, "जगमोहन भाई भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञों के बीच बैठे हुए हैं, परंतु वे स्वयं सबसे अलग हैं. वे ऐसा अन्याय कभी नहीं सह पायेंगे."

"सब एक ही मिट्टी के हैं. सब पलट जाते हैं." खोडीदास ने कहा, "मेरे बेटे का कसूर ही क्या था ? उसने कहा कि दस घंटे तक मजदूरी करने के बाद आधी पायली धान देते हैं तो एक पायली दीजिए. भूसे-कंकड़वाला धान देते हैं तो कुछ अच्छा धान दीजिए. ऐसा कहने में उसने ऐसा कौन-सा गुनाह कर दिया ? और दस मजदूरों को आधी के बजाय एक पायली धान दे देते तो जमींदार का क्या जाता था ? आखिर जमीन तो उन्होंने ही विनोबा भावे को लिख दी थी, और हमें मिली थी, वही फिर से हथिया ली है न ? हमारी ही जमीन, हम मजदूरी करें और इस पर लहराती फसल हमारी आँखों के सामने कोई मालदार ढेर सारे रुपयों में बेच दे तो हृदय में टीस उठती है. हमने तीन पीढ़ियों तक यह सब सहा और हाथ पर हाथ धरे मूक बैठे रहे. अब यह लड़का ऐसा है कि हमें खून के आँसू पीने

पड़ते हैं. हम तो उसे बहुत समझाते हैं— रामदास, ऐसा ही चलता है. इन धनी लोगों ने पूर्वजन्म में अच्छे कर्म किये थे जो आज ऐश कर रहे हैं. हम लोगों ने पाप की गठरी बाँधी होगी. पर ये आजकल के लड़के समझेंगे भला ?"

खोडीदास का हर एक शब्द तीर की भाँति करुणाशंकर के हृदय के आरपार हो गया था.

"भाई खोडीदास, तेरा रामदास अच्छा-भला घर लौटे, इसकी जिम्मेदारी मेरी, ठीक है ? अब तू घर जा. मैं रात को ही शहर जाकर भाई से मिलता हूँ."

खोडीदास आँसू पोंछते हुए चला गया.

करुणाशंकर के पास बैठे हुए खादी कमेटी के मंत्री तनमनीशंकर ने कहा, "साधु बाबा की जात, माँगकर खाना और मसजिद पर सोना. वह अब जमींदार के सामने सर उठाये, ऐसा कैसे चलेगा ?"

"तनमनीशंकर !" करुणाशंकर ने ऊँची आवाज में कहा, "क्या साधु बाबा को पेट नहीं होता और जमींदार को क्या दो पेट होते हैं ?"

तनमनीशंकर ने कुछ अचरजभरी मुद्रा में करुणाशंकर की ओर देखा और फिर बाद में कहा, "मैं तो आपकी सफाई दे रहा था, मुझे क्या !"

•

करुणाशंकर मंत्रीजी के बंगले पर पहुँचे तो मंत्री साहब मीटिंग में थे. बाहर का खंड ठसाठस भरा हुआ था. "आज भाई आपको मिल नहीं पायेंगे." जगमोहन के पी. ए. ने करुणाशंकर से कहा.

"लेकिन मुझे जरूरी काम है."

"मुझसे कहिए."

"हमारे गाँव के खोडीदास के बेटे को पकड़ा है."

"कौन, वो रामदास ? चोरों का सरदार ?"

"मैं जानता हूँ उस रामदास को. न तो वह चोर है, न चोरों का सरदार है."

"होगा, मास्टर साहब, लेकिन साहब के पास ऐसी फालतू बातों के लिए वक्त नहीं है. जो कुछ भी इल्जाम होगा, वैसे बाकायदा हुआ होगा."

"बिना किसी दोष के जेल में बंद करने का कानून है क्या ?"

"है. आप ही ने इसके पक्ष में निवेदन किया था, और आप ही भूल गये ?" पी. ए. ने कहा.

करुणाशंकर को याद आया. प्रधानमंत्री ने अध्यादेश जारी किया था और यह सोचकर कि सारे असामाजिक तत्व जेल में बंद हो जायेंगे, खुद उन्होंने भी सहमति प्रकट की थी. जगमोहन का यही पी. ए. उनके दस्तखत ले गया था.

"भाई मुझे पाँच मिनट के लिए मिलें तब भी चलेगा. मैंने खोड़ीदास को वचन दिया है." करुणाशंकर ने विनती की.

"आज तो उनको फुरसत नहीं है. शाम की फ्लाइट से दिल्ली जा रहे हैं. परसों आयेंगे, फिर शायद आपको मिल पायें, दो दिन रुक जाइए."

"परंतु यह बहुत महत्वपूर्ण बात है. मैं ठहर नहीं सकता. भाई को जाके इतना तो बतायें कि मैं आया हूँ."

"मैं यानी कौन भाई ?" पी. ए. ने करुणाशंकर को देखते हुए पूछा. करुणाशंकर हैरान रह गये. पी. ए. ने बाहर के खंड में बैठे हुए लोगों की ओर इशारा करते कहा, "देखिए, यहाँ पर जो लोग बैठे हुए हैं उनमें न्यायाधीश हैं, कार्पोरेशन के अध्यक्ष हैं, अस्पताल के बड़े डॉक्टर हैं. इनमें से किसीको भी भाई आज नहीं मिल पायेंगे. वे कुछ महत्वपूर्ण कार्य में व्यस्त हैं. यह मीटिंग खत्म होने के बाद वे दिल्ली जानेवाले हैं."

"भाई तो कहते हैं कि वे गरीबों और बच्चों के लिए हमेशा वक्त निकालते हैं. यह भी एक गरीब और उसके बच्चे का काम है." करुणाशंकर ने दाँव लगाया.

"भाई कहते हैं. वे जो कहते हैं वह करते भी हैं शायद. परंतु उनके समय का खयाल हमें रखना पड़ता है. देश की गरीबी हटनेवाली नहीं है और प्रतिक्षण बच्चे तो पैदा होते ही रहते हैं. भाई निठल्ले नहीं बैठे हैं कि हर एक मिनट ये सब व्यर्थ कामों में गँवा दें."

"केवल पाँच मिनट के लिए भेंट करनी है. इतना तो बंदोबस्त कर दीजिए." करुणाशंकर गिड़गिड़ाये.

"मैं अंदर जाकर पूछ आता हूँ." पी. ए. ने कहा.

पी. ए. अंदर गया तो वहाँ खड़े चपरासी ने कहा, "मास्टर साहब, आप व्यर्थ ही में पत्थर को मोम करने की कोशिश कर रहे हैं. रामदास नहीं छूटेगा. ठाकुर समत सिंह का मामला है."

"यहाँ पर ठाकुर समत सिंह की आवाज सुनी जाती है या गरीब किसान की ?"

"समत सिंह की. समत सिंह के पास पैसा है. वह चुनाव जीतने में मदद करता है. समत सिंह कहे कि फलाँ निशानेवाले को देना, फिर है आपके खोडीदास की हिम्मत जो किसी और निशानेवाले को मत दें ?"

"इसीलिए क्या जो जुल्म करता है उसको प्रोत्साहन देना चाहिए ?"

"हाँ. मास्टर साहब, फिर भी अगर आप अपने भाई को मिलना चाहते हैं तो अभी बाहर जाने के लिए निकलें तो रास्ते में खड़े-खड़े बात कर लेना."

पी. ए. बाहर आया, "मास्टर साहब, भाई बहुत ज्यादा व्यस्त हैं. दो दिन के बाद आप आराम से आइए. साथ भोजन करते हुए बातें करेंगे, ऐसा कहा है."

"पर मैंने खोडीदास को जो वचन दिया है उसका क्या होगा ?"

इतने में जगमोहन बाहर निकला, "मास्टर साहब, आप आयें और मैं पलभर के लिए बात न कर पाऊँ तो मुझे कितना दुख होता ? देखिए, ये मि. एंजल्स. वे

स्वीडिश इंजीनियर हैं. अपने राज्य की सिंचाई योजना के बारे में हमें सलाह देने आये हुए हैं. मैं इनके साथ दिल्ली जा रहा हूँ."

"भाई जगमोहन..."

"क्यों, क्या है ?" जगमोहन ने रुककर पूछा. परंतु उसकी आवाज में जो तीखापन था, उससे करुणाशंकर सहम गये.

"मैंने खोडीदास को वचन दिया है..."

"कानूनी मामले में मैं बीच में नहीं पड़ता. फिर भी घोष से लेकर फाइल देख लीजिएगा" कहते हुए जगमोहन उस परदेशी अतिथि के साथ बाहर चला गया.

ज़गमोहन का पी. ए. घोष हँस रहा था, "बैठिए मास्टर साहब, मैं फाइल मँगवाता हूँ. आप देखकर ही जाइएगा. खोडीदास के साथ बात तो कर पायेंगे !"

करुणाशंकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये.. चपरासी फाइल लेने गया था, "भाई घोष, पहले तो ऐसा कुछ भी नहीं था. अचानक यह सब कैसे बदल गया ?"

"सब कुछ वैसे का वैसा चल रहा है, मास्टर साहब. लेकिन संभव है कभी-कभी भाई के अभिनय की वजह से उनकी आवाज आपको कुछ अलग सुनाई पड़ती हो."

"अभिनय ?"

"और नहीं तो क्या ?"

"बच्चों के लिए प्रेम, भ्रष्टाचार के प्रति धिक्कार..."

"सब नाटक है और अब आप भी उस नाटक के एक पात्र हैं."

"कैसे ?"

"हर पाँच साल बाद चुनाव जीतने के लिए कुछ नये शिकार पकड़ने होते हैं. इस बार आप फँसे हैं."

"मैं अब भी सर उठा सकता हूँ."

"आप ऐसा नहीं कर सकते."

"क्यों ?"

"आपके लड़के ने नगरपालिका में इंजीनियर का टेंडर मंजूर करवा दिया है. इंजीनियर ने आपके घर में एक मंजिल ज्यादा बना दी है. गरीबों के लिए जो ट्रस्ट है, उसमें से आपकी गरीबी दूर करने के लिए कितना खर्च किया गया है, उसका हिसाब लगाया है कभी आपने ?"

करुणाशंकर भौचक्के से रह गये.

"फिर बच्चों के नये बस्ते, गोपनाथ का कैंप, पचहत्तर लाख की रिश्वत..."

"सब नाटक था मास्टर साहब, मछली फँसाने के लिए जाल बिछाया गया था."

"बदमाश ! अब मैं पर्दाफाश करूँगा एक-एक का..." करुणाशंकर ने उठने की कोशिश की.

"बैठिए मास्टर साहब. देखिए यह ले आया रामदास की फाइल. जरा देखते जाइए. आपने खोडीदास को वचन दिया है न ?"

करुणाशंकर बैठ ही गये.

"भाई घोष, आप रामदास को छुड़ाने का उपाय बताइए."

"पहले सुन लीजिए. उसके खिलाफ क्या रिपोर्ट दर्ज हुई है उसे देखिए. वह उग्रवादी है. कहते हैं कि चार साल पहले वह कनु संन्याल को जेल में मिला था."

"चार साल पहले तो वह करीब तेरह साल का होगा. वह कहाँ से मिलने जानेवाला था किसीको भी ?"

"कुछ भी हो, यहाँ तो दस्तावेजी सबूत है. रामदास की जेब से उग्रवादी पत्रिकाएँ प्राप्त हुई हैं. उसने ठाकुर समत सिंह का खून करने की धमकी दी है. उसके पास घातक हथियार पाये गये हैं."

"यह सब झूठ है !" करुणाशंकर चीख पड़े.

"मास्टर साहब, देखिए यह पंचनामा किया हुआ है और इसके ऊपर खुद रामदास के दस्तखत हैं."

करुणाशंकर का दिमाग चकरा गया.

"रामदास के छूटने का कोई उपाय है क्या ?"

"ठाकुर समत सिंह से क्षमायाचना करें. और कोई चारा नहीं. कानून और व्यवस्था की बात में भाई बीच में नहीं पड़ते. खून की धमकी कोई ऐसी-वैसी बात नहीं है."

करुणाशंकर अन्यमनस्क होकर खड़े हुए.

"मास्टर साहब, सच बोलने के लिए क्षमा करें. परंतु आप भोले हैं, छोटी बातों में यहाँ तक चक्कर नहीं काटते. वे लोग अपने-आप आपस में निबट लेंगे. आप भी मेरे जैसे एक-दो सेक्रेटरी रख लीजिए. लोगों को अपने तक पहुँचने ही न दीजिए. यही लोकतंत्र में सुखी होने का एकमात्र बढ़िया उपाय है. लोगों को दूर रखें."

करुणाशंकर को पाँव तले जमीन खिसकती महसूस हुई. वे बाहर निकले. वहाँ सहकारी बैंक की एंबेसेडर गाड़ी खड़ी थी. शोफर ने दरवाजा खोल दिया. वे दरवाजे के पास ही रुक गये. "इस भ्रष्ट गाड़ी में बैठूँ या नहीं ?" पर अभी गाड़ी में न बैठने से अकारण फजीहत होगी, सोचकर वे अंदर बैठ गये.

घर पहुँचने तक उनके मन में घमासान मच गया था. मनु दरवाजे पर मिला. "पिताजी, मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा था. मुझे गाड़ी चाहिए."

"कहाँ जाना है ?"

"पास के गाँव में सभा है."

"पाँच मिनट के लिए अंदर चल. बाद में जाना."

"ठीक है."

मनु ने देखा कि आज पिताजी का मिजाज कुछ ठीक नहीं. वह अंदर गया.

"उस ट्रस्ट की चेकबुक कहाँ है ?"

मनु का चेहरा पीला पड़ गया. उसने जेब से चेकबुक निकाली.

"इसमें से तीन चेक काटे गये हैं. ये पैसे किसके लिए इस्तेमाल हुए हैं ?"

"तीनों संस्थाओं के नाम हैं, पिताजी, सारे चेक जनसेवा के कार्य के लिए काटे गये हैं."

"इसमें एक संस्था वह है जिसमें तेरी माँ काम कर रही है. बाकी दो तेरी युवक संस्थाएँ हैं. और चेक बियरर काटे गये. बत्तीस हजार की राशि कम है."

"यह राशि लोक-कल्याण के लिए व्यय की गयी है. आप चिंता न करें. जगमोहन भाई को सब कुछ पता है."

"इसीका तो रोना है. उसे मालूम है इसलिए अब हम आवाज उठाकर कुछ कह सकने की स्थिति में नहीं रहे."

"आवाज उठाकर क्या करना है पिताजी, मुश्किल से पैसे मिलते हैं. गुपचुप जो होता है वह देखते रहें. आवाज उठाकर भूखे ही मरना है न." कहकर मनु बाहर निकल गया.

करुणाशंकर मनु को जाते देखते रहे. बाद में उनका ध्यान चेकबुक की ओर गया. घर की बदली हुई स्थिति की ओर गया. दीवानखाने में टँगी प्रधानमंत्री के साथ अपनी तसवीर की ओर गया. बाहर बैठे सहकारी बैंक के चपरासी की ओर गया.

थोड़ी देर के बाद चपरासी अंदर आया.

"मास्टर साहब, बाहर खोडीदास मिलने के लिए आया है."

"उसे कहो कि मैं अभी व्यस्त हूँ. दो दिन के बाद मिले." करुणाशंकर ने कहा. उत्तर के प्रत्येक शब्द पर उनकी अंतरात्मा पर हथौड़े की चोट हुई थी. आज जो कुछ भी मजबूरन करना पड़ा वही आगे जाकर उनका सहज स्वभाव तो नहीं बनेगा ? करुणाशंकर अपने इस प्रश्न का उत्तर देने की स्थिति में नहीं थे.

•

रामदास एक सप्ताह से थाने में कैद था. पुलिस ने उसको मैजिस्ट्रेट के सामने लाने के बाद पंचनामे के कागजात पेश किये.

"ये दस्तखत आपके हैं ?"

रामदास ने कागज पर अंकित हस्ताक्षर देखे, "नहीं."

"जरा ठीक से देख के बताइए. ये आपके दस्तखत हैं ?"

रामदास ने कहा, "न तो ये मेरे दस्तखत हैं, न मेरे दस्तखतों से मिलते ही हैं. आप मेरी लिखावट देख सकते हैं. किसी हस्तलिपि-विशेषज्ञ को दिखा सकते हैं."

पुलिस अधिकारी ने कहा, "मेरे सामने गाँव के पाँच लोगों की उपस्थिति में इसने दस्तखत किये हैं."

एक के बाद एक पाँचों प्रभावशाली व्यक्तियों ने आकर कहा, "हमारे सामने ही रामदास ने दस्तखत किये हैं."

मैजिस्ट्रेट ने कहा, "लाइसेंस की देशी पिस्तौल रामदास के पास से ही बरामद हुई थी न ?"

"हाँ साहब," पुलिस अधिकारी ने बेहिचक कह दिया.

"बिलकुल झूठ ! मुझसे, मेरे घर से, कुछ भी आपत्तिजनक बरामद नहीं हुआ." रामदास ने कहा.

एक साक्षी ने पुलिस अधिकारी की ओर देखते हुए कहा, "अभ्यस्त नहीं लगते. आपके स्थान पर अभी सब-इंसपेक्टर शर्मा होते तो अभियुक्त कब का एक के बाद एक आरोप स्वीकार करता जाता."

रामदास की आँखों में शोले भड़क उठे.

पुलिस अधिकारी ने कहा, "मुलजिम ज्यादा चालाक है. वह इतनी पिटाई करने पर भी कुछ भी स्वीकार करने पर राजी नहीं होता."

"मैजिस्ट्रेट साहब, मुझसे झूठी स्वीकृति पाने के लिए क्या कुछ नहीं किया गया, इसका और कोई प्रमाण आपको चाहिए क्या ?"

मैजिस्ट्रेट ने सुना-अनसुना करके कहा, "सामने जो बयान है उससे और अभियुक्त के मंतव्य से जाहिर होता है कि दस्तखत अभियुक्त के ही हैं. उसे थाने में बंद करने के लिए इतना पर्याप्त है."

रामदास का खून इतना खौल उठा था कि वह पुलिस के हाथ से निकलकर मैजिस्ट्रेट पर हमला कर बैठता. लेकिन पुलिस ने रस्सा कसकर पकड़ रखा था. उसके हाथ पर रस्से के घिसे जाने से निशान पड़ गये थे.

"मुलजिम को हथकड़ी में रखना पड़ेगा." पुलिस अधिकारी ने कहा.

"उग्रवादी है !" एक साक्षी ने कहा.

ये शब्द सुनकर रामदास काँप उठा. उसे यकीन हो गया कि इस कैद से वह कभी भी बाहर नहीं निकल पायेगा. जिनको उग्रवादी बताया गया था उन सबका क्या हश्र हुआ था, यह रामदास अच्छी तरह से जानता था.

उसकी आँखों के सामने छह महीने पहले की एक घटना तैर गयी.

चितरंजन भट्ट, कॉलेज में अध्ययन करता था. वह खेत-मजदूरों के बीच रह-कर अपने शोध-प्रबंध की विषयवस्तु पाने के लिए इस इलाके में आया था. खेत-मजदूरों पर हो रहे सितम से वह दुखी हो उठा और उसने बंबई के किसी समाचारपत्र को ठाकुर समत सिंह व उसके साथियों द्वारा खेत-मजदूरों के शोषण का ब्योरा लिख भेजा. इसी अपराध के लिए ठाकुर समत सिंह ने उसे पकड़कर अपने खेत में बंद रखा और एक रात जिंदा जला डाला.

चार-पाँच रोज के बाद समाचारपत्रों में खबर छपी कि आजकल इस इलाके में उग्रवादियों का आतंक बढ़ता जा रहा है. खबर के अनुसार उग्रवादियों के समूह

ने पुलिस थाने पर हमला किया था और पुलिस के साथ हुई हाथापाई में चित्तरंजन भट्ट नामक कुख्यात उग्रवादी मारा गया था.

चित्तरंजन के पिता ने यह बताने की कोशिश की कि वह एक सीधा-सादा विद्यार्थी था और उसने ठाकुर की करतूतों को प्रकाश में लाने की कोशिश की थी. परंतु पुलिस थाने में रेकॉर्ड दर्ज था कि चित्तरंजन बहुत खतरनाक मुजरिम था.

तब रामदास ने चित्तरंजन के पिता की मदद करने की कोशिश की थी. उसी समय पहली बार उसे 'उग्रवादी' शब्द सुनने को मिला था.

"भट्ट साहब, उग्रवाद का मतलब क्या होता है ?"

"बेटा, अभी तुम बच्चे हो. तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा."

"फिर भी ?"

"यदि तुम गरीब हो और अपने हक के लिए दावा करने तक की समझ रखते हो तो तुम उग्रवादी हो. इतना सीधा-सा अर्थ है."

रामदास हैरान रह गया.

"बेटा, दरअसल आतंकवादी रास्ते से बगावत करनेवालों के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता था. परंतु अब यह शब्द जमींदारों और उनके साथी पुलिस अधिकारियों के हाथ लग गया है. गुपचुप जुल्म सहते रहो, फिर ठीक है, अन्यथा उग्रवादी बनकर मेरे चित्तरंजन की तरह खत्म हो जाओ."

●

रामदास पुलिस लॉकअप में वापस आया तो फिर एक बार उसकी सहनशक्ति की परीक्षा शुरू हो गयी.

करुणाशंकर जब रामदास को मिलने के लिए थाने में आये तो उन्हें पता चला कि रामदास को शहर के जेलखाने में ले जाया गया है. शहर के जेलखाने गये तो मालूम हुआ कि इस अव्वल दरजे के उग्रवादी को तो कालकोठरी में ही रखना चाहिए, इसलिए उसे नागपुर के कारागार में ले गये हैं.

करुणाशंकर जब लौटे तब खोडीदास आस लगाये उनकी प्रतीक्षा कर रहा था.

"खोडीदास," करुणाशंकर ने कहा, "यह लड़का जितना दिखता था, उतना सीधा नहीं है. पंचनामे में उससे देशी पिस्तौल बरामद हुई है. मजिस्ट्रेट के सामने लाया गया तो उसने कहा था— 'मुझे रिहा करें उतनी ही देर है. ठाकुर समत सिंह को जिंदा नहीं रहने दूँगा !' और कहते हैं कि उसने शहर के कैदखाने को तोड़ने की कोशिश की और एक पहरेदार पर खूनी हमला भी किया."

"मास्टर साहब, ऐसा लगता है जैसे आप कोई कहानी सुना रहे हैं. मेरा बेटा बिलकुल सीधा-सादा है. हाथ में लाठी भी नहीं रखता वह, पिस्तौल कहाँ से रखेगा ? किसी पर खूनी हमला करे ? मेरे तो पल्ले नहीं पड़ रहा. उसके ऊपर मुकदमा दायर कीजिए. उसने खून किया तो फाँसी मिलेगी. उसने पिस्तौल रखी होगी तो कैद मिलेगी. लेकिन उसे ऐसे ही क्यों बंद कर रखा है ?"

"वह उग्रवादी है !" करुणाशंकर ने कहा और अंदर के कक्ष में चले गये.

करुणाशंकर खोडीदास के सामने ही खड़े रहते तो उन्हें दुख होता. रामदास पर जो भी इल्जाम लगाये गये थे उन पर करुणाशंकर को भरोसा नहीं था. परंतु जगमोहनदास ने करुणाशंकर के मुआयने के लिए सारी फाइलें पेश कर दी थीं. करुणाशंकर को ये फाइलें कैसे तैयार होती हैं, इस बारे में कोई ज्ञान न था. उग्रवाद का मतलब भी उसे मालूम न था. गांधीजी की अहिंसा की रट लगाते वे बड़े हुए थे, इसलिए यह शब्द और उसके प्रकट होते अर्थसंकेतों की ओर उनकी कोई सहानुभूति नहीं थी. फिर भी उन्होंने यह कह दिया कि खोडीदास का बेटा उग्रवादी है, इस बात की चुभन उसके दिल में टीस जगाती थी.

"पिताजी, इतने दुखी क्यों हैं ?" भनु ने पूछा.

"भनिया, यह सब क्या हो गया ?"

"किसका ?"

"रामदास को छुड़ाने की कोशिश की तो पता चला कि वह उग्रवादी है."

"पिताजी," भनु जैसे कोई गुप्त बात बता रहा हो, "आपको पता है, उस नामी उग्रवादी चित्तरंजन के बारे में ? उसके साथ रामदास कनु संन्याल से मिला था. और उन्होंने पूरे इलाके के समग्र पुलिस थाने को अपने कब्जे में लेकर खून एवं त्रास का राज्य फैलाने की साजिश की थी. सारे कागजात हाथ लग चुके हैं. अगर वह एक दिन बाद भी पकड़ा गया होता तो ठाकुर समत सिंह और उनके पूरे परिवार की हत्या हो गयी होती !"

करुणाशंकर ने अस्वीकार में सिर हिलाते हुए कहा, "भनिया, मैं चित्तरंजन को भी जानता था, रामदास को भी जानता हूँ. खूनी क्या इतने सीधे और सरल होते हैं ? बात कुछ जँचती नहीं."

"पिताजी, हम नहीं जान सकते. इन उग्रवादियों के बारे में ज्यादा छानबीन करना ठीक नहीं है. कब हमारे घर को जला दें, पता भी न चले !"

•

"मास्टर साहब, आप कह रहे हैं इसलिए मान लेता हूँ कि जगमोहन अच्छा आदमी होगा, लेकिन कल वह हमारे गाँव आया था. आगे-पीछे आठ-दस जीप. जीप में पुलिस-ही-पुलिस. साइरन बजाती जीप आगे और बीच में जगमोहन की गाड़ी यह सब ठाठ-बाट किसके लिए."

"यह ठाठ-बाट नहीं है पटेल, यह तो सारे नेताओं की हत्या करने की साजिश उग्रवादियों ने की है इसलिए इतना खयाल रखना पड़ता है. जगमोहन भाई स्वयं तो सुरक्षा के लिए कोई आदमी साथ में रखना नहीं चाहते. परंतु प्रधानमंत्री का खुद का आदेश है कि उनको साथ में पुलिस रखनी होगी. गुप्तचरों ने जानकारी दी है कि जगमोहन भाई को खतरा है. उन्होंने एक बहुत बड़ी पार्टी का करोड़ों का टेंडर मंजूर नहीं किया है. बड़ी राशि की रिश्वत लेने से इनकार कर दिया है, वह पार्टी किसी भी समय बदला ले, ऐसी संभावना है."

करुणाशंकर जगमोहन के लिए सुरक्षा कवच जैसी बातें फैलाते थे. तब अपनी ही इस भ्रामक आवाज को सुनकर वे भयभीत हो जाते थे. फिर भी स्वयं उनके फैलाये हुए जाल में फँसने के सिवा और कोई रास्ता नजर नहीं आता था. उन्होंने कहा, "पटेल, यह मेरे साथ दूसरी जीप में कौन है. इसे आप जानते हैं ?"

"कौन हैं ?"

"सादे भेस में चार पुलिसमैन हैं. मुझे भी सलाह दी गयी है कि उनको साथ में रखना क्योंकि मुझे भी कई धमकी-भरी चिट्ठियाँ मिली हैं."

पटेल को आश्चर्य हुआ.

"मास्टर साहब, यह कैसा राज ? इतनी सारी पुलिस अगर इतने कम आदमियों की रक्षा के लिए चाहिए तो फिर सारे देश की रक्षा कौन करेगा ? कौन हत्या करनेवाला है आपकी या आपके जगमोहन की ?"

यही प्रश्न करुणाशंकर ने पहले उठाया था. अब उनको उत्तर मिल गया था. ठाकुर समत सिंह ने ही कहा था, "मास्टर के साथ चार आदमियों को भेजो. वे क्या बोलते हैं, क्या करते हैं, उसकी रिपोर्ट मिलती रहे."

यह जानने के बाद करुणाशंकर को अपनी हालत पर तरस आने लगा. अभी कुछ दिन पहले वे स्वयं, जो कुछ भी हो रहा है, उसकी बेहिसाब आलोचना करते थे. अब वे इस पूरे यंत्र का एक हिस्सा बन गये हैं, वे खुद कुछ ही समय पहले पुलिस एवं सुरक्षा करनेवालों का ठाठ देखकर कहते थे, "कौन गोली से उड़ा देनेवाला है इन सबको ? और देखा जाये तो सभी को गोली से उड़ा देना चाहिए." आज खुद उनके इर्दगिर्द सुरक्षा करनेवाले रक्षक खड़े थे. वे इन रक्षकों की कैद में थे. शायद जगमोहन भी ऐसी ही कैद में होगा. राष्ट्र की नेतागिरी ऐसी कैद में है क्या ? तो फिर उन पर पहरा देनेवाले ये तत्व कौन हैं ? उनको वेतन लोगों के द्वारा दिये गये आय-कर से ही मिलता है, फिर भी वे जनता के प्रतिनिधि तो हैं ही नहीं. किसकी तरफ से वे मेरी या जगमोहन की या सारे राष्ट्र की नेतागिरी पर निगरानी रखते हैं ? ठाकुर समत सिंह की ओर से ? इसका मतलब हुआ कि सरदार पटेल ने अभी तक इस देश से देशी रियासतों को नेस्तनाबूत किया ही नहीं. वही ठाकुर, वही राजाओं के नये अवतार जैसे जमींदार एवं श्रीमंत ही राज कर रहे हैं ? और सब उन्हींकी निगरानी के नीचे. पलभर उन्हें यह सब ठाठ-बाट, सारी बादशाही को छोड़छाड़ देने का मन हुआ. उनके बस में होता तो इसी पल वे सबको ठुकरा के चल पड़ते. परंतु लक्ष्मी और भनु की हालत का तो क्या कहना ! जिंदगी में पहली बार यह सब हाथ लगा था. पंछी जाल में फँस जाने के बाद जिस तरह मजबूरी से आकाश की ओर देखता है, ठीक उसी मजबूरी से करुणाशंकर अपने अतीत की ओर देखते रहे — वे जवानी के दिन, वह गांधी, वह जोशीली गांधीवाणी और वही मजबूरन नौकरी करते-करते उन्होंने जो की थीं, वे आजादी की आलोचनाएँ. वे सब सच्चे हैं जिनकी पहले वे आलोचना कर चुके थे, यही बात समझाने के लिए निकले थे करुणाशंकर ! और खुद के शब्द सुनकर तसल्ली मोम की तरह पिघलने लगी थी.

करुणाशंकर अपने शयनकक्ष में बैठे थे. गिनती के बरसों में सब कुछ बदल चुका था. पहले उनका अपना कह सकें, ऐसा एक ही कोना घर में था — उनका पूजाघर. अब घर के ऊपर दो मंजिलें बन चुकी थीं. नीचे का हिस्सा बैठक खंड के तौर पर ही उपयोग में लिया जाता था. पहली मंजिल पर रसोईघर एवं अन्य बैठक खंड थे. दूसरी मंजिल पर तीन से लेकर चार तक शयनकक्ष एवं अतिथिकक्ष का निर्माण किया गया था. इनमें से अपने आगे के शयनकक्ष में ढली हुई आराम कुर्सी पर करुणाशंकर बैठे थे. करुणाशंकर के ठीक सामने एक ड्रेसिंग टेबुल था. पहले ऐसे तीन आईनेवाले टेबुल की वे कल्पना तक नहीं कर सकते थे. लेकिन जिस आर्किटेक्ट ने घर की योजना की थी, उसीने फर्नीचर का भी प्रबंध किया था.

करुणाशंकर अपने सामने के शीशे में अपने तीन प्रतिबिंब देखते रहे. सहसा उन्हें लगा कि उनका अतीत, उनका वर्तमान एवं उनका भविष्य जैसे उनके सामने बैठे हों !

अतीत के करुणाशंकर के सामने एक दृष्टि उठाना भी अच्छा नहीं लगता था. बेबस, बड़बड़ाते, वर्तमान परिस्थितियों के लिए नेताओं को तथा उनके दंभ को गालियाँ देनेवाले करुणाशंकर अब कोई अजनबी लगते थे. बीच में उनकी अभी हाल की मूर्ति दिखाई दे रही थी. सफेद, दूध से सफेद कपड़े, चेहरे पर छायीं हुई सुर्खी, इन दो बातों से वे दस साल छोटे लग रहे थे. और बाद में कोई राज्य के गवर्नर के रूप में वे स्वयं को देख सकते थे. ए. डी. सी. सुरक्षा रक्षक, इंपोर्टेड गाड़ी, परदेसी अतिथियों के साथ सलामी भरता लश्करी बैंड, विशाल राजभवन, अपना ही बगीचा, माली, नौकर, बावर्ची इत्यादि के ठाठ-बाट.

करुणाशंकर के चेहरे पर हलकी मुस्कान उभर आयी,

परंतु अगले ही पल उन्हें लगा जैसे उनकी मुस्कान को कोई एकटक देख रहा है, आर्किटेक्ट ने ड्रेसिंग टेबुल पर गांधीजी की तसवीर रखी थी. गांधीजी की आँखें नीचे की ओर झुकी हुई थीं. करुणाशंकर को लगा कि वे पैनी दृष्टि से उनकी ओर देख रहे हैं, अपने व्यक्तित्व की परतें एक के बाद एक खुलने लगी थीं और जहाँ आखिरी परत खुली कि अपने भीतर भरी हुई शून्यता देखकर करुणाशंकर डर के मारे काँप उठे.

सहसा एक दीपक सुलग उठा. उस दीपक की रोशनी में तीनों प्रतिबिंब मोम के बुत की भाँति पिघलने लगे, स्वयं के रूप को ऐसे पिघलते हुए देखकर करुणाशंकर एक बार फिर चौंक उठे.

ऐसा लगा, जैसे कोई उन्हें कह रहा हो — 'मास्टर, अभी भी तेरे भीतर सत्य, प्रिय जीव है. इस सत्य के दीपक की रोशनी में तेरे भीतर के दंभ के स्वरूपों को मिटा दे. मास्टर, अभी तेरे भीतर सत्य साँस ले रहा है. तेरे भीतर अभी भी सत्य जिंदा है.'

●

"मास्टर, आप बस पंतूजी ही रहे." ऊबकर जगमोहन ने कहा, "आपको कितनी बार कहा कि लड़का उग्रवादी है. आप गांधीजी के साथ भी रह चुके हैं. क्या आपको इतना भी नहीं मालूम कि हिंसा कितनी बुरी बात है !"

"परंतु यह लड़का हिंसक नहीं है. कितना सीधा है वह ! वह तो माँग कर रहा है कि शोषण कम हो."

"शोषण, वेतन आदि शब्दों से उग्रवादी गरीब जनता को उकसाते हैं. आप भी इस भाषा की मोहिनी के असर में आ गये हैं. मास्टर, अब दुनिया बदल चुकी है. यह अंग्रेजों का राज नहीं, हमारा ही राज है. अपने राज के विरुद्ध सत्याग्रह करते हैं कभी ?"

"क्यों नहीं कर सकते ? किसी भी अन्यायी राज के खिलाफ सत्याग्रह किया जा सकता है !" करुणाशंकर ने कहा.

"मास्टर साहब," जरा सम्मान के साथ जगमोहन ने कहा, "आप भोले हैं, आप समझते ही नहीं. यह सब विरोधी दल की साजिशें हैं. उनके बस में हो तो वे मुझे और आपको कच्चा चबा जायें. कुछ समझिए. ये सारी बातें आप जैसे सरल आदमी को भुलावे में डालने के लिए हो रही हैं. मेरी मानें तो आप पक्ष की अंदरूनी व्यवस्था सँभाल लीजिए. इस देश में बहुत कुछ करने के लिए है. अगर पक्ष शक्तिशाली होगा तो सब कुछ हो सकेगा. प्रधानमंत्री अभी तीन दिन पहले ही मुझसे कह रहे थे कि चुनाव के बाद करुणाशंकर को किसी राज्य का गवर्नर बना दें तो कैसा रहेगा ? उस राज्य में जनकल्याण एवं सुख-समृद्धि की योजनाओं पर वे ध्यान भी दे पायेंगे और गांधीवादी गवर्नर हो तो जरा सादापन भी आ सके !"

"मुझे ओहदे..."

"मास्टर साहब, आपको ओहदे नहीं चाहिए यह मैं जानता हूँ ! परंतु पार्टी को आप जैसे लोगों की सेवाओं की जरूरत है. शाला में मास्टर बने रहकर सेवा नहीं हो सकती. मास्टर थे तब आप क्या करते थे ? केवल ऐसी आलोचनाएँ और कुछ भी नहीं. आपके गाँव का काम भी हो पायेगा. यह खोडीदास आपके पास क्यों आया ? आप कुछ कर पा रहे हैं इसीलिए."

"दीवार के साथ सर फोड़ रहा हूँ भाई, यहाँ मेरी तो कोई सुनता नहीं, वरना रामदास को छुड़ा न ले जाता ?"

"रामदास अभी हाल छूट सकता है. लेकिन उसे वचन देना होगा कि वह उग्रवादी प्रवृत्तियों से दूर रहेगा. लेकिन यह तो दीवार से सर टकराना ही है. वह उग्रवादी है इससे इनकार कर देगा. मानेगा ही नहीं."

"मैं अभी मनवाकर आता हूँ. मगर वह कौन से बंदीगृह में है, यही पता नहीं चलता."

"यहीं पर है. आज ही पुलिस तफ्तीश के लिए उसे यहाँ लायी है. अभी यहाँ पर ले आता हूँ. आप दो घंटे तक आराम कीजिए. चाय पानी लीजिए... अरे घोष," जगमोहन ने आवाज दी.

घोष अंदर आया.

"मास्टर साहब को सर्किट हाउस में अच्छा-सा एक रूम देने के लिए कहो. मैं दोपहर चार बजे आऊँगा. पुलिस इंस्पेक्टर को कहना कि आज जिसे लाये हैं उस कैदी को सर्किट हाउस लेकर आये."

"जी साहब."

•

रामदास की आँखें चकरा रही थीं. करुणाशंकर ने कहा, "बेटा, तुम इतना लिख दो कि मैं उग्रवादी प्रवृत्ति में भाग नहीं लूँगा."

"मास्टर साहब, अब आपकी खादी की बुनाई बदल चुकी है. मैं उग्रवादी हूँ ही नहीं. फिर लिखकर देने की बात कहाँ रही ?"

"अगर उग्रवादी नहीं हो तो फिर लिखकर देने में हर्ज ही क्या है ?"

"मुझे चार-छह दिन के लिए छुट्टी दें, उसके बदले में मैं उग्रवादी हूँ, ऐसा प्रमाण अपने हाथों से दे दूँ, ठीक है न ? अब से मैं उग्रवादी प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा, ऐसा लिखकर दे दूँ, तब अब तक मैं ऐसी प्रवृत्तियों में भाग लेता था यही अर्थ हुआ न ? ठीक है न ?"

करुणाशंकर सिर खुजलाते रहे. उन्होंने जगमोहन की ओर देखा. जगमोहन ने धूर्त हँसी हँसते हुए कहा, "मास्टर साहब, देखा ! आपकी तरह मैं भी यही मानता था कि यह लड़का सीधा है. लेकिन उसका रेकॉर्ड देखा, तब कहीं मेरी आँखें खुलीं."

"बदमाश, गरीबों के खून चूसनेवाले ठाकुरों एवं जमींदारों की किस्तों से भवन निर्माण करने के बाद अब मेरे रेकॉर्ड की बातें कर रहा है ! एक बार गरीबों के हाथ में शासन की बागडोर आने दे. इसके बाद तेरा रेकॉर्ड कैसा होता है, वह देखना. फाँसी की सजा भी तुम जैसों के लिए कम रहेगी !"

"देखा न मास्टर साहब, इसके हाथ में सत्ता हो तो इसी वक्त मेरी और आपकी हत्या कर दे. है न पूरा उग्रवादी !"

"उग्रवादी ! हाँ, आप लोगों जैसे अत्याचारी कम हो रहे हों तो मुझे चाहे कुछ भी कहिए, चलेगा."

"भाई रामदास, क्यों जिद कर रहा है ! लिख दे कि मैं उग्रवादी कार्य नहीं करूँगा."

"मास्टर साहब, आपके लिए मेरे हृदय में अब भी आदर है. पर लगता है, ज्यादा दिन रहेगा नहीं. कहा न, आपकी खादी की बुनाई बदल चुकी है." रामदास ने पीछे मुड़कर दूर खड़े पुलिस सब इंस्पेक्टर से कहा, "ले जा मुझे तेरी त्रास कोठरी में और हमेशा की तरह जुल्म के कोड़े बरसाना शुरू कर दे."

फिर अचानक करुणाशंकर के पास जाकर अपने कुर्ते को फाड़कर कहा, "ये मेरे बदन पर कोड़े के निशान देखे ? मैं उग्रवादी हूँ, इतना अदालत में कुबूलूँ

इसके लिए यह त्रास, यह सितम ढा रहे हैं. मैं फाँसी के फंदे पर लटकने की सजा के लिए मेरे दस्तखत देने के लिए तैयार नहीं."

करुणाशंकर रामदास के सुकुमार बदन पर उठे लाल निशान देखकर सहम गये.

"कैदी ने जेलखाना तोड़कर भागने की कोशिश की, उस समय हुई हाथापाई में यह चोट पहुँची है." पुलिस इंस्पेक्टर ने रामदास का हाथ पकड़ते हुए कहा, "रेकॉर्ड पर डॉक्टर का सर्टिफिकेट है."

"रेकार्ड, रेकॉर्ड, रेकॉर्ड, जला दो हमें भी और देश के इन सारे दुश्मनों को !"

इंस्पेक्टर रामदास को हाथ पकड़कर बाहर ले गया. रामदास की आक्रोश-युक्त आवाज सुनाई दे रही थी, "जला दो सारे रेकॉर्डों को."

"देखा ? अगर उसे मिट्टी के तेल का टीन और माचिस दी जाये तो वह आपको और मुझे जिंदा जला दे ऐसा है." जगमोहन ने कहा.

करुणाशंकर की नजर सामने के मानव-समुदाय पर थी. प्रधानमंत्री के साथवाली सभा के बाद इतनी बड़ी सभा उन्होंने कभी नहीं देखी थी. उनके छोटे से गाँव में इतने लोग जमा हों यह भी एक विरल घटना थी. आज तक वे चुनाव के लिए आयोजित सभाओं में जाते ही न थे. चुनाव में किसीको भी अपना मत नहीं देना चाहिए, ऐसी सलाह इसके पहले वे देते थे. अब एकदम ही वे इस सभा के मंच पर आ गये थे.

सभा की शुरुआत के पहले ही कहीं जरा-सी गड़बड़ी हुई थी. कुछ युवक काली पताकाएँ फहरा रहे थे. सादे भेस में पुलिस उनको तुरंत पकड़कर सभास्थल से बाहर ले गयी थी. करुणाशंकर के मन में घमासान मच रहा था. अपना स्थान इस मंच पर है कि उन काली पताका लिये हुए युवकों के साथ है, यह बात करुणाशंकर तय नहीं कर पा रहे थे. वे युवक दंभ के खिलाफ, फरेब के खिलाफ एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ सूत्रोच्चार कर रहे थे. इनमें से कुछेक तो जो उनके पास शाला में पढ़ चुके थे, वे थे. शायद उन्होंने इन लड़कों को 'यह सब ठीक से नहीं चल रहा है' ऐसा सिखाया होगा. उस समय करुणाशंकर मास्टर के साथ बैठकर देश की परिस्थिति की चर्चा करना युवकगण खूब पसंद करते थे. अब ये सारे युवक उनके पास आते नहीं थे.

करुणाशंकर ने पहली बार चुनाव सभा में भाषण दिया. उन्होंने देश की गरीबी के साथ आरंभ किया. जगमोहन जैसे निष्ठावान् आदमी कैसे गरीबी हटाने की कोशिश कर रहे हैं, इसके बारे में कहा, आक्षेप करना सरल है लेकिन कार्य करना मुश्किल है, यह समझाया. किस प्रकार से जगमोहन ने अपनी आँखों के सामने लाखों रुपये की रिश्वत को अस्वीकार किया था, यह बात कही.

जगमोहन सभा में बीच में बैठा था. अपनी प्रशस्ति के वचन सुन रहा था. उसने देखा कि करुणाशंकर के शब्द लोगों के हृदय तक असर करते हैं, उसके चुनाव एजेंट ने कहा कि करुणाशंकर की छवि सबसे ज्यादा असरदार है. खुद

जगमोहन ने देखा कि अन्य वक्ताओं के शब्द लोगों तक पहुँचते नहीं थे. परंतु करुणाशंकर जो कुछ भी कहते थे, उनका प्रभाव देखा जा सकता था. स्वयं इसके पहले जनसमूह को एकत्रित करने के लिए सौ-सौ ट्रक भरकर लोगों को एक गाँव से दूसरे गाँव भेजता था. करुणाशंकर की प्रतिभा ने इस व्यय की बचत कर दी थी.

०

गुमान सिंह ने कहा, "शो !"

सोबत ने एक के बाद एक तीन पत्ते दिखाये, "तीन गुलाम !".

"देख तो सही !" कहकर कासम ने अपने पत्ते दिखाये, "तीन बेगमें !"

"अब जिगर थाम के बैठो मेरी बारी आयी." गुमान सिंह ने कहा और पहला पत्ता दिखाया. वह था पान का बादशाह. दूसरा पत्ता था चिड़ी का बादशाह और तीसरा था ईंट का बादशाह.

दाँव की सारी राशि गुमान सिंह ने दो हाथों से अपनी ओर समेट ली.

"गुमान, तुम पत्ते जमा कर खेलते हो."

"अल्लाह कसम, अगर पत्ते जमाये हुए न हों तो ऐसा हो ही नहीं सकता !"

"मेरी नीयत पर संदेह कर रहे हैं ?" गुमान की आवाज ऊँची हुई.

सोबत जरा ढीला पड़ गया. कासम ने कहा, "गुमान, पत्ते किस प्रकार से जमाये थे ?"

गुमान ने पत्ते फेंकते हुए कहा, "हार जाने पर लड़कियों की तरह बहानेबाजी करते हो तो तीन पत्ती खेलना ही नहीं चाहिए."

कासम उठ बैठा. उसका हाथ कमरबंद पर रखी कटार पर गया. गुमान ने भी अपने कमरबंद पर हाथ रखा. तभी सोबत बीच में आकर खड़ा रह गया, "यह क्या कर रहा है कासम ? शर्म नहीं आती ? और गुमान, दोस्ती में कपट थोड़े ही होता है !"

गुमान और कासम दोनों फिर से बैठ गये. पर दोनों की आँखों से अंगारे बरस रहे थे.

अचानक पीछे से आवाज आयी, "झगड़िए ! काट डालिए एक-दूसरे को. गुमान को सिवा कासम के कौन मार सकता है ? है किसीकी हिम्मत जो कासम के सामने आँख उठाकर भी देखे ? हाँ, गुमान हाथ उठाये तो अलग बात है."

तीनों ने पीछे देखा, ठाकुर समत सिंह खड़े थे.

"ठाकुर आप ?"

ठाकुर ने हँसते हुए कहा, "शेर आपस में कैसे कट मरते हैं, यह देखने के लिए निकला था."

"ऐसा क्यों कह रहे हैं ?"

"मूर्खों के सरदार, इस बाजी में ज्यादा-से-ज्यादा क्या मिल जायेगा ? चुनाव की तारीख तय हो गयी है, यह नहीं मालूम ?"

"मालूम है."

"इस बार कुछ भी हाथ आनेवाला नहीं है."

"जगमोहन की तकदीर अच्छी है. वो मास्टर उसकी तरफ जो है."

"तुम सब तीन पत्ती खेलते रहो. तुम सबको इन पत्तों की तरह जगमोहन ने एक ही फूँक से हवा में उड़ा दिया !"

गुमान ने सोबत की ओर देखा. फिर दोनों ने कासम की ओर.

"कासम, कुछ बात समझ में आयी ?"

"कुछ-कुछ आ रही है."

"मतदान-केंद्र पर कब्जा करने के लिए हमारी ही जरूरत पड़नेवाली है न !" गुमान ने कहा.

"वे दिन गये गुमान. अब तो मास्टर है, इसलिए जगमोहन की चारों उँगलियाँ घी में हैं. मेरी या तुम्हारी उसे जरूरत ही क्या है ?"

"आपके बगैर थोड़े ही चलनेवाला है. ठाकुर साहब ! आपके इस इलाके के सारे आदिवासी आपके इशारे पर ही तो चलते हैं !" सोबत ने कहा.

"सोबत, अब तो हर जगह मास्टर का ही नाम है."

"चुनाव सर पर है और जगमोहन हमारे चक्कर न काटे यह बात कुछ जमती नहीं."

"आपकी बात सही है !" गुमान ने कहा, "लेकिन करें भी तो क्या ? लगता है, उसे हमारी जरूरत नहीं रही."

"ऐसा कुछ करो कि उसे हमारी जरूरत पड़े !"

"क्या ?"

"कल अवऊ गाँव में उसकी सभा है."

"फिर ?"

"सभा से पहले रोशनी का प्रबंध करो." ठाकुर ने कहा.

तीनों ठहाका लगाकर हँस पड़े.

ठाकुर ने एक गड्डी गुमान की ओर फेंकी. गुमान ने उसे बीच में ही पकड़ ली.

"तीनों आपस में बाँट लेना. तीन पत्ती में इतने नहीं मिलेंगे. बाकी के रोशनी के बाद."

अवऊ में इतनी विशाल सभा पहली बार हो रही थी. गाँव के बाहर एक शामियाना तैयार किया जा रहा था. फूलों की मालाएँ गूँथी जा रही थीं.

घोड़ों पर सवार गुमान और सोबत वहीं रुक गये.

"क्या है रे ?"

"मंत्री साहब आनेवाले हैं !"

"तो यह सब क्यों ?"

"आदेश है !"

"किसका ?"

"सरकार मालिक का !"

"क्या ?"

"मंत्री साहब की आवभगत करना. सरकार मालिक ने पहले से पैसा भी भेज दिया है."

"कितने मार लिये उसमें से ?"

"ज्यादा नहीं. पर जिसके हाथ लगे उसकी जेब में कुछ तो जायेगा न ?"

"कब आनेवाले हैं तेरे मंत्री साहब ?"

"शाम तक आयेंगे."

"ठीक है, तो फिर कीजिए आवभगत !" गुमान और सोबत वहाँ से घोड़े दौड़ाते निकल पड़े.

•

शाम होते-होते अवऊ में २५-३० ट्रक आकर रुके. उनमें से बड़ी संख्या में लोग उतरे. इतने सारे लोग सभा में आये हैं, इस बात पर गाँव के लोगों को बड़ा आश्चर्य हो रहा था.

शाम तक पूरा शामियाना ठसाठस भर गया था. छह बजे जगमोहन और मास्टर साहब आनेवाले थे. परंतु सात बजे संदेश आया कि जीप पासवाले गाँव से निकल चुकी है, अभी पहुँच जायेगी. संदेश लेकर आयी गाड़ी में तीन-चार युवक थे. इनमें से एक ने लोकगीत गाकर लोगों को आकर्षित किया. दूसरे ने प्रवचन से श्रोताओं का ध्यान बाँटा.

आठ बजे के करीब सायरन की आवाज सुनाई दी. दो-तीन जीपें आयीं, जिनमें से पुलिस के आदमी उतरे. पीछे दो मोटरसाइकिलें थीं और फिर एक सजी हुई जीप, जिसके पीछे एक और पुलिस जीप.

"है न ठाठ ? अवऊ गाँव में इतनी पुलिस देखी थी कभी ?" एक वृद्ध ने कहा. सजी हुई जीप से जगमोहन उतरा. उसे देखते ही तालियों की गड़गड़ाहट हुई. 'जगमोहन जिंदाबाद' के नारे से आकाश गूँज उठा.

इसके बाद करुणाशंकर मास्टर एक आदमी के सहारे से बाहर निकले.

"यह कौन ?" किसीने पूछा.

"यह नया गांधी है !"

"गांधी ?"

"हाँ, जगमोहन के साथ ही घूमता है !"

"गांधी महात्मा की जय !" किसीने नारा लगाया. पूरा समुदाय गांधी महात्मा की जय के नारे लगाने लगा.

जगमोहन और करुणाशंकर मंच पर आये. 'हमारे यह नेता...' से जगमोहन का परिचय कराता हुआ लंबा-चौड़ा भाषण हुआ. 'अगर आज गांधीजी होते तो ऐसे होते' शब्दों से शुरू करके करुणाशंकर का परिचय दिया गया. फिर जगमोहन को भाषण देने के लिए कहा गया.

"आज हमारा देश आग में झुलस रहा है... सीमाएँ सुलग रही हैं..." जगमोहन ने अपना वक्तव्य शुरू किया ही था कि सहसा उसका ध्यान दूर दिख रहे शोलों की ओर गया. उसकी चीख निकल गयी, "आग !" स्थिति का मंत्री साहब यथार्थ वर्णन कर रहे हैं, यह सोचकर कुछ लोगों ने तालियाँ बजायीं. "मैं देश की बात नहीं कर रहा. गाँव के बारे में कह रहा हूँ... सामने आग लगी है !"

"आग !..." जगमोहन के पास बैठे सोमु ने कहा.

सब चौंके, "कहाँ है आग !"

"गाँव में आग लगी है !"

"गाँव में !" सबको अपना घर याद आया. पल-दो पल में सभा बिखर गयी.

जगमोहन ने मोटरसाइकिल पर आये एक पुलिस अधिकारी को जाँच के लिए भेजा.

कुछ देर के बाद लौटकर उसने बताया— गाँव के हरिजनों के मोहल्ले में आग लगायी गयी है. दो आदमी जिंदा जल गये.

करुणाशंकर हक्के-बक्के रह गये.

जगमोहन सोचने लगा, यह काम विरोधी दल का नहीं. उनके सामर्थ्य के बाहर की बात है. ठाकुर कुपित हुआ लगता है !

"साहब, दो अजनबी आदमियों ने हरिजन मोहल्ले में आकर घास के जलते पूले फेंके. बड़े सभा में थे. बच्चे एवं बूढ़े जितना बचा पाये उतना बचा के निकल गये. करीब दस जख्मी हुए हैं..."

०

करुणाशंकर को लगा जैसे पूरी दुनिया बदल गयी हो. अब खुद उन्हें भी महसूस होने लगा था कि उनमें गांधी का कोई अंश प्रविष्ट हो गया है. किसी महत्वपूर्ण मुलाकाती के मिलने आने पर वे कोने में टेबुल पर 'शोपीस' की भाँति पड़ा चरखा लेकर कातने बैठ जाते. बातें करते समय उनके मुँह से अपने-आप बापू या भगवद्गीता की बात निकल आती. "सरकार चाहे उतना अच्छा काम नहीं कर रही, परंतु इसके सिवा और कोई चारा भी तो नहीं है." वे कहते थे, कहते ही नहीं थे, ऐसा मानने भी लगे थे.

हरिजन बस्ती में लगी आग के बाद सरकार ने मृतकों के लिए एक हजार और घायलों के लिए पाँच सौ रुपयों की राहत की घोषणा की तो करुणाशंकर चौंक पड़े और पूछ बैठे, "आदमी की जिंदगी की यही कीमत है क्या ?" लेकिन बाद में जब डॉक्टर का प्रमाणपत्र लेकर उस राशि को पाने के लिए लगी कतार देखी तो

वे ज्यादा चौंके. जगमोहन ने कतार दिखाते हुए कहा, "देखा, इस आग की वजह से कितने को फायदा हुआ !"

"अरे, ऐसा कुछ होता है तो कमाई करने का बहाना मिल जाता है. उत्तरप्रदेश में दस हरिजनों को जला दिया गया तो उस घटना की वजह से दो सौ परिवारों को फायदा हो गया !" जगमोहन के सहायक घोष ने 'हाँ' में 'हाँ' मिलाते हुए कहा. फिर उसने मास्टर करुणाशंकर से कहा, "मास्टर साहब, अब चुनाव सिर पर है, चार दिन की चाँदनी है. अक्ल ठिकाने हो तो दो पीढ़ियों का बंदोबस्त कर लीजिए, कौन जानता है दूसरा चुनाव आये भी या नहीं ! अगर आ भी जाये तो आपका जो स्थान अभी है वह उस समय हो न हो !"

आग लगे, आदमी जले-मरे, यह सब एक खेल का ही भाग था. जैसे·भूकंप हो या अतिवृष्टि हो. सब कुछ निस्सहाय देखना पड़ता है.

करुणाशंकर शिक्षक थे तो कहते थे कि ईश्वर के स्तर तक मनुष्य शायद ही कभी आता है. जब स्वामी विवेकानंद या महात्मा गांधी जैसा मानव जन्म लेता है तो यह चमत्कार होता है. तब मनुष्य और भगवान् एक ही स्तर पर होते हैं. अब शायद वे फिर से पढ़ाने जाते तो कहते कि मनुष्य भी ईश्वर के बराबर सर्वशक्तिमान् बनता है, पर इसके लिए उसका नेता होना जरूरी है.

जैसे-जैसे चुनाव का वातावरण रंग जमाता गया, करुणाशंकर को यह सत्य समझ में आने लगा. उनका यह भ्रम टूट गया कि मनुष्य का जीवन एवं मृत्यु केवल ईश्वर के अधीन है.

जगमोहन को तो आग देखते ही पूरी साजिश समझ में आ गयी थी. फिर भी दूसरे दिन ठाकुर समत सिंह ने हरिजन-बस्ती में जाकर सेवा-कार्य शुरू कर दिया और गरीबों के सहायक होने के जगमोहन के दावे को मिथ्या बताया. वह समत सिंह के संपर्क के बारे में कुछ सोचे, कोई सुरक्षित एवं ठोस प्रबंध करे, उससे पहले ही गरीबों पर पुलिस-दमन एवं जुल्म की घटनाएँ समाचारपत्रों में प्रकाशित हो गयीं. विरोधी दल के उम्मीदवार ने न केवल जगमोहन पर अपितु करुणाशंकर पर भी इल्जाम के छींटे उड़ाना शुरू कर दिया. खबरों के अनुसार करुणाशंकर मास्टर की उपस्थिति में ही हरिजन-बस्ती में आग लगायी गयी थी और मास्टर ने इन दुखी लोगों को कहा था कि "घर खुल्ले छोड़कर चुनाव-सभा में आने के लिए आपको किसने कहा था ?" वे समाचार पढ़कर भौचक्के रह गये और तुरंत सर्किट हाउस लपके.

•

"ऐसी बेकार बात लेकर आप इतने परेशान हो गये ? आग लगी है तो उसे बुझाने की कोशिश क्यों नहीं करते ! आपको किसने कहा था जो यहाँ चले आये ?"

"परंतु भाई, जगमोहन भाई..."

"मुझे फुर्सत नहीं. मुझे केवल आग बुझानी है. अंदर कमरे में समत सिंह बैठे हैं."

"उसीने..."

"उसने जो भी किया हो. लेकिन चुनाव में आप नहीं होंगे तो चलेगा, उसके बगैर नहीं चलेगा."

करुणाशंकर फिर एक बार चौंक पड़े, "लेकिन आपने समाचारपत्र पढ़ा !"

"हाँ पढ़ा, आप जो करेंगे वह समाचारपत्र में तो छपेगा ही न ?"

"जगमोहन, आप तो साथ में ही थे. आप कहते हैं कि..."

"मैं साथ में था और कह रहा हूँ— समाचारपत्रवाले क्या करते ? आग लगे तो वृत्तांत छापे बगैर वे कैसे रह सकते हैं ?"

करुणाशंकर आँखें फाड़कर जगमोहन की ओर देखते रहे.

"मास्टर का खयाल रखना. ठाकुर से निपटने के बाद मिलता हूँ." कहकर जगमोहन अंदर गया.

करुणाशंकर जड़वत् हो गये थे. अब यहाँ रहकर क्या करना है, ऐसा सोचकर घर जाने के लिए खड़े हुए कि घोष सामने आ खड़ा हुआ.

"मास्टर साहब, ऐसे ही जाते हैं भला ! चलिए, कुछ भोजन करके ही जाइए."

"मुझे भोजन की आवश्यकता नहीं."

"फिर चाय-पानी लीजिए. आपको शराब के लिए तो कह नहीं सकते."

"मतलब ?"

"इतने दिनों से चुनाव में घूम रहे हैं और आपको शराब के बारे में पता नहीं ?" अपने टेबुल के नीचे से गिलास निकालकर शराब की चुस्की लेते हुए घोष ने कहा, "शराब का मतलब है यह..."

"मुझे यहाँ से जाने दे."

"मास्टर साहब, भोजन करना है तो भोजन लीजिए. चाय पीना चाहें तो चाय लीजिए."

करुणाशंकर आँखें फाड़कर देखते रहे, "नहीं भाई, मेरा पीछा छोड़ !"

"आपका पीछा तो नहीं छोड़ूँगा. जाते-जाते साहब क्या कह गये थे, यह नहीं सुना ?"

"क्या ?"

"ठाकुर साहब के साथ वे जब तक बात कर न लें, तब तक आपको यहीं पर रहना है."

"अगर मैं जाना चाहूँ तो ?"

"साहब का आदेश है ! लक्ष्मी घर आ रही है तो उसका स्वागत करने के बदले आप बगलें झाँकने लग जाते हैं !"

"क्या मतलब ?"

"देखिए परसों आग लगी थी न ?"

"हाँ !"

"आपने कुछ ऐसा-वैसा कहकर हरिजनों के दिल को ठेस पहुँचायी, यह बात भी समाचारपत्रों में छपी थी न ?"

"हाँ, पर यह तो बिलकुल गलत है."

"यह बात आपको, साहब को और ठाकुर को एक साथ मिलकर पत्रकारों को समझानी चाहिए. कल के समाचारपत्रों में सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा."

"ठाकुर के साथ ? उसने ही तो आग लगवायी थी."

"मास्टर साहब," घोष ने धीमी आवाज में कहा, "मुँह सँभालकर बात कीजिए. अगर ऐसा कुछ कह दिया तो आप आग लगाने की साजिश से जोड़ दिये जायेंगे."

"मैं ठाकुर के साथ एक मंच पर नहीं बैठूँगा."

"मास्टर, आपके हित की एक बात आपको बताऊँ ?"

"बता !"

"देखिए, फिलहाल कोई ऊधम नहीं मचाना. साहब जैसा कहें वैसा करना. ठाकुर के साथ बैर मोल लेने में कोई फायदा नहीं. आपका भनु आपको प्यारा है कि नहीं ?"

करुणाशंकर सहम उठे, "क्या मतलब ?"

"महात्मा गांधी के नाम से सब कुछ चलता है, परंतु गांधी होने में क्या रखा है ? भनु की जिंदगी बनानी है या उसका नामोनिशान मिटा देना है, यह इस पर निर्भर है कि गांधी महात्मा का नाम आप किस प्रकार ले रहे हैं."

करुणाशंकर बैठ गये. जो कुछ भी कहा जा रहा था जैसे कानों तक जाता ही न था. उनकी नजर के सामने एक तरफ हरिजन-बस्ती की आग के शोले थे, तो दूसरी तरफ भनु का चेहरा. वह आज के युवा-पक्ष के नेता भानुप्रसाद का चेहरा न था, मैले-कुचैले बस्ते के साथ शाला की ओर जाते भनु का था. लक्ष्मी का फटी-पुरानी साड़ी में वह निस्तेज चेहरा उन्हें याद आ रहा था. जब तक इस चक्र में नहीं फँसे थे तब तक उनके आसपास दारिद्र्य का कवच था. उस स्थिति को कोई उनसे छीन नहीं सकता था. और ऐसे प्रभावहीन पोथी पंडित की कुछ पढ़े-लिखे लोगों के बीच आलोचना की परवाह किसीको भी न थी.

अब करुणाशंकर रास्ते पर चलें और कोई उन्हें पहचान न पाये यह संभव नहीं था. उनकी स्वच्छ प्रतिमा का राजकीय उपयोग शुरू हो चुका था. स्वच्छ कपड़ों को ज्यादा-से-ज्यादा मलिन किया जा सकता है, यही बात शायद राजनीतिज्ञ जानते होंगे. इसीलिए वे करुणाशंकर को उनके सुरक्षा-कवच में से, दारिद्र्य से, बाहर खींच निकालते हैं. एक बार ब्राह्मण का भेष धारण करके कर्ण के ये कवच-कुंडल अगर इंद्र ले जाते हैं, तो वह अभेद्य नहीं रह जाता. उसके व्यक्तित्व में कहीं से भी छेद किया जा सकता है. करुणाशंकर भी इंद्र के हाथ में कवच-कुंडल धर देनेवाले कर्ण

की निस्सहाय स्थिति का अनुभव कर रहे थे. अब उन पर कोई भी हमला कर सकता था. कहीं से भी हमला कर सकता था.

०

दूसरे दिन के समाचारपत्र में एक दिलचस्प खबर थी — ठाकुर समत सिंह को पूरा यकीन है कि करुणाशंकर जैसे गांधी-अवतार एवं जगमोहन जैसे सिद्धांतनिष्ठ राजपुरुष को बदनाम करने के लिए विरोधी पक्ष ने साजिश की थी. इस साजिश में साथ देने के लिए विरोधी दल ने समत सिंह के यहाँ काम करनेवाले गुमान सिंह एवं सोबत सिंह से संपर्क किया था. पर उन्होंने ऐसे गंदे कार्य में साथ देने से इनकार कर दिया और समत सिंह को सारी बात बतायी. अभी चुनाव के मौके पर किसी जिम्मेदार नेता की गिरफ्तारी से विरोधी पक्ष को लगेगा कि शासक पक्ष ने अवसर का नाजायज फायदा उठाया, इसलिए पुलिस फिलहाल सारे सबूत एकत्र कर रही है. चुनाव हो जाने के पश्चात् सनसनीखेज गिरफ्तारियाँ होने की संभावना है. विरोधी दल की साजिश तो यहाँ तक थी कि जब करुणाशंकर और जगमोहन आग का अवलोकन करने जायें तो अवसर देख के उन्हें आग में झोंक दिया जाये. परंतु करुणाशंकर के तप के बल से विरोधी पक्ष अपनी साजिश में कामयाब नहीं हो पाया. गांधी का तप और गांधी के आशीर्वाद ने यह चमत्कार दिखाया, ऐसी बात भी कुछ समाचारपत्रों में थी. साथ ही चित्र भी थे, जिनमें समत सिंह करुणाशंकर को प्रणाम कर आशीर्वाद पा रहे थे और जगमोहन मंद-मंद मुस्कराते हुए यह देख रहे थे.

उस दिन करुणाशंकर सहकारी बैंक की मीटिंग में गये. एक प्रशंसक ने उनकी गाड़ी रोककर उनके चरणस्पर्श करके उनको फूलमाला पहनायी और अपनी सारी बचत, दो सौ तीन रुपये पचहत्तर पैसे, करुणाशंकर के हाथ में रखकर कहा, "गरीबों के लिए इन रुपयों का उपयोग कीजिए. आप जैसे तपस्वी के माध्यम से दिये गये दान का बदला भगवान् मुझे कई गुना दे देगा."

चुनाव-सभा के मंच पर समत सिंह और करुणाशंकर को एक साथ देखकर हजारों लोगों ने तालियाँ बजायीं. करुणाशंकर के नाम पर दस-बारह हजार लोग तो इकट्ठे हो ही जायेंगे, यह तसल्ली होने पर भी समत सिंह ने गुमान, सोबत और कासम को एक-एक हजार श्रोताओं का प्रबंध करने के लिए पंद्रह हजार रुपये और ट्रकें दी थीं. ये तीन हजार आदमी हर जगह से व्यवस्थित रूप से जिस प्रकार तालियाँ बजाते थे, उससे अन्य लोगों को प्रोत्साहन मिलता था.

करुणाशंकर बोलने के लिए उठे तो काफी देर तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही. इतनी सारी तालियों का नशा झेलना असहनीय था. उन्होंने बोलना आरंभ किया. अपने वक्तव्य में उन्होंने ठाकुर की निःस्वार्थ भावना को, जगमोहन की सेवा-भावना को और पार्टी द्वारा गरीबों के उद्धार के लिए किये जा रहे कार्यों को जिस प्रकार व्यक्त किया, उसे सुनकर सभी को यकीन हो गया कि यह दुनिया केवल जगमोहन जैसे सत्यप्रिय राजपुरुषों के बल पर टिकी हुई है. जालिम जमींदार के

रूप में समत सिंह की जो ख्याति है, वह कुछ शत्रुओं द्वारा किया गया प्रचार मात्र है. करुणाशंकर का प्रवचन खत्म हुआ तो किसीको भी इस नये गांधी के बारे में संदेह नहीं रहा था.

करुणाशंकर अपनी गाड़ी में बैठने जा रहे थे तो किसी पागल आदमी ने आकर पूछा, "मास्टर, मेरे राम का क्या हुआ ?" पुलिस ने उसे पकड़ लिया था. उसके पास से एक छुरी मिली थी. उस पागल का दावा था कि उसने यह छुरी मेले से सवा रुपया देकर घर की आवश्यकता के लिए खरीदी थी. परंतु पुलिस का कहना था कि उस छुरी की दो इंच की धार किसी भी आदमी के मर्मस्थान पर लगे तो घातक हो सकती है.

जिस तेजी से घटनाएँ घट रही थीं, उससे करुणाशंकर स्तब्ध हो गये थे. उनका दिमाग काम नहीं कर रहा था. तालियों का नशा उनके सर पर चढ़ा था. वे चलते थे तो गांधीजी की तरह चलते थे। चिंतन करते थे और बोलते थे तो गांधीजी की वाणी एवं आचरण को याद करके अमल में लाने की कोशिश करते थे. गांधीजी का बोलना, चलना यह सब वे सोते समय याद करते थे. गीता के श्लोकों और गांधीजी की प्रार्थना सभा के वाक्यों को याद करते थे.

o

"भानुप्रसाद," जगमोहन ने कहा, "आप तो जानते ही हैं..."

"साहब, आप रहने दें, मैं उसके साथ बात करता हूँ," ठाकुर समत सिंह ने कहा.

बाद में ठाकुर ने कहा, "भनु, मुश्किल से दो पैसे हाथ लगे हैं, किसकी मेहरबानी से, पता है न ?"

भनु उलझन में फँस गया, जगमोहन का नाम दे, समत सिंह का या पिताजी का— वह तय नहीं कर पाया. वह कुछ बोल न पाया और बौखला गया.

"भनु, यह जगमोहन साहब बहुत उदार हैं..."

"हाँ, ठाकुर साहब," भनु अब समझ गया, "उन्होंने बस्ता दिलवाया, उसीसे तो संबंधों की शुरुआत हुई."

"दो शब्दों में कहूँ तो, भनु तुम्हारें और तुम्हारे बाप के पास आज जो कुछ भी है, वह जगमोहन साहब की मेहरबानी है."

"हाँ, उन्होंने बस्ता दिलवाया तब से..."

"बस्ते की बात छोड़. बस्ता दिलवाया तब से तुमने पढ़ना छोड़ दिया. लेकिन अभी मत देने के काबिल उम्र नहीं हुई और लोगों में तेरा नाम हो गया है. मूँछ भी तो नहीं उगी और तू मूँछों पर हाथ फेरने लगा है. देख, तुझे अपना भविष्य सुधारना है तो मास्टर को कह देना कि कुछ सुनी-अनसुनी करना सीख लें. हर जगह महल खड़े नहीं कर सकते, इसलिए जितने हैं उतने महल गिराना उचित नहीं है. झोंपड़े जलाकर भी कभी रास्ता बनाना पड़ता है."

भनु के पल्ले पड़ने लगी बात कुछ-कुछ.

"भानुप्रसाद, अब चुनाव में पंद्रह दिन रह गये हैं, तुझे करुणाशंकर को सँभाल लेना होगा."

"आप बेफिक्र रहिए साहब !"

"हम तो बेफिक्र ही हैं भनु, परंतु यदि मास्टर गलती से भी हमारे बीच में आ गये तो तुझे फिक्र करनी पड़ेगी."

"आप जैसे महारथी मौजूद हैं, फिर मुझे फिक्र किस बात की ? अपनी फिक्र भी मैंने आपके हवाले कर दी है."

"बहुत अच्छे, और तू चुनाव का कार्य कर रहा है न ?"

"हाँ !"

"देखना, पार्टी की और जगमोहन की आबरू तेरे हाथ में है."

"मैं तो बहुत छोटा हूँ..."

"यह तो चुनाव की राजनीति है. यहाँ गधे की भी जरूरत रहती है," ठाकुर ने कहा और बाद में एक छोटा सा पोर्टफोलियो भनु के हाथ में थमाया, "इन्हें सम्हालने जितना समझदार तो है न ?"

भनु ने पोर्टफोलियो खोलकर देखा, सौ-सौ के नोटों के कुछ पुलिंदे थे. उसके चेहरे का रंग बदल गया.

"ठाकुर साहब, आपके आशीर्वाद से आप जो कहें, सँभाल सकता हूँ. पर इसका उपयोग कैसे करना है ?"

"साहब को चुनाव में जिताना है, तुझसे कोई हिसाब नहीं चाहते. जिले से सौ-सौ रुपये एकत्र करके तुमने पार्टी को पहुँचाये हैं, केवल इस आशय से इस कागज पर दस्तखत कर दो."

"परंतु यह तो..."

"अरे मूर्ख, यह तो तेरे उपयोग के लिए कुछ हजार हैं. लाख रुपये तूने लोगों में कूपन बाँटकर इकट्ठे किये थे और साहब को दे भी दिये हैं. पार्टी के लिए व्यय किये जा रहे पैसों का हिसाब मिलाने में इसका उपयोग होगा."

भनु के पल्ले कुछ नहीं पड़ा. फिर भी उसे लगा कि इसमें समझने जैसा क्या है ! उसने आँखें बंद करके ही दस्तखत कर दिये और कहा, "ठाकुर साहब, कुछ और कागजात हैं जिन पर दस्तखत करने हैं ?"

ठाकुर हँसा, "वाह भनिया, तू बड़ा चालाक हो गया है. अपने बाप को तू ही ठिकाने पर लायेगा. तू भी कभी साहब की गद्दी पर बैठना चाहेगा न ?"

भीतर से भनु के दिल में लड्डू फूट रहे थे, फिर भी उसने अपने को संयत करके कहा, "अरे, इसके लिए पिछले जन्मों के पुण्य चाहिए. साहब की सेवा कर पाऊँ तो भी गनीमत है. ठीक है, फिर चलूँ मैं ?"

भनु के जाने पर ठाकुर ने कहा, "बदमाश, अभी से भराडी हो गया !"

●

करुणाशंकर ने अखबार देखा तो उनकी आँखें खुली रह गयीं. अखबार में उनकी तसवीरें तो अकसर आती थीं. पर आज तो भनु प्रथम पन्ने पर अपना रौब जमा रहा था ! वह झुककर एक थैली जगमोहनदास को दे रहा था. साथ में पार्टी के दो-तीन साथी भी थे.

समाचार के अनुसार भानुप्रसाद ने पाँच-पाँच रुपये के कूपन बाँटने के लिए पूरे जिले में पदयात्रा की थी और हर एक द्वार खटखटाकर काफी राशि एकत्र की थी. इसमें से एक लाख की प्रथम किस्त उसने राज्य के प्रभावशाली मंत्री जगमोहनदास को समर्पित की थी.

"अरे ओ भनिया," करुणाशंकर ने पुकारा, "तुमने तो एंबेसेडर या जीप के नीचे कभी पाँव नहीं रखा. पैदल घूम-फिरकर रुपये कब इकट्ठे किये ?"

"पिताजी, आप भाषण देने जाते थे या सहकारी बैंक का कार्य करते थे तो मैं एंबेसेडर से उतरकर घर-घर ये पैसे इकट्ठे करता था."

"भनु, मैं यह बात नहीं मानता."

"बहुत सी बातें ऐसी हैं जो आप नहीं मानते. आप यह कहाँ मानते हैं कि रामदास की करतूत ही ऐसी है कि उसे जेल भेजना पड़ा ! ठाकुर समत सिंह की बात आपको कहाँ ठीक लगती है ? वह शोषण करनेवाला नहीं है, पाँच सौ गरीब परिवार का अन्नदाता है."

करुणाशंकर इनकार में सिर हिलाते रहे.

"आप तो यह भी नहीं मानेंगे कि कुछ लोगों को पिछड़े हुए रखना ही उचित है. आप अगर उनको बढ़ावा देंगे तो फिर ब्राह्मण-बनिये को कौन पूछेगा ? पिताजी, गांधीजी की बातें व्यवहार में न लाइए. आप भाषण दे रहे हों तब ये बातें भली लगती हैं. लेकिन गांधी का नाम लेकर गहरे कुएँ में डूब जाना उचित नहीं. यह तो मेहरबानी है जगमोहनदास की कि जिसने रस्सी डालकर आपको, मुझे और माँ को कुएँ से बाहर निकाला."

"भनु, वही जगमोहन हमें फिर से कुएँ में डाल दे तो ? मैं फिर से कड़ी मेहनत करके बच्चों को गणित पढ़ाने में शर्म महसूस नहीं करूँगा."

"मेरा क्या होगा ?"

"तेरा ? क्यों, तुझे क्या तकलीफ है ? तू राजनीति में रह सकता है. मैं यह महल छोड़ दूँगा."

"पिताजी, मैं आपके बेटे की हैसियत से प्रगति कर सकता हूँ. बगैर आपके मेरी क्या गिनती ?"

"ये सारे रास्ते मुझे अच्छे नहीं लगते."

"पिताजी, देश में सुख का सूर्योदय हो, यही तो आप चाहते हैं न ?"

"हाँ."

"बस, तो फिर घर से आरंभ कीजिए. अपने घर का भानु चमकेगा तो देश का सूरज भी चमकेगा."

करुणाशंकर देख रहे थे कि भानु बहुत तेजस्वी और ओजपूर्ण लग रहा था.

•

"कौन गया है अंदर, पिताजी के पास ?" भानुप्रसाद ने गुस्से में पूछा.

"खादी के कपड़े पहने कुछ लोग थे."

"गाड़ी में आये थे ?"

"नहीं, पाँव पैदल आये थे."

"नाम क्या है ?"

"मालूम नहीं."

"टेरिलीन की खादी पहनी थी ?"

"नहीं."

"कलफ लगाये, इस्तरी किये हुए कपड़े थे ?"

"नहीं, साफ पर फटेहाल कपड़े थे."

भनु ने होंठ चबाये, "अंदर क्यों जाने दिया ?"

"वे मास्टर साहब को पहचानते थे."

"मैं भी अमरीका के राष्ट्रपति को पहचानता हूँ, क्या मुझे कोई उसके बंगले में घुसने देगा ?"

भनु के प्रश्नों से गुमान सिंह जैसे गुमान सिंह को भी लगा कि कुछ गलत हो गया है, "मैं तो इन सबको जगमोहनदास के आदमी मानकर जाने दिया. चुनाव के समय खादीवालों के जत्थे आयें तो इसमें कौन सी नयी बात है ?"

"गुमान सिंह, आप कच्चे हैं. हरिजनों के झोपड़ों में आग लगाना एक बात है, इन खादीधारियों को समझना दूसरी बात. कितने लोग थे ?"

"चार आदमी थे, दो औरतें थीं."

"फिर तो वही होंगे."

"कौन ? कोई डकैत-गिरोह तो नहीं है न ?"

"डकैतों के ग़िरोह से तो निबट सकते हैं, इस गिरोह का मुकाबला करना मुश्किल है." कुछ सोचकर भनु ने गुमान सिंह से कहा, "देख, मैं अंदर जाता हूँ, अगर ज्यादा समय लगे तो कैसे भी करके पिताजी को बाहर बुला लाना."

"अच्छा."

भनु अंदर गया. ठाकुर ने जो कहा था वह सही था. अंदर कुछ सर्वोदय-कार्यकर्ता बैठे थे. करुणाशंकर के चेहरे पर अपराध के भाव थे.

"आपकी बात सही है भाई, लेकिन दोनों तरफ से माँग रहे हैं, मैं किधर जाऊँ ?" करुणाशंकर ने कहा.

"मास्टर साब, ये सब आपका उपयोग कर रहे हैं. आप तो बापू के पास रह चुके हैं. ये लोग आपको गांधी का दूसरा अवतार कहते हैं, यह सब आप कैसे

सुन लेते हैं ? मास्टर साहब, ये राजनीतिज्ञ गोडसे के नये अवतार हैं. ये गांधी को तो बींधते हैं, साथ-साथ आप जैसे कुछेक सच्चे आदमियों को भी बाँध डालते हैं. ये लोग गोली से बींधकर शहीद नहीं बनाते, सोने की कटार से मारते हैं."

ठीक उसी समय भानुप्रसाद ने प्रवेश किया. उसने सभी को प्रणाम किया.

"भनु, पहचानता है इन्हें ?" करुणाशंकर ने पूछा.

"हाँ, ये सब तो बड़े लोग हैं, विनोबाजी के शिष्य हैं. ठीक है न ?"

"यह भनु है न ?" गौरीप्रसाद ने पूछा.

"गौरीभाई," शांतिभाई ने कहा, "यह तो भानुप्रसाद मास्टर हैं."

"भानुप्रसाद मास्टर ?"

"हाँ," शांतिभाई ने कहा, "कुछ समय के बाद 'गांधी' कुलनाम की तरह 'मास्टर' कुलनाम का महत्व भी अत्यधिक बढ़ जायेगा. जगमोहनदास का दाहिना हाथ है, ठाकुर भी इसे पूछकर पानी पीते हैं."

भनु के चेहरे पर रौनक छा गयी, फिर भी उसने अपनी मुस्कान को छिपाकर कहा, "अंकल, आप भी क्या मजाक कर रहे हैं ! मैं तो इस देश के लिए जो कुछ भी कर सकता हूँ, करता हूँ. पिताजी की तपस्या है, उसीसे प्रेरणा पाता हूँ."

"भनु, तुम बाप का नाम रोशन करना चाहते हो ?"

"हाँ."

"फिर हमसे मिलकर सत्याग्रह करो."

"किसलिए ?"

"जगमोहन माराडी और हजारों का खून पीनेवाले ठाकुर के साथ करुणाशंकर मास्टर उठते-बैठते हैं इसलिए !"

"जगमोहनभाई में क्या खराबी है ?"

"उसमें अच्छाई क्या है ? भ्रष्टाचार में किलबिलाता कीड़ा है."

"छोटे मुँह बड़ी बात करता हूँ, इसलिए क्षमा चाहता हूँ. परंतु जगमोहन भाई को मैंने प्रजा-कार्य करते हुए देखा है. भ्रष्टाचार कहाँ नहीं है ? इतने भ्रष्टाचारभरे देश में काम करने के लिए कुछ तो इधर-उधर करना ही पड़ता है. पर हैं बिलकुल साफ दिल के आदमी. प्रजा के हित में रात या दिन नहीं देखते."

"इसलिए तो जगमोहन गाड़ी के नीचे पाँव ही नहीं रखता और देश में एक वक्त की रोटी भी न पानेवालों की संख्या बढ़ती जा रही है."

"आप सब पूजनीय हैं, बुजुर्ग हैं. जवाहरलालजी क्या कह रहे हैं, यह आपने पढ़ा न हो, ऐसा कैसे मान लूँ ? हमें समाजवाद लाना है, पर पूँजी हो तो पूँजी को बाँट सकते हैं. अभी तो हमारी यह स्थिति है कि हमें गरीबी ही बाँटनी पड़े."

यह चर्चा चल ही रही थी कि गुमान सिंह घबराया-सा अंदर आया, "मास्टर साहब, बा को कुछ हो गया है, जल्दी चलिए, ऐसा लगता है जैसे उनकी साँस रुक रही हो."

करुणाशंकर घबराये से उठ खड़े हुए.

"पिताजी, घबराइए नहीं. मैं अभी डॉक्टर को बुलाने के लिए भेजता हूँ. आप चलिए."

करुणाशंकर ने सभी को नमस्कार किया.

"आप जाइए मास्टर साहब, हम बाद में मिलेंगे."

•

इसके पहले राजनीति के नाम पर करुणाशंकर ने केवल मतदान ही किया था. चुनावों को लेकर राजनीतिक दलों के भाषण ही सुने थे. शिक्षक थे, इसलिए चुनाव-समिति ने दो-तीन बार उनसे कार्य करने का आग्रह भी किया था, परंतु उन्होंने किसी-न-किसी बहाने अस्वीकार कर दिया था.

चाय के कप के साथ राजनीतिक चर्चा करना, किनारे पर खड़े रहकर डूबते को देखते रहने जैसा था. आज तक उन्होंने यही किया था. उनके छोटे से शहर में उनका सब आदर करते थे, परंतु किसीको भी उनका डर या किसीके ऊपर उनका दबाव नहीं था. आज तक की गतिविधि में वे केवल राजनीति के दर्शक थे. अब उनकी समझ में आया कि रंगमंच पर होने में और रंगमंच के सामने होने में काफी फर्क होता है. रंगमंच के सामने होने में आपको कुछ भी करना नहीं होता. न आपको किसी चीज की आवश्यकता होती है. आप अगर दो-चार राजनीतिक दलों के नाम के साथ बात करते हैं तो आप बुद्धिमान् कहलायेंगे और किसीके कहने पर उसके कहे निशान पर जा के मुहर लगाकर आते हैं तो आप आम आदमी कहलायेंगे. प्रतीक या निशान पर मुहर लगाने का मतलब मालूम हो कि न हो, इससे विशेष फर्क नहीं पड़ता. परंतु किसीको एक खास चिह्न पर मुहर लगाने के बारे में समझाना हो तो बहुत फर्क पड़ जाता है.

आज तक राजनीतिज्ञों की आलोचना करने से उनको फुरसत नहीं मिलती थी. अब अचानक वे स्वयं राजनीतिज्ञों की कोटि में आ गये थे. वैसे भी "मैं गांधीजी का शिष्य हूँ, मेरा कोई राजकीय पूर्वग्रह नहीं है" जैसे दावे करुणाशंकर करते थे. लेकिन जगमोहन जो कुछ भी कहे या करे उसमें हाँ में हाँ मिलाने के अलावा कोई चारा भी तो न था. कुछ ही बरस पहले वे इस दंभ पर हँसते थे और जिस राजनीति की आलोचना करते थे, उसीका एक हिस्सा हो गये थे वे. जिस जमींदारी या जिस शोषण के खिलाफ वे क्रांति का झंडा लिये फिरते थे, उस जमींदारी या उस शोषण का भी वे एक हिस्सा बन चुके थे. अपनी आज तक की जिंदगी में उन्होंने जो कुछ किया था उसी पर पानी फेरने की जैसे शुरुआत हो गयी थी.

चुनाव में तीन-चार दिन ही शेष रहे थे. दो दिन बाद चुनाव-प्रचार बंद होनेवाला था. उसके पहले हेलिकॉप्टर और विमान द्वारा करुणाशंकर और ठाकुर राज्य के ज्यादातर भागों में पहुँच चुके थे. गांधी का रामराज्य आ रहा है— हर

जगह ऐसी हवा फैलाने में करुणाशंकर सफल रहे थे. सभाओं, तालियों की गड़गड़ाहट का नशा उनके सिर पर चढ़ा था. इन सभाओं में वही-के-वही श्रोताओं को देखकर पहले उनको क्षोभ या संकोच होता था. अब तो अगर सिर्फ यही पाँच हजार आदमी हों और सभा में कोई न भी आये, फिर भी विशाल सभा जैसा असर रहता था. इतना ही नहीं, ठाकुर समत सिंह के इन चुने हुए पाँच हजार आदमियों को किसी भी वाक्य के पहले तालियों की गड़गड़ाहट करना सिखा दिया गया था. एक बार जब उन्होंने राजनीति में भ्रष्टाचार फैलने की बात कही तो तालियाँ बजी थीं. तब वे कुछ बौखला गये थे. लेकिन ठाकुर ने कहा, "मास्टर, ये आपका मजाक नहीं उड़ा रहे, आप अपना भाषण दिये जाओ." एक बार कहीं पर ठाकुर को कहना पड़ा, "मास्टर, तालियों की आवाज से घबराना नहीं. सदा हँसमुख रहना चाहिए, सब इसका सही अर्थ ही लेंगे. हमारे ही आदमी हैं ये."

फिर भी इन तालियों का नशा चढ़ता था. किराये के ये पाँच हजार आदमी कहीं-कहीं तो और पच्चीस-पचास हजार को खींच लाते थे.

करुणाशंकर किससे मिलें, किससे न मिलें, इस बात का ध्यान अब ठाकुर के आदमी ही रखते थे. गुमान सिंह को करुणाशंकर के अंगरक्षक और सहायक के रूप में रखा गया था. उसे देखकर करुणाशंकर को हौसला रहता था और डर भी लगता था.

"अब चुनाव में कुछ दिन ही रह गये हैं." ठाकुर ने कहा, "दो दिन के बाद चुनाव-प्रचार बंद हो जायेगा."

"अच्छा है, कुछ चैन मिलेगा. इस महीने में नींद भी ठीक से नहीं हो पायी."

"शांति ? सही काम चुनाव-प्रचार बंद होने के बाद ही होगा."

"वो कैसे ?"

"यह आप नहीं समझ पायेंगे. मास्टर, फिर भी आपकी जरूरत तो रहेगी ही."

"चुनाव-प्रचार बंद होने के बाद क्या काम हो सकता है ?" करुणाशंकर समझ नहीं पा रहे थे.

"मास्टर, आपने कितने चुनाव देखे हैं ?"

"बहुत से."

"उँगली पर स्याही की बूँद लगाने का मतलब चुनाव देखना नहीं होता."

"फिर ?"

"उस स्याही की बूँद को एक ही आदमी की उँगली पर कितनी बार लगाया जा सकता है, यह पता है ?"

"नहीं."

"मत देनेवालों के नामों में से कुछ नामों से मत दिया ही नहीं जाता, यह मालूम है ?"

"हाँ."

"कुछ लोगों ने ठिकाना या घर बदल लिया हो, इस पृथ्वी का पता बदलकर स्वर्ग या नरक में जा बसे हों, फिर भी उनके नाम सूची में होते हैं, यह मालूम है ?"

"हाँ, मतदाता-सूची में कई बार ऐसा होता है."

"मास्टर, पिछले चुनाव में तय किया गया था कि सब अयोग्य हैं, किसीको भी मत नहीं देना."

मास्टर का चेहरा शर्म से लाल हो गया, "हाँ, तब मैंने मत नहीं दिया था."

"आज अगर आप यह कहें तो झूठे कहलायेंगे."

"कैसे ?"

"आपने मत दिया था."

"ठाकुर, मैं घर से बाहर ही नहीं निकला था. पूछो भनु को !"

"आप भले ही घर से बाहर न निकले हों, पर आपने मत दिया था, आपकी पत्नी ने भी मत दिया था."

"ठाकुर, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ."

"चुनाव कमिश्नर के गोदाम में सब कुछ अस्त-व्यस्त पड़ा होगा, मिलेगा नहीं. लेकिन आपने यकीनन मत दिया है, इतना तो साबित हो ही जायेगा."

"मतलब ?"

"सारा दिन हमारे आदमी घूम-फिरकर यह जान लेते हैं कि कौन-कौन मत देने जानेवाले नहीं."

"फिर ?"

"फिर उसी उम्र के आदमी मत देने के लिए तैयार ही होते हैं."

"यह कैसे हो सकता है ? हमारे विभाग में सब मुझे पहचानते हैं. मेरे नाम से और कोई मत कैसे दे सकता है ?"

"मास्टर, हमें सब पहचानते हैं यही हमारा भ्रम है. आपके मत का उपयोग हुआ ही है."

"लोकतंत्र में ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"लोकतंत्र में जो मत न दे उसे सजा मिलनी चाहिए. आप अगर अपने पवित्र मत का उपयोग न करें तो यह पवित्रता अगले पाँच साल में बासी न हो जाये, इसके लिए हमें आपकी ओर से और मत की पवित्रता न समझनेवाले असंख्य लोगों की ओर से अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है. हम लोकतंत्र का कर्तव्य निभाने में लोगों की मदद करते हैं."

करुणाशंकर की आँखें फटी-की-फटी रह गयीं.

"क्या कह रहे हैं आप ? यह तो अपराध है."

"देखिए, अब आप राजनीति में आ ही गये हैं तो एक बात ध्यान से सुन लीजिए. अपराध केवल छोटे लोग ही करते हैं. बड़े लोग केवल अपना कर्तव्य निभाते हैं."

"अगर कोई पकड़ा गया तो ?"

"वैसे कोई पकड़ा नहीं जाता. फिर भी अगर पकड़ा गया तो हम उसे छुड़ा लेते हैं."

"ठाकुर, मुझे इससे दूर ही रखिए."

"करुणाशंकर मास्टर, अब तो आप कूद पड़े हैं. अंदर घुसने के बाद अलग रहना कैसे संभव है ?"

"आपको किसी दूसरे नाम से मत देने के लिए नहीं भेजेंगे. मतदाता-सूची में कौन हमें आवश्यक रूप से मत देंगे, जिनके मत विरोधी पक्ष में जायेंगे और कौन मत देने ही नहीं आयेंगे, आपको और भनु को इसकी सूची बनानी है."

"क्या मतलब ?"

"मास्टर, अब इतने में समझ जाइए न ! आप भनु के भविष्य की ओर देखिए !"

•

"किसका टेलीफोन है ?"

"जाने दीजिए पिताजी, आपके लायक नहीं है," भनु ने कहा और फिर ऊँची आवाज में फोन में कहा, "आपको कहा न, इन सब बातों के लिए पिताजी के पास समय नहीं है. आप बेकार सर खपा रहे हैं."

"क्या है, भनिया ?"

पिताजी की ओर देख मुँह पर उँगली रखते हुए उसने कहा, "आपको कह जो दिया कि पिताजी सरकार नहीं हैं. पिताजी को सरकार होना होता तो आज वे देश के प्रधानमंत्री होते. वे ओहदा भी नहीं चाहते और ये सारी परेशानी भी नहीं चाहते. आप जाकर पुलिस में फरियाद कीजिए." और फिर कहा, "क्या कहा ? न सुने तो आप जानें. पुलिस को भी इस चुनाव के समय और भी दूसरे बहुत काम करने होते हैं ?" कहते हुए भनु ने फोन पटक दिया.

"कौन था, बेटा ?"

"ये सारे विरोधी दल एकजुट होकर अब उस उग्रवादी को हीरो बनाने चले हैं. कहते हैं कि उसे जिंदा या मुर्दा हाजिर करो."

"किसकी बात कर रहे हैं ?"

"उस रामदास की."

"खोडीदास के राम की ? उसे हाजिर करने में क्या दिक्कत है ?"

"पिताजी, आपको नहीं मालूम, ये सब कैसे-कैसे खेल खेलते हैं. उस खूनी को चुनाव के समय छोड़ दिया जाये तो उसकी पहली तीन गोलियों का निशाना आप बनते, जगमोहन भाई बनते और ठाकुर बनते."

"नहीं, वह ऐसा नहीं है. और ये सारे-के-सारे उसे सिर्फ देखना चाहते हैं !"

"ऐसे देखने नहीं देते. पुलिस की सख्त निगरानी में है वह बदमाश ! ऐसा कोई खेल दिखा के उसे छुड़ाने की युक्ति की है."

"तो फिर आप जाल क्यों नहीं बिछाते ? उसको छुड़ानेवाले को पकड़ लो. परंतु केवल इसी बात पर किसी कैदी को क्यों छिपाये रखना ?"

"पिताजी, यह चरखा चलाने जैसा आसान काम नहीं. ये तो राजनीतिक बातें हैं. आप या मैं इसमें क्या समझेंगे भला ! भाई जैसे उदार आदमी यदि उसे छोड़ते नहीं हैं तो उसके पीछे कुछ तो वजह होगी न ?"

"हाँ, कुछ वजह तो होनी ही चाहिए."

•

दूसरे दिन एक समाचारपत्र का वृत्तांत पढ़कर करुणाशंकर हैरान रह गये. विरोधी दल के एक नेता ने आक्षेप लगाया था कि खोडादास नाम के एक खेत-मजदूर के लड़के रामदास की जमकर पिटाई की गयी थी और पिटाई के कारण वह आखिरी बार बेहोशी में पाया गया था. उसका आरोप था कि रामदास इस पिटाई की वजह से मर गया है और उसकी लाश को इधर-उधर करने के लिए ठाकुर समत सिंह जमीन-आसमान एक कर रहे हैं. इसीलिए विरोधी दल की माँग है कि चुनाव के एक दिन पहले इस आदमी को जिंदा उसके बाप के सामने लाया जाये. केवल वह देखेगा और कोई नहीं. अगर उसका बाप कबूल कर ले कि उसने उसे जिंदा देखा है तो मैं चुनाव से हट जाऊँगा, अन्यथा जगमोहनदास को चुनाव से हट जाना होगा.

"भनु, नेता की माँग गलत नहीं है. अगर पुलिस के हाथों पिटाई से वह मरा नहीं है तो उसे उसके बाप से मिलने देना चाहिए न ! उसका बाप उग्रवादी नहीं है."

"पिताजी, इस बारे में आप एक शब्द भी नहीं कहेंगे. विरोधी दल की यह सबसे बड़ी साजिश है. उन्होंने पुलिस के साथ मिलकर रामदास को गायब कर दिया है और अब चुनाव के समय वे इस धमाके पर मत ऐंठना चाहते हैं. आप बीच में नहीं आओ तो अच्छा रहेगा. हमें इस हिंसक आंदोलनकर्ता या उसके समर्थकों का साथ बिलकुल नहीं देना चाहिए." करुणाशंकर भनु को एकटक देखते रहे.

"पिताजी, आपके इस इकलौते भनु की कसम है आपको, जब तक सही बात मालूम न हो, तब तक किसीकी भी बातों में न आना."

"रामदास भी अपने बाप का इकलौता बेटा है भनु." करुणाशंकर ने कहा और एक लंबी साँस भरी.

•

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी. करुणाशंकर को नींद नहीं आ रही थी. उस दिन सर्वोदय के कार्यकर्ताओं ने जो कुछ कहा था, उसमें बहुत कुछ तथ्य था. आज के अखबार में रामदास के बारे में जो भी पढ़ा था उसमें भी काफी तथ्य

होगा, ऐसा लग रहा था. यदि रामदास जीवित है तो फिर उसे उसके बाप से क्यों नहीं मिलने देते ? करुणाशंकर का मन व्यग्र था. वे खामोश कैसे रहें ? और बेटे की कसम भी कैसे तोड़ें ?

अचानक वे चौंके. उनके बाग का माली दबी आवाज में किसीके साथ बात कर रहा था. ठाकुर की आवाज लग रही थी. और भी दो-तीन आदमी थे.

"भनु, जरा देख ले तेरे बापू सो रहे हैं कि जाग रहे हैं ?"

करुणाशंकर बिस्तर में लेट गये. उनको लगा कि दाल में कुछ काला है. भनु उनके शयनकक्ष में दाखिल हुआ. दबे पाँव पलंग तक आया और फिर उन्हें सोते देखकर लौट गया. करुणाशंकर तुरंत खिड़की के पास पहुँचे. नीचे भनु दबी आवाज में कह रहा था, "पिताजी सो रहे हैं."

"फिर ठीक है, अब ले आओ दोनों गठरियाँ !"

पहले एक गठरी आयी.

"भनु, इसे अपने यहाँ ऐसी जगह छिपा देना कि किसीको भनक तक न हो."

"पर है क्या इसमें ?"

"सोने के बिस्कुट हैं. चौकीमारी से आये हैं. परसों समुद्र-तट से आये, तब से कस्टम इंस्पेक्टर पीछे लगा है. यहाँ रहेंगे तो किसीको शक नहीं होगा."

"लेकिन..."

"लेकिन-वेकिन... तुझे कुछ नहीं होगा. मैं जामीन हूँ, तेरी कोई जिम्मेदारी नहीं, समझा ! किसीको पता चल जाये और पूछताछ करे तब गुमान सिंह का नाम बताना."

"ठीक है." भनु दो आदमियों से वह गठरी उठवाके अंदर चल दिया.

ठाकुर ने कहा, "माली !"

"जी मालिक.".

"गड्ढा तैयार है ?"

"हाँ."

"जल्दी कर !"

दूसरी गठरी में से एक मानवीय शरीर का कुछ हिस्सा झलक रहा था. माली ने उसे उठाकर पेड़ के पीछे एक गड्ढे में डाल दिया.

"नमक की बोरी तैयार है ?"

"हाँ."

"जल्दी कर !"

वह गड्ढे में नमक की दो बोरियाँ खाली करके तेजी से धूल भरने लगा.

भनु के लौटने तक जमीन की सतह पहले जैसी समतल हो गयी थी.

"क्या है ?"

"कुछ नहीं, अरे वह दूसरी गठरी कहाँ है ?" ठाकुर ने पूछा.

"वह तो घर पर ही रह गयी." सोबत सिंह ने कहा.

"फिर तो आधा सोना यहाँ और आधा हमारे घर."

"हाँ, छापा मारेंगे ठाकुर तो पहले आपके यहाँ मारेंगे, ले आऊँ यहाँ ?"

"रहने दे. भले ही मुझे पकड़ ले जायें, यहाँ करुणाशंकर मास्टर के घर पर तस्करी का छापा नहीं पड़ना चाहिए." ठाकुर ने कहा.

करुणाशंकर वृक्ष के पास लायी गयी और उतारी गयी गंठरी को और इसके पश्चात् हुई सारी क्रिया को फटी आँखों से देखते रहे थे. उनकी चीखने की इच्छा हुई, पर किसीने जैसे उनकी आवाज दबोच ली हो. उन्होंने दीवार का सहारा लेने की कोशिश की, पर गश खाकर धड़ाम से नीचे गिर पड़े.

•

चुनाव-प्रचार का अंतिम दिन था. रात को एक सार्वजनिक सभा में भाषण दिया था. अब उनका कार्य पूरा हो गया था. अब तो चुनाव के दिन मत देने के सिवा कोई काम शेष नहीं रहा था. लंबे अरसे के बाद आराम के पल मिले थे. लक्ष्मी महिला-समिति की बैठक में गयी थी. करुणाशंकर अकेले ही थे. वे अपने विशाल ड्राइंगरूम के कोने में आरामकुर्सी पर बैठे थे.

किसीकी आहट सुनकर वे चौंके. इस समय कौन होगा ? सर्वोदयवाले तो नहीं ? जो भी हो, आज दरवाजे पर रोकनेवाला कोई नहीं. अब तो जो आये उसका सामना करना ही होगा.

आगंतुक बरामदे में खड़े-खड़े जोर से बातें कर रहे थे. महाराज की आवाज सुनाई दी, "आज मुश्किल से वे सो पाये हैं और अब ये खादीवाले आ धमके ! रुकिये, मैं देखके आता हूँ."

"बापू, कोई मिलने आये हैं."

"कौन हैं ?"

"छह-आठ लोग हैं. बड़े लोग लग रहे हैं. दो-चार की तसवीरें रोज अखबार में देखता हूँ."

"भेजो अंदर."

करुणाशंकर दरवाजे पर नजर जमाके बैठ गये. सबसे पहले गाँव का मनसुख वकील दाखिल हुआ. वह विरोधी दल के नेता की हैसियत से विख्यात था. जब करुणाशंकर सही माने में मास्टर थे, तब कई बार मनसुख के साथ बैठकर सरकार की नीतियों की आलोचना की थी. मनसुख के पीछे कोई अजनबी आदमी था. उसके पीछे लालचंदानी और इंद्रजीत सिंह थे. करुणाशंकर उनको देखकर भौचक्के-से रह गये. ये दोनों लोकसभा में खड़े होते थे तो प्रधानमंत्री के पैर भी काँपने लगते थे. समाचारपत्र में उनकी तसवीरें देखी थीं, परंतु उनसे कभी मुलाकात नहीं हुई थी. उनके पीछे देश के सबसे वृद्ध नेता श्यामसुंदर भी प्रविष्ट हुए. साथ में दो-तीन परिचित चेहरे भी थे. करुणाशंकर ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया.

"हम दूसरे गांधी के दर्शन करके कृतार्थ हुए." श्यामसुंदर ने कहा.

करुणाशंकर सकुचा गये. उन्होंने कहा, "श्यामसुंदरजी, चलो किसी भी बहाने आपने मेरी कुटिया पावन कीं, इस बात की मुझे खुशी है."

महाराज सबके लिए पानी लेकर आया. उसे लगा था कि ये सब महत्वपूर्ण मेहमान हैं, इसलिए उसने हाल ही में लक्ष्मी को महिला-समिति की ओर से उपहार में मिले इंपोर्टेड गिलासों में ही पानी लाना ठीक समझा था.

"हॉलैंड का कट-ग्लास लगता है," इंद्रजीत सिंह ने कहा, "मैं अभी पार्लियामेंटरी डेलिगेशन में हॉलैंड गया था तो क्रॉकरी की एक प्रसिद्ध दुकान में ऐसा ही एक सेट देखा था."

करुणाशंकर अब इस प्रकार की भाषा के आदी हो गये थे. खुद उन्हें भी चुनाव के बाद रूस-भ्रमण का निमंत्रण मिला था. साथ में दो देशों के सरकारी निमंत्रण दिलवा देने का वचन जगमोहन ने भी दिया था. मनु और लक्ष्मी अभी से उस भ्रमण के लिए तैयारी कर रहे थे. कहाँ क्या सस्ते में मिलता है, इसकी सूची भी वे बनाने लगे थे.

"महाराज, सबके लिए फलों का रस ले आइए. कहिए, आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?" करुणाशंकर ने कहा.

"हमारी सेवा करने की कोई आवश्यकता नहीं. हम केवल यही प्रार्थना करने आये हैं कि करुणाशंकर मास्टर देश की सेवा करने में मदद करें."

"जो कुछ भी हो सकता है, करता ही हूँ," करुणाशंकर ने कहा, "फिर भी कोई खास काम, जो मैं कर सकूँ, हो तो फरमाइए."

"मास्टर साहब, आप चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं. ये सब आपको गांधी का नया अवतार कहते हैं."

"इस बात से मुझे बैचेनी होती है, श्यामसुंदरजी. मैं गांधीजी के चरणों की धूल के बराबर भी नहीं. गांधीजी के आदर्श भूल गया है हमारा देश. मैं देश के लिए कुछ कर पाऊँ, ऐसे अवसर की बरसों से ताक में था. जगमोहन भाई ने मुझे अवसर दिया."

"मास्टर साहब, आप अभी भी भ्रांति में हैं. आप इस फाइल पर एक नजर डालिए."

"क्या है इसमें ?"

"जगमोहन के भ्रष्टाचार की सिलसिलेवार जानकारी. आप स्वयं तसल्ली कर सकते हैं."

"भ्रष्टाचार दुनिया में हर जगह फैल चुका है. हम इसे कहाँ-कहाँ से दूर करेंगे ? कैसे दूर करेंगे ?"

"मास्टर साहब, कहीं से तो आरंभ करना ही पड़ेगा न ? तो फिर कीजिए शुरुआत इस फाइल को प्रकाश में लाकर !"

"यह फाइल सच्ची है, इसका क्या प्रमाण है ? आजकल राजनीति में शुद्ध आदमी को भी भ्रष्ट दिखाना मुश्किल नहीं है."

"मास्टर साहब, आपकी बात सही है. फिर आपने जगमोहनदास को लाखों की रिश्वत अस्वीकार करते हुए अपनी आँखों से देखा है."

"हाँ."

"तब जरा इस सद्गृहस्थ के चेहरे की ओर देखेंगे ?"

करुणाशंकर ने श्यामसुंदर द्वारा दिखाये गये व्यक्ति की ओर देखा. चेहरा कुछ परिचित-सा लग रहा था.

"ध्यान में नहीं आता."

"सर्किट हाउस में आपने जिस आदमी को रुपयों से भरी अटैची वापस ले जाते देखा था, वही कांट्रेक्टर देशपांडे हैं ये !"

करुणाशंकर को वह दृश्य याद आ गया. उन्होंने कहा, "तो मेरी बात सही साबित हुई न !"

"नहीं ! देशपांडे, आप ही कहिए."

"मास्टर साहब, आप बहुत भोले हैं. जिस कांट्रेक्ट के लिए मैंने रुपये देने की बात कही थी वे तो कबके जगमोहन की तिजोरी में पहुँच गये थे. पर आप पर प्रभाव डालने के लिए मुझे वह नाटक करने के लिए कहा गया था. अगर आपको यकीन न हो तो आप भानुप्रसाद को पूछ सकते हैं."

"भानुप्रसाद का इससे क्या लेना-देना ?"

"मास्टर साहब, अब और भोले न बनिए. कुछ ही बरस पहले इस घर में क्या था, और आज क्या नहीं है, इस बारे में मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं है. भनिया के बस्ते में जगमोहन ने सोना भर दिया. तब से जगमोहन जिस अंडरवर्ल्ड के साथ जुड़ा हुआ है, उसका कुछ अंश यहाँ आता रहा है. अभी दो-चार दिन पहले रात को यहाँ क्या हुआ, इसकी जानकारी आपको कहाँ से होगी !"

करुणाशंकर चौंके. उनकी किस्मत अच्छी थी कि ठीक उसी समय महाराज संतरे का रस लेकर दाखिल हुआ. दूसरे रस का घूँट भरें, इसकी प्रतीक्षा किये बगैर करुणाशंकर ने एक घूँट भरकर सूख रहे होंठों एवं गले को तर किया और जेब से खादी का नया रूमाल निकालकर माथे का पसीना पोंछा.

करुणाशंकर को वह भीषण रात याद आ गयी. बाद में उन्होंने गड्ढे में उतारी गयी बोरी के बारे में जानना चाहा था, परंतु जानने का कोई मौका नहीं मिल पाया था. उस पूरे क्षेत्र में माली ने कँटीले तार लगा दिये थे और गुमानसिंह के दो-चार गुंडे किसीको उधर जाने ही नहीं देते थे. पर इस घटना की जानकारी शायद विरोधी पार्टी को हो गयी थी. उन्होंने कहा, "श्यामसुंदरजी, आप और लालचंदानीजी या इन्द्रजीत सिंहजी जैसे महानुभाव मेरे यहाँ आये, मैं पावन हो गया. अब परसों चुनाव है. यह चुनाव इस देश में कोई नया परिवर्तन ले आये, यही इच्छा है. इससे ज्यादा

एक शिक्षक के नाते मैं और क्या कहूँ ? मैं आप सबके यश के लिए प्रार्थना करूँगा."
इतना कहकर उन्होंने खड़े होकर सभी को प्रणाम किया.

"जा कहाँ रहे हैं मास्टर साहब ? अभी हमारी असली बात हुई ही नहीं है. बैठिए, आपने स्पेशल ब्रांच के इंस्पेक्टर वर्मा का नाम सुना ही होगा ?"

"कौन, जिसके स्थानांतरण का आदेश निकल चुका है वह ?"

"हाँ, परंतु उन्होंने ऊपर तक पहुँचकर अपना स्थानांतरण स्थगित करवा लिया है. देखिए, इधर कोने में जो शांति से बातें सुन रहे हैं, वे स्वयं इंस्पेक्टर वर्मा हैं. वर्माजी, आपको जो कहना है, निस्संकोच कहिए."

इंस्पेक्टर वर्मा खड़े हो गये और एक फाइल में से दो कागज निकालकर मास्टर साहब को दिये. मास्टर साहब के भीतर एक खलबलीं मच गयी थी वर्मा का नाम सुनकर. उन्होंने अपनी ऐनक ठीक करके कागजात देखे. एक तो उनके कंपाउंड के लिए सर्च वारंट था. दूसरा उनके घर के लिए सर्च वारंट था.

"सर्च वारंट किसलिए ?" करुणाशंकर की आवाज मानो फट गयी थी.

"शायद आप कुछ भी नहीं जानते होंगे. इसमें आप बिलकुल भी दोषी नहीं. लेकिन ठाकुर और यहाँ की पुलिस द्वारा किये गये एक खून में आपका और आपके बेटे का नाम जोड़ा जा सके, ऐसा प्रमाण आपके ही घर में मौजूद है."

"आप इस प्रकार मेरा घर अस्त-व्यस्त नहीं कर सकते. मैं 'स्टे' लूँगा."

"आज कोर्ट बंद है. कल रविवार है. परसों आम चुनाव की छुट्टी है. मंगल के दिन कोर्ट खुले तो आप शौक से अदालत में जा सकते हैं. पर तब तक तो बात काफी बढ़ गयी होगी."

"यानी ?"

"बाहर मेरी टुकड़ी छानबीन कर रही है. अगर वहाँ पर कुछ संदिग्ध मिलेगा तभी आपके घर की तलाशी ली जायेगी."

"आप विरोधी दल की इस साजिश में शरीक हैं क्या ? जगमोहन भाई ने आपका तबादला करवाया, इसीका बैर निकाल रहे हैं ?"

वर्मा ने शांत स्वर में कहा, "मुझे राजनीतिज्ञों से क्या लेना-देना ? मेरे लिए यहाँ पर बैठे व्यक्ति विरोधी दल के प्रभावशील नेता नहीं हैं. मेरे लिए तो वे सिर्फ इत्तला देनेवाले हैं. आप भी मेरे लिए दूसरे गांधी नहीं, संदिग्ध व्यक्ति हैं. विरोधी दल की साजिश की बात सार्वजनिक सभा में ही अच्छी लगती है, मास्टर साहब. अदालत में सत्य का ही सामना करना पड़ेगा. आपने सत्य के बारे में बातें बहुत की हैं. अब सत्य का साक्षात्कार चाहते हैं तो आइए बाहर. हम सब देखें कि सत्य का सामना कैसे किया जा सकता है !"

करुणाशंकर स्तब्ध थे. इस समय मनु या गुमान सिंह नहीं थे. जगमोहन या ठाकुर से फोन पर संपर्क हो नहीं सकता था. एक ही सहारा जगमोहन के सहायक घोष का था. वे उठकर फोन की ओर बढ़े.

"मास्टर साहब, पाँच मिनट के बाद आप चाहे जिसे फोन करना. बाहर घूमकर आते हैं एक बार."

"आपने मुझे हिरासत में ले लिया है क्या ?"

"वर्माजी, आप मेरा एक काम कीजिए. मैं मास्टर साहब के साथ बिलकुल अकेले में बात करना चाहता हूँ." श्यामसुंदर ने कहा.

वर्मा और उनके साथ सब खड़े हो गये. उन सबकी आहटें बंद हुईं तो श्यामसुंदर ने अपनी कुर्सी करुणाशंकर के बिलकुल करीब लाकर कहा, "वर्मा साफ आदमी है. वह जानता है कि आप निर्दोष हैं. भानुप्रसाद शायद भ्रष्टाचार में लिप्त हो, परंतु खून में वह ठाकुर या जगमोहन के साथ नहीं है."

करुणाशंकर कुछ कह नहीं पाये. उन्होंने श्यामसुंदर का हाथ अपने हाथों में ले लिया.

"मास्टर, आप घबराना नहीं. मैं आपके साथ हूँ. आप किससे बात करना चाहते हैं ?"

"जगमोहन के सहायक घोष से."

"आप फोन कीजिए. मैं दूर बैठता हूँ."

करुणाशंकर ने नंबर मिलाया. दूसरी तरफ से घोष की निस्तेज आवाज सुनाई दी. "मैं क्या करूँ ? जो आप उचित समझें, कीजिए."

उनके हाथ से फोन गिर गया. वे भी शायद गिर जाते, परंतु श्यामसुंदर ने आकर उन्हें सँभाल लिया. "यह घोष भी हमारे साथ है. उसीने हमें खबर दी. यह केवल राजनीति नहीं है. एक आदमी की जान गयी है. आप यदि जगमोहन का पर्दाफाश करने में साथ दें तो आपको और भानुप्रसाद दोनों को बाइज्जत रिहा करवाने की जिम्मेदारी मेरी."

"भानुप्रसाद से मिलने से पहले मैं कुछ कह भी नहीं सकता."

"पंद्रह मिनट का समय है. मैं भी बाहर जाता हूँ. आपको जो कुछ भी सोचना है सोच लीजिए." कहकर श्यामसुंदर बाहर निकल गये.

अब उनके सामने दो ही विकल्प थे, श्यामसुंदर की बात मानकर तुरंत बदनामी से बचना. यह सोना और शव ठाकुर ही लाये थे, इसलिए भानुप्रसाद को इसमें से उबारा जा सकता था. लेकिन जगमोहन और ठाकुर के विरुद्ध जाने का मतलब क्या है, यह बात भी करुणाशंकर अच्छी तरह से जानते थे.

अभी उनके मन की उधेड़बुन चल रही थी कि मनसुख वकील की आवाज सुनाई दी, "मास्टर, आपको इंस्पेक्टर बुला रहे हैं."

करुणाशंकर ने जल्दी से निर्णय लिया. उन्हें ठाकुर के मित्र पुलिस अधिकारी सुंदर सिंह की याद आयी. उन्होंने फोन किया.

"मुझे मालूम है, मास्टर साहब, पर मैं मजबूर हूँ. फिर भी एक रास्ता है."

"क्या ?"

"मैं टेलीफोन पर आपकी फरियाद दर्ज करता हूँ."

"कौन सी फरियाद ?"

"आपके यहाँ कुछ अजनबी लोग आपके बाग से कुछ कलमें लेने आये थे. आपने अपने स्वभाव के अनुसार उन लोगों से कहा जो भी कलमें आप चाहें, ले जा सकते हैं. इसके बाद इंस्पेक्टर वर्मा कुछ विख्यात लोगों के साथ आये और जिसके बारे में आपको कुछ भी मालूम नहीं है, वैसे सवाल करके धमकाने लगे."

"ठीक है." करुणाशंकर ने कहा.

"आप अपने कमरे से बाहर नहीं निकलना. मैं पुलिस पार्टी के साथ आता हूँ. आप पलट तो नहीं जायेंगे ?"

"नहीं."

•

मनसुख वकील ने फिर से आवाज दी, "मास्टर साहब, बाहर आइए."

करुणाशंकर बालकनी के पास की आरामकुर्सी पर जाकर बैठ गये.

श्यामसुंदर, इंद्रजीत सिंह और मनसुख वकील तीनों अंदर आये.

"मास्टर साहब !"

"क्यों, क्या है ?"

"अब सोचने के लिए समय नहीं रह गया."

"मुझे कुछ सोचना ही नहीं."

"क्यों ?"

"मैं महात्मा गांधी के पदचिह्नों पर चलता हूँ. मैं सत्य को नहीं छोड़ूँगा. पहले आपने अजनबी आदमियों को भेजा, फिर इंस्पेक्टर को लेकर आये. मेरे घर में आज कोई नहीं है, इसका फायदा उठाकर आपने कंपाउंड में या घर में क्या कुछ नहीं किया होगा, कौन जानता है ? मैंने पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करायी है. आपके इंस्पेक्टर वर्मा... किसे पता है कि ये आपकी साजिश में साझीदार हैं या नहीं ? एक पुलिस अधिकारी को राजनीतिज्ञों के साथ आने की क्या आवश्यकता थी और वह भी एक शिक्षक के घर में ? जाइए श्यामसुंदरजी, आपने तो गांधीजी को भुला ही दिया है. पर मुझ जैसे लोगों के मन में उनका ध्यान आज़ भी है. और आप हैं कि कीचड़ उछालने आये हैं ? पर मैं अपने मन को मलिन नहीं होने दूँगा."

श्यामसुंदर यह सुनकर हैरत में पड़ गये.

"आप सब जो कुछ भी बोल चुके हैं, वह सब रेकॉर्ड हो चुका है."

"यानी ?"

"इस बात का पता आपको अदालत में चलेगा."

"धमकी दे रहे हैं मास्टर ?"

"नहीं, केवल आपकी धमकियों से डरने से इनकार कर रहा हूँ."

श्यामसुंदर मनसुख वकील की ओर देखने लगा.

तभी पुलिस अधिकारी सुंदर सिंह हाथ में रिवॉल्वर घुमाता आ पहुँचा, "मास्टर साहब कहाँ हैं ?"

"यहाँ हूँ, सुंदर सिंहजी."

सुंदर सिंह आगे आया, "वाह, बाहर भी राजनीतिज्ञ, अंदर भी राजनीतिज्ञ, क्या बात है ? मास्टर साहब, मुझे लगता है कि सभी पार्टियों के नेता इस बार आपको ही प्रधानमंत्री बनायेंगे."

"सुंदर सिंह, यह मजाक करने का वक्त नहीं है. लाइए, फोन पर दर्ज की गयी अपनी फरियाद पर दस्तखत कर देता हूँ."

"मास्टर साहब, फिक्र करने की जरूरत नहीं. कानून के हाथ बहुत लंबे हैं. कानून को धोखा देनेवाले को भी वह लपेट में ले सकता है. आपका बयान मैंने नोट कर लिया है. आप दस्तखत कर दीजिए, फिर मैं आगे की कार्रवाई करता हूँ."

करुणाशंकर ने आँख मूँदकर दस्तखत कर दिये.

"मास्टर साहब, बाहर एक नाटक हो रहा है. मैं यहाँ आया तो एक दैनिक का फोटोग्राफर तसवीरें खींच रहा था. कोई सनसनीखेज घटना होनेवाली है, ऐसा लालच देकर कुछ राजनीतिज्ञों ने उसे यहाँ बुलाया था. उसने अपनी आँखों से देखा है कि खुदाई होने के बाद एक शव को अंदर उतारा गया. उसके बाद ही सबको तसवीरें खींचने की इजाजत दी गयी."

अब चौंकने की बारी श्यामसुंदर और मनसुख वकील की थी.

"सुंदर सिंह, तू अभी तक सुधरा नहीं क्या ?"

"वकील साहब, यहाँ देश के भावी प्रधानमंत्री खड़े हैं. लिहाज करके मैं और कुछ नहीं कहूँगा. परंतु अगर आप इस साजिश में शरीक हैं तो श्यामसुंदरजी के प्रधानमंत्री बनने से पहले ही जेलखाने में बंद होंगे."

श्यामसुंदर को प्रधानमंत्री के रूप में अपनी कल्पना आकर्षक लगी. साथ ही सुंदर सिंह जो दाँव चल रहा था, वह बड़ा खतरनाक लग रहा था. इस चुनाव में प्रधानमंत्री की कुर्सी मिल जाये तो सुंदर सिंह काम का आदमी साबित हो सकता है.

"सुंदर सिंह, हम तो मास्टर साहब से आशीर्वाद लेने आये थे. यहाँ आये तो बाहर इंस्पेक्टर वर्मा मिल गये. अलबत्ता वे किसी दूसरे ही काम से आये थे."

"सुंदर सिंह, यह सब ध्यान से लिख लीजिए. आगे जाकर उपयोगी सिद्ध होगा." करुणाशंकर ने कहा.

कुछ समय पहले के भोले-से मास्टर को पक्के राजनीतिज्ञ के अंदाज से बात करते देख मनसुख वकील हैरान रह गया.

अपनी इस भूमिका से स्वयं करुणाशंकर भी चकित थे.

●

दूसरे दिन के समाचारपत्रों में बड़ी सनसनीखेज खबरें थीं. कहीं करुणाशंकर मास्टर के रहस्य का पर्दाफाश होता दिखता था तो कहीं अग्नि-परीक्षा में से उनके दोषरहित और सुरक्षित बाहर निकल आने की बात लिखी थी.

जनता उलझ गयी कि आखिर मामला क्या है. शव बाहर से लाकर करुणाशंकर मास्टर के कंपाउंड में गाड़ा गया या कंपाउंड से खोदकर निकाला गया था— यह बात स्पष्ट नहीं हो रही थी. श्यामसुंदर, लालचंदानी, इंद्रजीत सिंह आदि के बयान विरोधाभास दर्शाते थे. सुंदर सिंह ने भी गाँव के थाने में प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलायी थी. सबको टेप-रेकॉर्डर पर टेप किये गये संवाद सुनाये गये थे. पत्रकार भी काफी उलझन में थे. किसीने गांधी के नये अवतार को इस मामले में लपेटने के प्रयत्न की निंदा की थी. कुछ पत्रकारों ने करुणाशंकर के नाम से जगमोहन और ठाकुर द्वारा किये गये कृत्यों की निंदा की थी.

रेडियो पर प्रसारित समाचारों में कहीं विरोधी दल का नाम नहीं था. करुणाशंकर की बहुत प्रशंसा करने के बाद कहा गया था कि उनको बदनाम करने के लिए निहित स्वार्थों द्वारा की गयी साजिश पकड़ी गयी है.

दूसरी ओर कुछ लोगों ने मैजिस्ट्रेट को एफिडेविट दिया था कि उन्होंने दो-तीन दिन से कुछ लोगों को वहाँ चक्कर काटते देखा था. वे एक रात कंपाउंड में भी गये थे. माली, गुमान सिंह ने भी एफिडेविट में कहा कि जहाँ से शव मिलने का दावा किया गया है, उसी जगह उन्होंने दो-तीन दिन से कुछ लोगों को चक्कर काटते देखा था. पूछने पर उन लोगों ने कहा था कि वे गलती से उधर आ गये थे.

चुनाव की सुबह तक माहौल बिलकुल उलझ चुका था. प्रधानमंत्री ने आपात बैठक आयोजित करके गांधीजी के दूसरे अवतार समान करुणाशंकर को बदनाम करने की साजिश पर, चुनाव स्थगित किये जाने की संभावना पर गंभीरता से विचार किया था. पर करुणाशंकर के निवेदन पर चुनाव स्थगित न करने का निर्णय ले लिया गया था.

बरामद शव उग्रवादी नेता रामदास का होने का संदेह था. लेकिन कुछ पगलाया-सा उसका पिता खोडीदास उस शव को पहचान नहीं पाया था. पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के अनुसार मृत्यु सात-आठ दिन पहले हुई थी. उसकी देह पर दो-तीन बार गाड़कर निकालने के निशान पाये गये थे. शरीर पर दूसरे निशान पिटाई की वजह से थे या हाथापाई की वजह से, यह तय नहीं हो पाया था.

•

जगमोहन टेलीफोन के करीब ही बैठा था.

कल मतदान खत्म होने के बाद देर रात तक व्यर्थ घूमना पड़ा था. इस बार दूसरी पार्टी ने अच्छी-खासी तैयारी की थी. उसने फोन घुमाकर बात की तो पता चला, "साहब, अभी तो मतगणना शुरू होने में पाँच मिनट बाकी हैं. मतों को छाँटने में एक-दो घंटे लग जायेंगे. दो घंटे के बाद शायद प्रारंभिक ट्रेंड मिल जाये."

इतनी अधीरता उसने इसके पहले कभी अनुभव नहीं की थी.

इतने में ठाकुर समत सिंह आये.

"क्यों क्या खबर है ?"

"खबर तो चार घंटे बाद ही मिलेगी."

"अपनी ही जीत होगी."

"आपके मुँह में घी-शक्कर."

"हमारा मास्टर बड़ा पक्का निकला !"

"हाँ, उसने हम सबको बचा लिया. जिस घोष पर इतना भरोसा रखा था, वही दगाबाज साबित हुआ. कल से छुट्टी लेके चला गया है. आने पर बात करेंगे."

"अब क्यों वापस आयेगा ? जिंदगीभर की कमाई एक साथ कर ली होगी."

"अब क्या करें ?"

"एक बार चुनाव का परिणाम घोषित हो जाने दो. मैंने पुलिस कमिश्नर को वारंट तैयार रखने के लिए कह दिया है. सभी को फौजदारी अपराध के तहत कैदखाने में बंद करवा दूँगा."

"यह उतना आसान नहीं जगमोहन भाई !"

"ठाकुर, यदि आपका साथ हो तो मुझे इसमें कुछ मुश्किल नहीं लगता."

"पहला प्रश्न मास्टर के बारे में है."

"वह तो जैसा हम कहेंगे वैसा करेगा."

"आप भूल रहे हैं. इस मामले में वे अडिग रहे, लेकिन भीतर से वे टूट चुके हैं."

"उसे सँभालना मुश्किल नहीं. भानुप्रसाद है न !"

"फिर भी..."

"देखते हैं. अभी तो सिर्फ प्रतीक्षा करनी है."

•

उच्च न्यायालय में इतनी भारी भीड़ कभी जमा नहीं हुई. एसोसिएट ने केस का ब्यौरा दिया — राज्य सरकार, जगमोहनदास, समत सिंह ठाकुर, करुणाशंकर मास्टर और भानुप्रसाद मास्टर बनाम श्यामसुंदर अग्रवाल, इंद्रजीत सिंह, मोहनलाल चंदानी, मनसुख वकील, इंस्पेक्टर वर्मा.

वादी और प्रतिवादी के वकीलों ने अपनी-अपनी दलीलें पेश कर दी थीं. केवल करुणाशंकर मास्टर ने अपनी ओर से कोई वकील रखने के लिए मना कर दिया था. नीचे की अदालत में वे खामोश ही रहे थे. इस न्यायालय में भी वे कुछ भी कहने के लिए तैयार नहीं थे.

न्यायाधीश ने कहा, "मास्टर साहब, यह एक महत्वपूर्ण केस है. नीचे की अदालत के फैसले के विरुद्ध की गयी अपील में आप साथ में हैं. अगर आप एक शब्द भी नहीं कहेंगे तो कैसे चलेगा ?"

"मुझे कुछ भी नहीं कहना है." करुणाशंकर ने कहा.

"तो फिर क्या मैं यह मान लूँ कि बाकी के चार वादियों की दलील से आप सहमत हैं ?"

"नहीं."

"मास्टर साहब, आपके सिद्धांतों का आदर करता हूँ. परंतु आपने वादियों के साथ इस न्यायालय में अपील की है और अब आप खामोश रहें, यह नहीं चलेगा. न्यायालय अपने हिसाब से निर्णय लेगा."

करुणाशंकर पलभर के लिए चुप रहे, फिर बोले, "न्यायमूर्ति, मुझे इसके बारे में या तो कुछ भी नहीं कहना है या फिर बहुत कुछ कहना है."

"अपनी तरफ से आप स्वयं आपका मुकदमा प्रस्तुत कर सकते हैं. आपको इसकी इजाजत दी जाती है."

"माइ लॉर्ड, वादी नं. ४ बहुत कुछ कहने की बात कर रहे हैं. वे ऐसा वादी की हैसियत से नहीं, साक्षी के तौर पर कह रहे हैं. प्रतिवादियों की तरफ से मैं अर्ज करता हूँ कि वे अगर कुछ कहना चाहते हैं तो उसे सुनने के लिए नीचे की अदालत को आदेश दिया जाना चाहिए."

जगमोहन ने अपने वकील की ओर देखा. वकील ने झुककर पूछा, "क्या ?"

"मास्टर कुछ न कहें यही ठीक है." जगमोहन ने धीरे से कहा.

"माइ लॉर्ड, मास्टर साहब की तरफ से उनके पुत्र के वकील ने दलीलें पेश की हैं. उन्होंने नीचे की अदालत में कुछ भी नहीं कहा. मैं अपने विद्वान् मित्र के विचार से सहमत हूँ कि यहाँ उनकी दलील सुनने की आवश्यकता नहीं है."

न्यायमूर्ति ने मजाक किया, "चलो, एक बात तो ऐसी है जिस पर दोनों पक्ष सहमत हैं. लेकिन न्याय आपके साथ सहमत नहीं है. करुणाशंकर मास्टर जो कुछ भी कहना चाहें, कह सकते हैं."

करुणाशंकर खड़े हो गये, "न्यायाधीश साहब, मुझे आपकी वकालत की भाषा नहीं आती. मैं कुछ ज्यादा नहीं कहना चाहता. केवल इतना कहना चाहता हूँ कि यह सारा मुकदमा ही व्यर्थ है. बात रामदास की हत्या की. उस हत्या के लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ. बाकी सब निर्दोष हैं."

"मि. लॉर्ड, करुणाशंकर मास्टर दलील नहीं कर रहे, कबूल कर रहे हैं."

"ऑब्जेक्शन ओवररूल्ड, आगे कहिए मास्टर साहब !"

"सिर्फ इसी एक हत्या के लिए मैं जिम्मेदार हूँ, ऐसा नहीं है. चुनाव के दौरान हरिजन बस्ती में लगी आग में मरे हरिजनों की हत्या के लिए भी मैं ही जिम्मेदार हूँ."

"ऑब्जेक्शन मि. लॉर्ड, इस बात का इस मुकदमे से कोई संबंध नहीं."

"ऑब्जेक्शन सस्टेंड. मास्टर साहब, इस मुकदमे के संबंध में ही जो बात कहनी जरूरी है, वह कहिए."

"न्यायाधीश साहब, इस मुकदमे का संबंध सारे देश से है. इस मुकदमे में मेरे साथ एक वादी राज्य सरकार है. कम-से-कम इस राज्य में घटी हुई घटनाओं

के साथ तो इसका संबंध है ही. हम क्या कर रहे हैं, कहाँ जा रहे हैं, इन सारे प्रश्नों के उत्तर तो पाने ही होंगे."

"इस मुद्दे का इस मुकदमे से संबंध स्थापित कर सकें तो आपको कुछ भी कहने का अधिकार है."

"साहब, यदि इस मुद्दे का इस मुकदमे से संबंध न स्थापित कर पाऊँ, तो आप मेरा पूरा कथन रद्द कर सकते हैं, परंतु या तो मुझे सब कुछ कह लेने दीजिए या फिर मुझे चुप रहने दीजिए."

"इनको जो कहना है, खुलकर कहने दें." श्रोतादीर्घा में से एक तरुण कन्या की आवाज उठी."

"ऑर्डर ! ऑर्डर ! अगर कोई बीच में बोलेगा तो उसे कोर्ट से बाहर निकाल दिया जायेगा."

करुणाशंकर ने अपना वक्तव्य शुरू किया, "जैसा कि मैंने कहा, इस हत्या का दोषी मैं हूँ और मेरे अलावा आप जैसे लोगों का भी दोष है. हम सब-कुछ समझते हुए समझौता करते हैं, हम ऐयाशीपसंद हैं. अपने खुद के अनुभव से मैं यह कह सकता हूँ कि गरीबों का उद्धार करने की बातें, समृद्धि के बीच रहकर करने का नशा कुछ और ही है. पहले मैं निम्नमध्यमवर्गीय मास्टर की हैसियत से ये बातें करता था और खुद को बुद्धिजीवी समझता था. अब मैं जनता के सेवक की हैसियत से उच्चमध्यमवर्ग के वैभव में रहकर यही बात करता हूँ. मैंने भी अन्य सत्तापुरुषों की तरह अपने इर्दगिर्द मंत्री, अंगरक्षक आदि की फौज खड़ी की. जनता के प्रतिनिधि होने पर भी, जनता से दूर रहने पर ही शासन चलाया जा सकता है, यही मंत्र आज के शासकों ने मुझे सिखाया है..."

"मि. लॉर्ड !"

"ऑर्डर ! पहले मास्टर साहब जो कुछ कह रहे हैं, सुन लीजिए. इसमें से जो भी आप असंगत साबित करेंगे, उसे मैं रेकॉर्ड से निकाल दूँगा."

"इस शोषण में विरोधी दल के नेता भी शरीक हैं. कतिपय राज्यों में ये लोग भी राज कर रहे हैं. वहाँ से भी भ्रष्टाचार को निर्मूल नहीं किया जा सकता है. वहाँ पुलिस गरीब किसानों के साथ नहीं, बड़े जमींदारों के साथ है."

"मि. लॉर्ड, यह तो हद हो रही है."

"आप शांत रहिए. अब तक मास्टर साहब ने जो कुछ भी कहा है, उसमें कुछ भी असंगत नहीं है. मास्टर साहब, आप अपना बयान जारी रखिए."

"साहब, खुद मैंने भी धीरे-धीरे स्वयं को भ्रष्ट होने दिया है. एक दिन एक मंत्री ने मेरे बेटे को नया बस्ता दिला दिया. उस दिन से मेरे भ्रष्ट होने की शुरुआत हुई."

जगमोहन ने भानुप्रसाद की ओर देखा. भानुप्रसाद ने अपने वकील की ओर. दोनों चुपके से न्यायालय के कक्ष से बाहर निकल गये.

●

"अब इसके सिवा कोई और चारा नहीं है." जगमोहन ने कहा.

"मुझे भी ऐसा ही लग रहा है."

"पूरा मुकदमा फिर नीचे की अदालत को रेफर करेंगे."

"तुम काउंसिल में निर्वाचित हो जाओ. इसके बाद तुम्हें तुरंत मंत्रिमंडल में लिया जा सकता है. लेकिन तुम्हारी उम्र आड़े आती है."

"प्रदेश युवा शाखा का प्रमुख बनने में तो मेरी उम्र आड़े नहीं आती न ?"

जगमोहन भानुप्रसाद को देखता रह गया. भानुप्रसाद उसके अनुमान से कहीं ज्यादा चालाक था.

"नहीं, वह तो पक्का है."

"मैंने डॉक्टर से कह दिया है."

"मैंने भी सुबह बात की थी. एक माँगता है. आधे या पौने में मानता है तो ठीक है वरना एक देने का तय कर लो."

"अभी सौदेबाजी करने का समय नहीं है."

"मैं ठाकुर को बाहर भेज रहा हूँ. राशि के साथ उसे गुमान सिंह के वहाँ पहुँचा दो. उसे साथ ही ले आने को कहना."

"ठीक है. फोन पर बात कर लेता हूँ. तैयार ही बैठे होंगे. पंद्रह मिनट में यहाँ."

•

"अपने ही बीच रहे यह बात, श्यामसुंदरजी ! करुणाशंकर मास्टर के बारे में पहले हमारे वकील को बोलने दें. बाद में आपका वकील जो चाहे बोले. यह आदमी हम लोगों की क्रेडिबिलिटी पर ही कीचड़ उछाल रहा है." जगमोहन ने कहा.

"सही बात है. मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ."

दोनों ने हाथ मिलाये.

सभी बड़ी एकाग्रता से करुणाशंकर की बात सुन रहे थे.

"भ्रष्टाचार के लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ. मैं यानी सिर्फ करुणाशंकर मास्टर नहीं, बल्कि वे तमाम लोग जो कीमत जानते हुए भी समझौता कर लेते हैं. हत्या के लिए हम ही जिम्मेदार हैं. हत्या का मतलब यही एक हत्या नहीं है, रोजाना सैकड़ों की संख्या में हो रही हत्याएँ हैं. उन्मादभरे जातिवाद को बढ़ावा देने के लिए भी हमीं जिम्मेदार हैं. चुनाव-प्रचार के समय यह सब मैंने अपनी आँखों से देखा है. गांधी ने जिस अस्पृश्यता को दूर करने के लिए अनशन करके अपनी जिंदगी खतरे में डाल दी थी, उसी छुआछूत की नींव पक्की करके हमने चैन की बंसी बजायी है. न्यायाधीश साहब, अपने कानून के अंतर्गत आप क्या कर सकते हैं यह मुझे नहीं मालूम. लेकिन मैंने रामदास पर हो रहे अत्याचार की बात सुनी-अनसुनी कर दी थी. रामदास ने अपना बदन खोलकर पिटाई के निशान दिखाये थे, जो मैंने अपनी आँखों

से देखे थे और चुप रहा था. दो दिन बाद मैंने रामदास का शव अपने कंपाउंड में लाया जाते देखा और तब भी मैं चुप ही रहा."

"मि. लॉर्ड..."

"मि. लॉर्ड, मुझे और कुछ नहीं कहना. अपने इन दोनों विद्वान् मित्रों की परेशानी मुझसे देखी नहीं जाती. मैं बैठ जाता हूँ."

करुणाशंकर बैठ गये, अधीरता के साथ खड़ा वकील भी बैठ गया. न्यायालय के कक्ष में पलभर के लिए सन्नाटा छा गया. न्यायाधीश ने अपने रूमाल से आँख के कोने पर जमे अश्रुबिंदु को पोंछा.

"मि. लॉर्ड, यह नयी बात है. मैं अन्य अभियुक्तों की तरफ से कुछ अर्ज करना चाहता हूँ."

"इजाजत है."

"मि. लॉर्ड, अब तक मैंने समाज में करुणाशंकर मास्टर की प्रतिष्ठा और पद का लिहाज किया था. वे अब तक चुप रहे थे. इतने दिनों से यह मुकदमा चल रहा था, पर उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा था. इसके पीछे एक कारण था."

करुणाशंकर विस्मय से वकील की ओर देखते रहे.

"मेरे मुवक्किलों में से एक यानी भानुप्रसाद के वे पिता हैं और मेरे मुवक्किलों में भी एक हैं. इसलिए भी मैंने यह बात अदालत में नहीं कही थी. पर अब यह बात प्रकट करने का दुःखद कर्तव्य मुझे निभाना पड़ रहा है. मुझे आशा है कि आपको या दूसरे पक्ष की ओर से दलील कर रहे मेरे विद्वान् मित्र को इसमें आपत्ति नहीं होगी."

"नो ऑब्जेक्शन मि. लॉर्ड !" दूसरे वकील ने कहा.

"इजाजत है."

"मि. लॉर्ड, ये कागजात मैं आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ."

"किसके बारे में हैं ?"

"डॉ. मनोहर टहेलिया के नाम से शायद आप परिचित होंगे."

"नॉट रेलिवैंट, इन कागजात में इनके बारे में क्या बात है ?"

"डॉ. टहेलिया मनोरोग-चिकित्सक हैं."

"ओह." न्यायाधीश के मुँह से निकल पड़ा.

"साहब, चुनाव के परिणामों के बाद करुणाशंकर मास्टर की दिमागी हालत कुछ ठीक नहीं है. मतदान के दिन पहली बार उनका इलाज शुरू किया गया था. ये कागजात तब से लेकर आज तक की चिकित्सा के संदर्भ में हैं, संबंधित डॉक्टर भी यहीं मौजूद हैं."

"आप सिद्ध क्या करना चाहते हैं ?"

"यही कि करुणाशंकर मास्टर का दिमागी संतुलन काफी समय से ठीक नहीं है."

"पर उन्होंने जो कुछ भी कहा, उससे तो ऐसा बिलकुल नहीं लग रहा था."

"यही तो इस पागलपन की विशेषता है साहब. वे पूर्णरूप से पागल हो चुके हैं. एक पल वे बिलकुल सामान्य लगते हैं, परंतु दूसरे ही पल..."

करुणाशंकर वकील की बात बड़े ध्यान से सुन रहे थे. उनके मन में एक तरफ तो विषाद था, पर दूसरी तरफ से कौतुक-सा भी अनुभव हो रहा था. वकील की बात सुनते ही वे कहकहा लगाकर हँसने लगे. शांत अदालत में उनके अट्टहास की प्रतिध्वनि गूँजती रही. इसके पहले किसीने करुणाशंकर को इतना हँसते हुए नहीं देखा था.

•

करुणाशंकर मेंटल वॉर्ड में लेटे थे. एक मरीज 'घर्रर्रर्र' आवाज करता हुआ उनके पास से यों गुजर गया, मानो मोटरसाइकिल चला रहा हो.

एक अन्य मरीज जोर-जोर से रो रहा था.

करुणाशंकर की बगलवाला आदमी तीन-चार रोज पहले ही आया था. वह ऐसी मुद्रा बनाये खड़ा था मानो कंधे पर कुछ भारी बोझ उठा रखा हो. मानो काफी श्रम करना पड़ रहा हो, उसको.

करुणाशंकर से बिना पूछे नहीं रहा गया, "भाई, तुम यह क्या कर रहे हो ?"

उसने श... श... करके मुँह पर उँगली रखकर करुणाशंकर को चुप रहने का संकेत किया. फिर बोझ नीचे रख दिया हो, ऐसा अभिनय किया और पूछा, "क्या पूछा आपने ?"

"आप क्या कर रहे हैं ?"

"आप मुझे पहचानते नहीं ?" उस पागल ने गंभीरता से पूछा.

"नहीं भाई."

"आप हिंदुस्तान के नहीं लगते, परदेसी होंगे."

करुणाशंकर चुप रहे.

"मेरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी है."

करुणाशंकर चौंके.

"देखा, आप चौंक पड़े न ? सब मेरे नाम से चौंक उठते हैं."

"क्यों ?"

"क्या पता ! गोलियाँ दाग दीं, फिर भी मैं मरा नहीं, शायद इसीलिए." फिर अचानक उस पागल की आवाज में रुदन मिल गया, "लेकिन मैं कैसे मरता ? कैसे देह का त्याग करता ? फिर यह कौन उठाता ?"

"क्या उठाता ?"

"देख नहीं रहे ?"

करुणाशंकर ने देखा, वहाँ कुछ भी नहीं था. पर वह पागल कुछ उठाने के लिए नीचे झुका.

"रुकिए." करुणाशंकर ने कहा, "मुझे बताइए तो सही कि आप क्या उठा रहे हैं ?"

"आपको दिखता नहीं ?"

"दिख रहा है. आप उसके बोझ से पसीने से तर हो रहे हैं, यह तो दिखता ही है लेकिन यह क्या है ? और उसमें इतना बोझ क्यों है ?"

वह पागल हँसने लगा, "आपकी आँखों में अवश्य कहीं पर कुछ खराबी है. यहाँ ज्यादातर लोगों की आँखें खराब हैं."

"आपकी यह बात सही है." करुणाशंकर को पागल की उस बात में सत्यता लगी.

"आप अच्छे आदमी हैं. आज के लोग तो मानते ही नहीं कि वे अंधे हैं. यह काँवर है. १६४७ से मैं यह बोझ उठा रहा हूँ. रोज इसका बोझ बढ़ता ही जाता है. और इस काँवर के एक पलड़े में किसीने बड़ी कुर्सी रख दी है. कुछ लोग उस पर से लुढ़क जाते हैं, चौकडी मारकर उस पर बैठ जाते हैं."

"वाह !"

"कई बार तो वे पलड़े पर ही हाथापाई करते हैं. कोई कूद पड़े, कोई छलाँग लगाकर अंदर आये या हाथापाई हो तो मेरा कंधा छिल जाता है. काँवर का दूसरा छोर सँभल नहीं पाता."

"उस पलड़े में क्या है ?"

"आपको दिखाई नहीं पड़ता ?"

"नहीं."

"वहाँ हिंदुस्तान की जनता है. देखिए, इन करोड़ों लोगों के समूह में एक कोने में आप भी हैं."

कहते हुए उसने नीचे से काँवर उठाने के प्रयास शुरू किये. काँवर को कंधे तक लाते-लाते उसके चेहरे पर प्रस्वेद-बिंदु जम गये.

करुणाशंकर की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी. "अच्छा हुआ, मैंने गांधी की काँवर उठाने की हिम्मत नहीं की !" उन्होंने मन-ही-मन कहा.

●

डॉ० हरीन्द्र दवे

डॉ० हरीन्द्र दवे गुजराती साहित्याकाश के एक उज्जवल नक्षत्र हैं। आप सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी हैं। कविता का क्षेत्र हो या उपन्यास का, नाटक हो या निबन्ध सभी क्षेत्रों में आपकी अबाध गति है। हर प्रकार के लेखन में आपकी सधी हुई लेखनी को कमाल हासिल है। अब तक आपकी दर्जनों कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिन्हें गुजरात सरकार ने पुरस्कृत किया है। आपके द्वारा सम्पादित 'हयाति' को सन् 1978 ई० में साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी मिल चुका है। 'कृष्ण अने मानव सम्बन्धों' का हिन्दी रूपान्तरण 'कृष्ण और मानव सम्बन्ध' को हिन्दी पाठकों ने जिस प्रकार आदर और मान दिया है वह सर्वविदित है, पुस्तक के दो संस्करण हो चुके हैं। उनके बहुचर्चित उपन्यास 'गांधी की काँवर' (गांधी की कावड़) को भी पाठक पसन्द करेंगे, विश्वास है।

आप गुजराती के प्रसिद्ध दैनिक 'जन्मभूमि' तथा 'जन्मभूमि प्रवासी' के सम्पादक हैं।

सम्पर्क :

जन्मभूमि भवन, जन्मभूमि मार्ग, फोर्ट, बम्बई - 400001

प्रमुख कथा साहित्य

अन्नपूर्णानन्द रचनावली	अन्नपूर्णानन्द
चौदह फेरे	शिवानी
लाल हवेली	शिवानी
बहुत देर कर दी	अलीम मसरूर
दिल का पौधा	अलीम मसरूर
आखिरी हँसी	निशान्तकेतु
मरने के बाद	परिपूर्णानन्द वर्मा
नसीब अपना अपना	विमल मित्र
मुझे विश्वास है	विमल मित्र
मंगला	अनन्तगोपाल शेवड़े
बनगंगी मुक्त है	विवेकीराय
नया जीवन	अखिलन
ललिता	अखिलन
महाकवि कालिदास की आत्मकथा	जयशंकर द्विवेदी
रिपोर्टर	गिरिराज शाह
प्रतिद्वन्द्वी	गिरिराज शाह

अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी